श्री शारिका लीला-लहरी
(नवन तरंगन हुंद संग्रह)
शेयमि लटि
जयतु शारिकै:
प्रद्युम्न शिखरासीनां मात्र चक्रोपशोभिताम्।
पीठेश्वरी शिला रूपां शारिकां प्रणामाम्यहम्।।

जयतु शारिकै:

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम्।

पीठेश्वरी शिला रूपां शारिकां प्रणामाम्यहम्।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवन तरंगन हुंद संग्रह)

शेयमि लटि

प्रकाशक:

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था

हारीपर्वत देवी आंगन श्रीनगर,

देवी आंगन पलोरा ढोक, जम्मू।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फां आं शां शारिकाय नम
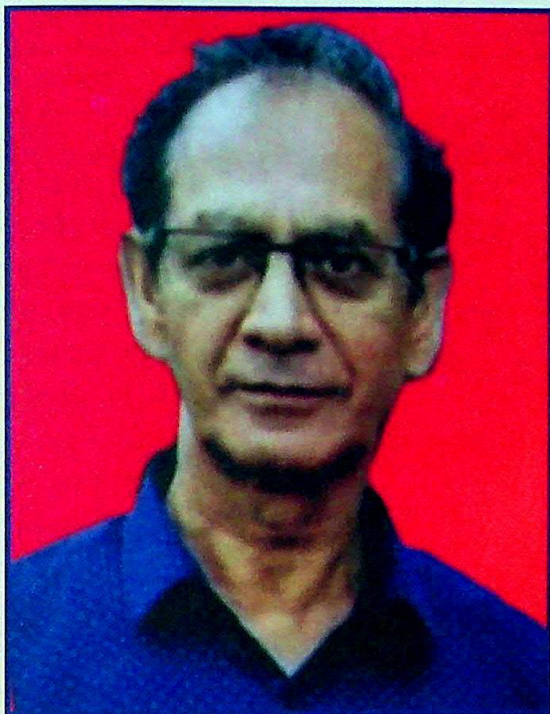
P. N. Koul popularly known as Kaka Je Chatabali though is not physically with us but has left a deep impression in the heart of everyone through his soulful and devotional singing. His composition has always blessed us to have the taste of divine nectar.

From early years of his life till his Moksha would always compose the Bhajans which would connect the Devotees to the eternal world. His indepth study of Bhakti Ras and spelling of every word was like adding Diamond to the Crown. A legend in true sense and a personality of calmness who would always sit at the Sharika Peet and change the atmosphere with his soulful singing. At last he is amongst us like a star in the sky watching and blessing us.

(A Legend Never Dies)

वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

त

द

न

प

र

ल

व

श

स

ह

धार्मिक-संस्कृति और कश्मीर

कश्मीर का प्राग्-ऐतिहासिक युग (Pre-historic-Period) उतना ही पुराना है जितनी स्वंय कश्मीर की धरती और इसका परिवेश। भूगर्भ-वैज्ञानिक खोज के अनुसार सतीसर का पानी आज से तीन-चार लाख वर्ष पहले यहां से निकास के क्रम में चालू हो चुका था। नीलमत पुराण (B.C. 200) की रचना में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।[1] दक्ष प्रजापति के हवन की आग में झुलसी सती को उठाकर भगवान शंकर ने कश्मीर के इस अपार सरोवर में अध-जली सती के पार्थिव शरीर को प्रवाहित किया था अत: इस कारण इसका नाम सतीसर पड़ा।[2] इस सरोवर के पानी को निकास देने का प्रयत्न महर्षि कश्यप की निरंतर तपस्या का फल है। इसके अतिरिक्त कश्मीर देशवाचक नाम भाषात्मक तीन बिन्दुओं पर आधारित हैं।

'क + अश्म + ईर'

'क' का अर्थ है पानी, 'अश्म' का अर्थ है पत्थर या पहाड़ और 'ईर'[3] का अर्थ है बहाना या निकास देना अत: महार्षि कश्यप ने पहाड़ों के बीच रुके हुए पानी को तपस्या के प्रभाव से निकास दिया और उसका नाम कश्मीर (क + अश्म + ईर = कश्मीर) पड़ा। कश्यप आर्यो की एक शाखा थी, जिनका विस्तार रूस के कैसपियन सागर (caspian sea) से लेकर कश्मीर तक था। और इनके प्रमुख

1. नीलमत पुराण:- श्लोक 45-70, 127, 150-240
2. नीलमत पुराण:- श्लोक 127
3. नीलमत पुराण:- श्लोक 226-227

नगर काश्यप स्थान।[4]

सिन्धु-कश्यप[5] (हिन्दू कुश) कश्यप-गृह[6] (काशगर) और कश्नीर आदि। यही कारण है कि कश्मीर की वैदिक तथा शैवी कर्मकाणडीय व्यवस्था के प्रेरक ऋषि लौगाक्ष ने डंके की चोट की तरह इस बात को दोहराया है - 'सरिताम काश्यपीनांसरितो यज्ञकीर्तिम इच्छमानानाम।'[7] (यह सूक्त (वेदिक) उन- काश्यपियों के निमित्त है जो यज्ञ कीर्ति की इच्छा को प्राथमिकता देते है।) कश्मीर की इष्ठ देवी शारदा है और शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी पीठ से उसका स्थान पश्चिम में पड़ता है। वास्तव में दोनो शक्ति पीठों में शिला (चट्टान) का ही भाव्य स्वरूप है। अन्तर मात्र इतना ही कि शारिका-पर्वत पर चक्रेश्वरी स्वयं मौन यन्त्र स्वरूप में विराजमान है और शारदा शक्ति पीठ में मुखर वाणी स्वरूप सरस्वती है। भक्तजन शारिका के चक्रेश्वर शक्ति पीठ में श्री यन्त्र की तपस्या किया करते थे और तपस्या का वरदान शारदा के शक्ति पीठ के पास मिलता था।[8] शारिका पर्वत के नीचे वितस्ता का प्रवाह है और शारदा भगवती के नीचे मधुमती नदी का प्रवाह है। नीलमत पुराण के आदार पर कश्यप ऋषि ने सारे देवी देवताओं को कश्मीर बुलाया और सबों ने अपना अपना स्थान यहाँ अपनाया। यही कारण है कि कल्हण राजतरंगिणी में लिखते है 'तिलांशोपि

---

4. थामस वाट्टरस:- ऑन युवान च्वांगस ट्रेवल इन इण्डिया- 122
5. गिलगित मैनस्क्रप्ट- 212
6. गिलगित मैनस्क्रप्ट - 107
7. लौगाक्षि पद्धति (लौगाक्षिकषिका समय 400 B.C.है)
8. शारदा महात्म्य पटल 3

न यत्रास्ति पथ्व्याम्ती थैंबहिष्कृत'[9]। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नही है जहाँ पर तीर्थ नही है)

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वंय भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी 'कश्मीरः पार्वती तंत्र'[10] (कश्मीर की धरती स्वयं पार्वती का स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि से कश्मीर शक्ति धर्म का अनुयायी हराप्पा की संस्कृति के साथ-साथ ही रहा है। शक्ति संप्रदाय की मान्यता है कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय-चेतना का प्रवाह है[11] (The entire Cosmic-universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त[12] ने अपने तंत्रालाक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन 360 अंशो या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे : द्वादशकाली का स्वरुप 12 की गिनती है। प्रतिपद्य (एक) से अमावस्या तक 15 की गिनती बनती है और फिर प्रतिपद्य से पूर्णिमा तक 15 की गिनती बनती है इस प्रकार से 15+15=30*12=3600 अंश इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश-रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमतः सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Distruction) करती रहती है, (क)। सृष्टि + सृष्टि, ॥ सृष्टि +

---

9. कल्हण : राजतरंगिणी 138
10. कल्हण: राजतरंगिणी 1.72
11. शिवदृष्टि-17
12. अभिनवगुप्तपाद : तंत्रलोक, चोथा अह्निक

स्थिति, ॥। सृष्टि + संहार (ख)। स्थिति + सृष्टि, ॥ स्थिति + स्थिति, ॥। स्थिति + संहार।

ग)। संहार + संहार,। संहार + सृष्टि, ॥। संहार + स्थिति।

इस प्रकार से काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कालान्तर में वैदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रेश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड-व्यापी शक्ति (Cosmic-universal energy) का एक स्वयंभूः (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अर्थ है :- 'भ' भरण (सृष्टि या creation) 'र' रमण (स्थिति या Preservation) और 'व' वमन (संहार या Destruction)। भैरवों की संख्या आठ हैं, इस का तार्त्पय है: पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जैसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भैरव सदा चक्रेश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित-जल से अभिषेक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायंत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकाली का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दाये तरफ शारिका अर्थात विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आस पास रहती है।[13] चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक गणपति का वास

13. यामिनी तंत्र

होता है और उत्तर के आस-पास वामदेव या वामकेश्वर का स्थान होता है। चक्रेश्वर सिद्ध पीठ का मुख पश्चिम की तरह बना रहता है क्योंकि हमारी पृथ्वी माता भी अपने दैनिक शक्ति प्रवाह को अपने अक्ष (Axis) पर पश्चिम से पूर्व की और परिक्रमा (Rotation) करती है। इसी परिक्रमा को कश्मीर के तांत्रिक क्रम-स्तोत्र में अस्तोदित (Rotation) का नामकरण दिया गया है। शाता-तंत्र शास्त्र के आधार पर जहाँ भी इस इस प्रकार का चक्रेश्वरी महायंत्र होता है उस प्रदेश में आंशिक शक्तियों या भगवतियों का स्थायी आवास आवश्यक होता है। जेसे चण्डी, दुर्गा, उमा, राज्ञा बाला, त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, सरस्वती, भद्रकाली, ज्वाला, भर्ग शिखा तथा त्रिसन्या भगवती आदि। यामिनी तंत्र के आधार पर कश्मीर में इन समूचे भारत में 'चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र' मात्र कश्मीर में ही है। महाकवि बिल्हण ने 'विक्रमाङ्कदेव चरित' में कश्मीर के प्रधुम्न पीठ के चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र को इन शब्दों में अपनी भावना प्रकट की है 'यत प्रधुम्नक्षितिधरनिभादुत्तमाङ्ग विभत्ति'[14] (शारिका पर्वत का प्रधुम्नपीठ महायंत्र गर्व से सिर उठाये हुए है।)

यामिनी तंत्र के आधार पर चक्रेश्वरी महायंत्र के पाद तल (bottom) में पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में निरन्तर जल कुण्ड का प्रवाह होना आवश्यक है।

शारिकापर्वत के पश्चिम में पूर्णराज भैरव का जल-कुण्ड है और पूर्व में पुष्कर बल (पोखरी बल) का जल कुण्ड है (कश्मीरी भाषा में जहां भी पानी या पानी का प्रवाह होता है, वहां बल साथ जुडा रहता है जेसे देवीबल, यारबल, त्रागबल, हजरत बल आदि)

14. बिल्हण: विक्रमाङ्कदेव चरित, सर्ग 18, 15, (10th century A.D.)

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हॉर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बडे खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के उपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वही नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्मय और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाए मिलती है। नीलमत पुराण (200 B.C.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्ष्य इस प्रकार से मिलता है:-

आषाढ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि।
पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी।।[17]

(यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ शुक्लपक्ष नवमी (9th day of Bright fort naght of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए।

नौलमत पुराण से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत और चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते है:-

'श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम'[18]। (उसी समय श्री पर्वत अर्थात शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा)

---

15. शारिका महात्मय
16. सोमदेव: कथासरिस सागर 73, 109
17. नीलमत पुराण
18. कल्हण: राजतरंगिणी 3267

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्द महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक बनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा बनवाई गई बड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आंगन का इलाका 'सिद्धगिरि पाद'[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान त्राचक नाम भाषा के अपभ्रश के कारण आज 'सज़गँरी' मोहल्ला है। जहां पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृत कुणड (चशमा) है। देवी आंगन और सज़गरी मोहल्ले के बीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्तितंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम 'शवर'[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शब्द का संबन्ध पाशुपत से है। अत: हवल का इलाका पाशुपत संग्रदय का एक पावन तीर्थ संगम रहा है। पंचस्तवी में इसका सक्षिय इस प्रकार से – मिलता है:- 'शिवामन्वग्यान्तीम शवरमहमन्वेमि शवरीम्'[22] (शिकारी रूप शिव के पीछे-पीछे चलती हुई–शिकारिनी का रूप धारण किए हुए शिव शक्ति स्वरूप माँ भगवती को बार बार प्रणाम करता हूं) कश्मीर के महाराजा रणादित्य के राजकाल का वर्णन करते हुए कल्हण कहते है:-

रणारम्भास्वामि देवौ दम्पतिभ्यां व्यधीयत।
मठ: पाशुपताभ्यां च तभ्यां प्रधुम्नमूर्धनि।।[23]

---

19. अबुल फज़ल:- अकबर नाम 1084-85
20. कल्हण: राजतरंगिणी 3378 (कश्मीरी भाषा में 'द' का परिवर्तन 'ज' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धलकथा (सीधी बात) किन्तु कश्मीरी 'स्येजकथ' (सीधी बात))
21. संस्कृत में 'शवर' का अर्थ शिकारी। कश्मीरी अपभ्रंश में संस्कृत भाषा की 'श' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' ध्वनि 'ल' में बदलती है। इस प्रकार संस्कृत 'शवर' 'हवल' में उभर आया है।
22. पंचस्तवी : सकलजननीस्तव:, स्तव 55
23. कल्हण : राजतरंगिणी 3.460

(इस प्रकार रणादित्य और उसकी महारानी ने रणारम्भा स्वामी तथा रणारम्भा देव नाम के दो मन्दिर बनवाये और पाशुपत संप्रदाय के साधकों के लिए प्रधुम्न शिखर पर एक मठ का निर्माण किया)

चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ प्राचीनतम नाम 'प्रधुम्न-पीठ' रहा है। जैसे 'प्रधुम्नपीठे स्थिता'[24] (प्राधुम्नपीठ पर ठहरी हुई)। पंचस्तवी में भी चक्रेश्वरी शक्तिपीठ का नाम 'प्रधुम्नसीम्नि' ही मिलता है।[25] कई टीकाकार भ्रम के कारण 'प्रधुम्न' का अर्थ कामदेव या भगवान श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध से जोड़ते है जो सरासर गलत हैं क्योंकि शाक्तमत श्री कृष्ण से भी प्राचीन रहा है। इस तथ्य को गीता जी में भगवान श्री कृष्ण स्वयं 'मम योनि महत्ब्रह्म' (मेरी शाक्त योनि ही विशाल ब्रह्म है) कहकर स्वीकारते है। वास्तव में संस्कृत भाषा में 'धुम्नम' का अर्थ है– शक्ति, चेतना, सत्ता या बहूमूल्य संपति (Energy, Strength, power valuable Property) 'धुम्न' के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exalation) के लिए होता है जैसे:- ताप (आंच) प्र + ताप = प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रधुम्न' का अर्थ है 'ब्रह्मण्ड व्यापी अपार चेतना' (Infinite casmic concious energy)। यह एक अदभुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम 'प्रधुम्न' ही प्रस्तुत किया है। कल्हण[26] ने प्रधुम्न मूर्धनि तथा प्रधुम्नपीठ,

---

24. शक्तितंत्र
25. पंचस्तवी : चर्चस्तत्र 2.14
26. कल्हण: राजतरंगिणी 3.460, 7.1616
27. जोनराज: राजतरंगिणी 589

जोनराज[27] ने प्रधुम्नाद्रि तथा प्रधुम्नगिरि, श्रीवर ने प्रधुम्नशिखर[28]। सोमदेव ने भी अपने कथासरित[29] सागर में शारिका पर्वत के लिए प्रधुम्न पीठ का ही नाम दिया है। जोनराज सुलतान बडशाह के दरबारी इतिहासकार रहे है (1420 59 A.D.) उनका कहन है कि सुलतान बडशाह ने प्रधुम्न करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुल्तान बडशाह ने शारिका पर्वत का निर्माण करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुलतान बडशाह ने शारिका पर्वत के प्रधुम्नपीठ की छत्र छाया में अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा।[30]

कश्मीर के शाक्त सम्प्रदाय (cult) का सीधा संबन्ध विनष्ट हराप्पा की संस्कृति से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हेरथ (शिवरात्री) के पर्व पर पूजा जाने वाला सन्यपॊतुल (स्थाणु-पुत्तल) है क्योंकि हराप्पा की खुदाई में भी पक्की मिट्टी के 'सन्यपॊतुल' पर्व 'सन्यवारी' आदि बडी तेदाद में मिले हु यह एक स्वीकृत तथ्य है कि मोहन-जो-दारो ओर हराप्पा के लोग शिव और देवी पूजा के उपासक कश्मीरियों की तरह ही रहे है। इस कारण हेरथ, हार मण्डल, हार-गिन्दुन और हॉर (मैना) आदि उनके ही धार्मिक उत्सव संस्कृति के लोग आज से 5000 वर्ष पहले रहा करते थे।

अन्त में चक्रेश्वरी के महाश्रीयंत्र के बारे में कुछ कहना आवश्यक बनता है। चक्रेश्वरी महापीठ शिला के रूप में विधमान है और शिला पर विभिन्न प्रकार के त्रिकोण, पञ्चकोण षटकोण, अष्टकोण, दशकोण,

---

28. श्रीवर: जैनराजतरंगिणी –1.7.104; 2.88
29. सोमदेव: कथासरित सागर 73,109.
30. जोनराज: राजतरंबिणी – 589

द्वादशकोण, तथा षोडशकोण गोलाकार वलयों की तीन जोड़ियां इसके अतिरिक्त दक्षिण में गणेश जी का सिर, तथा स्थानों पै मैना (हॉर) की आकृतियां है। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मोहन-जी-दारो के आकार के अक्षर और ब्राह्मो लिपि के अक्षर और सरग उकेरे या खदे (Carved) हुए मिलते है। आश्चर्य तो इस बात का है कि प्रत्येक खींची हुई रेखा एक तो स्पष्ट और सीधी खींची हुई है और प्रत्येक बिन्दु पर कोण का निर्माण करती है। एक व्यवस्थित श्रीयंत्र, जैसा कि बंगाल आसाम, केरल, कर्नाटक और मध्य भारत के शाक्त पीठों में मिलता है, कश्मीर के प्रधुम्नपीठ का चक्रेश्वरी यंत्र उनसे यथार्थ में भिन्न है। हमे स्ंयम से इस बात को नये सिरे से समझना है कि कहीं किसी अन्धकार के युग में हमारी अतीत की परंपरा लुप्त हुई है। वर्तमान प्रधुम्नपीठ के चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ को हम शारिका भगवती का स्थान समझ बैठे है किन्तु सबसे उलझा हुआ प्रश्न यह उभर आता है कि एक ही पीठ पर दो शारिकाओं का अस्तित्व सम्भव नही है। सही बात तो यह है कि प्रधुम्नसिद्ध पीठ से उत्तर कर जब हम उत्तर दिशा की ओर परिक्रमा के लिए आगे की ओर बढते है तो सामने दायें तरफ पहाड़ की तलहटी के ऊपर 'हांरी' भगवती का पावन स्थान मिलता है। कश्मीरी भाषा में 'श' ध्वनि में प्राय: बदलती है इस भाषावैज्ञानिक (Linguistics) नियम के आधार पर संस्कृत 'शारी' या 'शारिका' का स्वरूप हारी या हॉरी या हारिका हुआ है। अत: प्रथमत: हमे यह समझना है कि प्रधुम्नपीठ का स्थान चक्रेश्वरी यंत्र का स्थान है और शारिका का स्थान 'हॉरी' का स्थान है। वास्तव में अगर हम फिर से इस बात को समझे कि पर्वत का नाम शारिका पर्वत है और वह इतिहास से स्वीकृत भी है। रहा प्रशन

शाक्तपीठ चक्रेश्वर यंत्र का, वह स्थान किसी भी देवी से संबन्धित न होकर केवल प्रधुम्नपीठ है और प्रधुम्न का अर्थ है ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय-चेतना शक्ति और चक्रश्वरी पीठ इसी का शक्ति स्रोत है।

सन्तों की चरण धूलि

होराषटमी संप्तषिशुभ संवत 5059 **डॉ. त्रिलोकि नाथ गंजू**

श्रीनगर-कश्मीर (भारत) 82 सत्थू श्रीनगर।

* * *

(क)

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ति हुंदिस टॉठिस संतानसुय।
महा गणपतसुय जय जयकार।।
त्रि नेथुर दॉरी छुख च़ु एक दन्तो, ड्यकि छिय शूबान च़ॅन्द्रम तारु।
गज़म्वख बालु च़ॅन्द्र लम्भूदरसुय, महा गणपतसुय जय जयकार।।
सेद्धी हुंदि दातु छुख च़ु विनायको, वल्लभा सुत्य ह्यथ गगुर वाहन।
दीवन हुंदिसुय च़ेय सेदि दातसुय, महा गणपतसुय जय जयकार।।

✷

नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम बवुसरु।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।

१ यावुन ह्यथ गोम यिथु प्योम बुजर,
सोपुन ज़न ओस ल्वकुचार म्योनुय।
न्यथु हाव शिव रूप मंज़ च्यथ मन्दर।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२ माया ज़ाल रज़ु रठ च़ठ अकि दरु,
लबि कनि थव परिवार म्योनुय।
अन्तर म्वख रोज़ सुख बर द्वख हरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

३ वॉराग मछ़ ज़ोरु सुत्य त्याग खंजर,
देह अभिमान मद मार म्योनुय।
ज़िन्दु थव वाँसि सुत्य स्यज़र तु पज़र।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

४ वासनायि म्यानि मंज़ बस प्रकृति पर,
पछ़ि सौस थव आच़ार म्योनुय।
लछ़ि प्यठ प्योमुत छुस करतम खरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

५ क्या करु सारि वाँसि कौर मे गरु गरु,
कस ॲकिस वोत उपकार म्योनुय।
नशनुकि वेलु पशनुय बॆयि अरसरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

६ वासनायि अरुखुरिस करुनाव अरु,
च़न्दुन कर दिवदार म्योनुय।
यारि ह्यु सब्ज़ कर अदु वन्दस दरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

७ अन्नु दातु ज़ॉन्य मंज़ ख्यनु च्यनु व्वदरु,
सु आहार पूर्ण व्यच़ार म्योनुय।
असत्वथ च़ॆय कुन करु शांती श्रुक्य परु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

८ सासु बज़ु उलटु रायि कोह ज़न गॅयि खरु,
गासु कचि ह्यु व्वस्तार म्योनुय।
दय छुख तु लय कर निर्णय नयि स्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

९ प्राख ज़न्मचि खँडिथुय आदि गॅयि खरु,
अति क्या पकि गाटुजार म्योनुय।
थोद तुल तु पथुर प्योमुत प्यठु दरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१० प्रारब्ध फल बूगनुय छुम तु क्या करु,
पोत फेरनस छुनु वार म्योनुय।
प्रानि वैर मंज़ कड नवि धैर्य सुत्य दरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

११ दोह आयि छोय दितु अन्दर तु न्यबर,
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय।
परदु थव क्वंगु पोश हरदु क्यथ गछ़ बरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१२ छ्योट तु श्रूच़ मतु वुछतु अछ़ तु म्योनुय गरु,
शिव लूक ह्यु बनि द्वार म्योनुय।
यमदूत खोच़न सुत्य अभय वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१३ छ्येयट वासना म्यॉन्य छल निर्मल सरु,
काम क्रूद चमार मार म्योनुय।
ब्यल पॅतर सुत्य वातुज ज़न वर हरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१४ विचित्र पूज़ च्यत नेत्र कमल करु,
यन्द्रेय शुत्रू रूग हार म्योनुय।
ब्यल पॅतरु सुत्य प्रदान करनेश्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१ ५ पाद थॅक्य पॅक्य पॅक्य नाद करतु अन्दर,
खलवत बनि दरबार म्योनुय।
ज़गतुचि रक्षायि हुंज़ व्यनथा करु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१ ६ व्वपकारु सुत्य पनुनुय छुख चु व्वपर,
रुचि़ वति लगि रोज़गार म्योनुय।
दातु नाव कड़नावतम ज़गत ईश्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१ ७ कॉम कार करनि आस गम कास दम बरु,
यार छा यि ब्रम संसार म्योनुय।
हे अगम अपार हे दिग्मबर हरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१ ८ लूकु हुंज़ि ज़ॆवि परनाव परात परात,
परुनय महिम्ना-पार म्योनुय।
पुष्प दन्त आचा़रि बनु नन्दुकीश्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

१ ९ सत् संग रंग दिम राय म्वख बंग परु,
द्यानु सुत्य प्रान सन्दार म्योनुय।
येति तति शूब अन युथ नु वति प्यठ मरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२ ० अज्ञान काठ ज़ॉलिथ भस्माधरु,
तीज़ु रूप थव आकार म्योनुय।
दॆह कतुरिस, दॆह कास बास भास्करु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२१ च़्यतु पीडा कास नतु यैति क्या करु,
मृत विज़ि छ़ांड हितकार म्योनुय।
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव मु ज़रु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२२ पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सुत्य जटादरु,
चुय छुख व्यग्नु हर्तार म्योनुय।
न्यवरथ दिम अँछ क्याज़ि लगनम दरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२३ शुर्‍य तु बॉच़ बुछ्य बुछ्य ओश त्रावान जरु,
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुय।
यिनु त्युथ मरु ध्यानु निश गछ़ु व्यसमरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२४ वाँसि हुंद्य करतूत ब्रोंठकनि गॅयि खरु,
मृत विज़ि ती निवार म्योनुय।
मनि यिम परम स्वख दिम परमेश्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२५ हे महेश ज़गत ईश हे विशेष ईश्वरु,
छेति कीश बोज़ ज़ारु पार म्योनुय।
दीशु दीशु फिर मु, वातनाव पननुय गरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

२६ मोह मस च़्यथ छुस दूशि लद फिर मु थर,
आशतोश केंछ़ा यार म्योनुय।
'कृष्णस' मोक्ष प्रावुनाव अमरीश्वरु।।
शंकरु यियनय आर म्योनुय।।०।।

लालो अज़वलो माल्युन म्योन

फ्वलुवनि सोंतु छुय म्योन सालो।
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन।।

आरवलि आरुकॅच़ गॅयि कमि हालो, च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छस।
यॅच़काल गव व्वन्य प्रारु कूत कालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
यॅम्बुरज़ल लॅजिमुच़ बॉबरुनि ज़ालो, प्यालु ह्यथ मसवल प्रारान छय।
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुय गुलालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
मायि चानि सुलि मुलि फ्वजि हीमालो, लयि सोस यियि कर दियि दर्शुन।
द्रुय चॉन्य छम व्वन्य यूत नो बु च़ालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
रोशु रोशु करुहय पोशन मालो, रोशि मति गोय ना गोशन म्योन।
रोशि मा पोशि नूल दोह गछ़ि व्वबालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
आदुनुक याद पाव वादु मो डालो, नाद लोय कुकिलव गोविंदु गू।
आदन बाजि म्यानि त्राव शुर्‌य ख्यालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
बॉल्य वनतु यियिना नॉल्य छस मालो, वॉल्य छिस कनुनय ग्रायि मारान।
कॉल्य मा रावव कस क्या मलालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
साक़ुया प्यालु चाव माला मालो, युथ नसॉ बाकी रोज़ी ग्राव।
मस च्यथ रसु रसु बनु मतवालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।
सासु मंज़ु खास सुय रटुहोन नालो, सास मलि सन्यास मेलि गूपालो।
'भास्कर सास' छुय नॉली नालो, लालो अज़वलो माल्युन म्योन।।

शारिका दीवी

१ मे सोंगो पानु दर्शुन चोन बन्यम ना शारिका दीवी।
मनस मंज़ राग चोनुय वुनि सन्यम ना शारिका दीवी।।

२ मे पेयि ना मॉज्य पायस मन, बु करुहय चॉन्य आरादन।
मे ॲन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यम ना शारिका दीवी।।

३ यि दिल म्योन ज़न छु क्रेन्खा अख, लॅगिथ क्रेहन्यर छु अथ प्यठ सख।
अक्षर अथ पनुनि भख्ती हुंद खनख ना शारिका दीवी।।

४ बु छुस ना क्रूर अज्ञॉनी, स्यठा मुरखा तु अबिमॉनी।
मे माता गाश ज्ञानुक सुय अन्यम ना शारिका दीवी।।

५ लगान कोताह मोदुर दुनिया, यि खॉली आसवुन स्वप्ना।
मे सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक नन्यम ना शारिका दीवी।।

६ दिवान भ्रम आयि मोह माया, द्या करिना महा माया।
मे संसारुच यि मोह माया छ़ेन्यम ना शारिका दीवी।।

७ बु 'प्रेमी' छुस तसुन्द अबिलाश, करेम ना मॉज्य पूर्न आश।
व्वपाया भवुसरस तरुनुक करेम ना शारिका दीवी।।

✹

वॉनी वनहारि लोलो

होशि पोशि नूलु थव कन।
वॉणी वन हारि लोलो।।
राधा कृष्ण कृष्ण वन, लोलुनि अशि दारि लोलो।
रंगु किन्य तस ह्युव बन, वॉनी वन हारि लोलो।।
ग्वडु कर मन बिंदराबन अदु नेर बॅर्‌य दारि लोलो।
श्यामु रूप वुछ हन हन, वॉनी वन हारि लोलो।।
चाव वीद कामदीनन थनु भख्ती हुंज़ि च़डवारि लोलो।
च़्यथ बनि आनन्द गण, वॉनी वन हारि लोलो।।
तती व्रच़ गूपियन कोरमुत छु मन तारि लोलो।
व्यापक वासुदीवन, वॉनी वन हारि लोलो ।।
प्रेयमु सुत्य कर मन बिन्द्राबन, नाद लायस प्यारि लोलो।
भख्ती भाव अख बनि द्वन, वॉनी वन हारि लोलो ।।
ख्वनि जसुदा छस ललुवन, मूह पूतनायि मारि लोलो।
येछ़ि बबि द्वद चेन सतज़न, वॉनी वन हारि लोलो ।।
भख्ती मंज़ बन अर्ज़न रथबान सुय लारि लोलो।
किसि प्यठ छुस गोवर्धन, वॉनी वन हारि लोलो ।।
मनु वाजे कृष्णु नाव खन, धीर अल्मास तारि लोलो।
गलि पानय क्रूद दर्योधन, वॉनी वन हारि लोलो ।।
हमसाये कंसस मारन सूक्ष्म दारि तलवारि लोलो।
माजि यियम राज़ु तस ह्यु ज़न, वॉनी वन हारि लोलो।।

खॅट्य खॅट्य छु नोन बासन अॅन्दरिमि छ़ेपि छ़ारि लोलो।
च्यथ़ु वुज़ुमल गटु कासन, वॉनी वन हारि लोलो ।।
वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो।
सब्ज़ार ज़न लगि च़रनन, वॉनी वन हारि लोलो।।
दास येति रास खेलन, व्यास नारुद ति लारि लोलो।।
बोलुनावुन शुकदीव ज़न, वॉनी वन हारि लोलो ।।
यूगियव बूगिथ बूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो।
निर्मल निष्कल निरगुन, वॉनी वनहारि लोलो।।
'कृष्णस' टोठ विशनारपन नतु येति क्या लारि लोलो।
ज़ॉन्य मंज़ तस ति सूहम अन, वॉनी वन हारि लोलो।।

✻

ॐ महा रॉज्ञनाय नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योती, सुज्ञान आश्राण च़े प्रज्ञावान।
सत् चित् आनन्द गण उदैती, कोटी सूर्यन हुंद च़े प्रकाश।।

सुराट बावु किन्य फॅलेमुचुय, विराट रूपस बाह्य अंतर।
सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति, तत् त्वमसि पद चोन विकास।।

पूर्ण पूर्णातीत सम्वित ज्योति, भेदा भेद पर शिवाक्षर।
खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश।।

✻

टोठ्योम दय मनस

अन अपीक्षत प्रावनावतम पूर्णानन्द मे मनस।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन, गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।।

१ पॉन्य पानय ज़ान ज़ानिहे मानि बूज़ बुज़मानि हे,
क्युथ तु क्या, कति तति व्यपान कवु नवि हे तु प्रानि हे।
बोज़िनय बूज़िथ तु रोज़िनय कॅच़ वाय वॅन्य नय मनस।।
टोठ तस विन कॆंह नु ज़ानुन, गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

२ बोग मुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शख्तु यिय वॊनुय,
शम तु दम तय भाव भावना भख्तु मुख्ती यिय वॊनुय।
चक्रवरतस तु कंगालस वयिवुन यिय वयि मनस।।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

३ ब्रह्म निर्वान शब्द प्रकाश अन्दरु न्यबर अछरी,
हॊल तु स्यॊद शॊज़रिथ श्रोच़व सुत्य वारु पॉठ्यन वाशि रॊस।
दगि लोलुच लगि हे क्या रगि रगि यियि पय मनस।।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

४ जग छु संग्रामा तु मन छुय राज़ु अमिकुय ज़ेन व्वन्य,
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन।
छुनु पॊत फेरुवुन वनु हा कॊताह ज़ि लय मनस।।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

५ आईनस मंज़ वुछत केंह मा वुछत ऑनय रोस्तुय,
ऑनु मंज़ु मा म्वख छु खटान, कांह ति ॲनिसुय रोस्तुय।
आस मो ओन कॉसिथ, गव खास कॉसिन खय मनस।।
टोठ तस विन केंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

६ मन व्यछ़ारव तय मदारव सुत्य अनुन होशुसुय,
मोत लोत लोत होश अनुन पज़ि तिय मनोशसुय।
नतु क्या सुय पलज़ु वुनुय, आसि ख्यनु ख्यनु प्रिय मनस।।
टोठि तस विन केंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

७ शल्प शल्पत सोर कलपित कल्पु कल्पांतन लगुन,
पज़ि दुय त्रावुन्य छु प्रावुन युस यि रावन अथि युन।
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुशार्थ पोश हा बुय मनस।।
टोठि तस विन केंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

८ ब्रांत तय ब्रम ज़ोनमुत संसार प्रॉन्यव यिय वोनुख,
सोंथ हरुद पनुन तु परुद दफतु तिम यिम मा चु छुख।
वोन्तु छा यथ भवुसरस रंगु रंग थर च़ायि मनस।।
टोठि तस विन केंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

९ साद सन्त छिनु अंत ज़ानान आदि यस छुन आसुवुन,
श्रूच़ हुंदे ऑगन्यायि सुत्यन एक छु अनेक बासुवुन।
सारिनुय सुय ज़ाननुय छुय करतु यिय न्यरनय मनस।।
टोठि तस विन केंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

१० पानु छुनु करता अकरता बाव अबावय बॊरमुतुय,
रावुरॉविथ पान पनुनुय हॊश बॊरमुतुय पॊरमुतुय।
तॊलि पॆयस करमुच यि क्रय ख्यति यॆलि चलॆस रॆय मनस।।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

११ आस 'परमानन्द' प्रॉविथ, परमानन्द ब्यॊन मु रोज़,
सॉरिसुय मंज़ सॉरिसुय ह्यु पार सुय वाति नॊन मु रोज़।
यियि चीतन रूफ प्रॉविथ कति विखेफ ओर लय मनस।।
टोठि तस विन कॆंह नु ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।०।

*

सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप

१ भूल बालु बालकन सुत्य खेलुनावतम,
बालक अवस्था प्रावनावतम।
ज़ान करुनावतम पानु परज़ुनावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

२ कठिने भवुसरु छांठ वायिनावतम,
मुंह पोन्य वोतुम हॅटिसुय तान्य।
लटिसुय बृषभस थफ करुनावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

३ थज़रय प्यठ अख नज़रा त्रावतम,
शेशरम नाग मे थावतम नेब।
वनि ग्वितु अनिरुकि सनिरय मु रावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

४ ब्रह्मण ज़न्म दिथ मतु मन्दछावतम,
नबु प्यठु ब्वन मतु द्यावतम दब।
अमरनाथ अमर बनावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

५ दासन हुंद दासा गँज़ुरावतम,
मतु मॅशिरावतम पनुनी ज़ान।
येति छुख पानय तोत वातुनावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

६ अज़पा ज़प यज्ञि ज्यूत्य प्रज़ुलावतम,
होदु शीश ज़न मोच़रावतम मे।
ही महेश छेति केशि मतु दिशरावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम,
नित्य बासुनावतम सू हम सू।
ॐ शेव शम्भू शब्दु शूबुरावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

८ मुंह मायायि सुत्य मतु तंबुलावतम,
सतुची कथ पावुनावतम याद।
च़्यतु कुय चेनुन न्यथ चेनुनावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

९ सतु के न्यरनय पयि पकुनावतम,
दयि पनुने नयि हावतम वथ।
नाव छुम 'कृष्ण' शिव भाव बॅडरावतम।।
सोद्य वॉनिन्य पॉठ्य हावतम रूप।।०।।

दास कवु छुस उदास अनाथ

आशि चानि बरुतल आस अनाथ।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।

१ त्रेयि तापु हॊखमुत प्रेमुक स्नेह,
तॊह छम नु चेय व्वन्य ख्यमु ना वॆह।
त्रेशि त्रेशि ज़न्मु ज़न्मु पॆपास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

२ यन्द्रेय हंदुरॉविथ छुम मन,
सॅन्दुरिथ लोलु रॆह छुम नु ह्यवान।
दॊदुमुत ख्यमु कहि कास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

३ होन्यन अथि प्योमुत शाल ज़न,
हाचि़ सुत्य रूदुम नु नम न्याल नॊन।
कालु ग्वफि सुह सुंदि आस अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

४ सासु क्रूह छ़ॅंडिथ आशावान,
अथ छुन फीर्‌य फीर्‌य यूर्‌य यिवान।
लबु तवु दॆवु बरु न्यास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

५ होशव बो वोंच़मुत रोशन छुय,
वनु क्या हाल म्योन रोशन छुय।
प्योमुत चानि आम खास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

६ पज़ि यी तिय करुनावतु मे,
ज़्यथ ज़्यथ मतु मरुनावतु मे।
'परमानन्द' यूग अब्यास अनाथ।।
दास कवु छुस उदास अनाथ।।०।।

✷

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो

परमु दामुक मे चावतम दामो।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।

१ त्रेयि ताप कामनायि आमतावय,
व्यसुरावान छुम बख्ती बावय।
फिरुवान त्रेशना गामु गामो।।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

२ गॉलिथ काम क्रूद ज़ॉलिथ तम,
सार द्राव पथकुन कुनुय सू हम।
अनुग्रेह चानि सुत्य गाश आमो।।
सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

३ ज़िंदु युस मरि तस क्याह करि काल,

रोज़्यस नु गरि गरि मरुनुच ज़ाल।

प्रेयम अमृत चावतम दामो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

४ मन तय प्रान युस करि अर्पन,

सनम्वख सुय वुछि नारायण।

यिथु पॉठ्य लक्ष्मणन वुछ रामो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

५ तारि बवुसागरस चोनुय नाव,

नाव तरि तॅलि यॅलि गलि वरज़ु वाव।

फटि नु ज़ि रोज़्यस नु पतु पामो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

६ सोरुम श्रम च़े पुशरोवुम पान,

न्यरवानकुय दिम ज्ञान वेज्ञान।

निर्मल न्यशकल न्यशकामो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

७ मूंह तुरि सुत्य छुस बरु गोमुत,

संताप ताप ज़रु ज़रु प्योमुत।

होल च़लि चानि यिनु लोल आमो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

८ राम लक्ष्मण च़े वन्दहय पान,

'परमानन्द' आनन्द प्रावान।

दामु चावतम यूगु बलु रामो।।

सत् ग्वरु मोक्षदायक रामो।।०।।

हच़र बाव कास्तम हरि शम्भू

च़्यथ आकाशस भास्कर मे बासतम।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।

१ लम्बोदर स्वर ग्वर हर शंकर गंगाधर सू हम सू।
ज़ॉन्य गाश स्व-प्रकाश आस्तम तु कास्तम।।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।०।।

२ तनु मनु सोन व्वोगुन हनि हनि ननि,
फना फिला ब्वज़वान शिव शम्भू।
सनिदान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम।।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।०।।

३ राम श्याम कृष्ण विष्ण शेव भवु भय हर,
सर कॅरज़ि वुज़ि ओम हम सू।
न्यशक्रयमय न्यरनय पॆयि बास्तम।।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।०।।

४ ज़ल थल निर्मल न्यशकल ओजल,
सम बल स्मरनायि दिम शम्भू।
कलु माल दारवुनि हनि हनि बास्तम।।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।०।।

५ स्व वॊन्दु 'परमानन्द' आनन्द कन्द,
नादु ब्यन्दु कृष्ण चन्द शेव शम्भू।
ध्यान धारनायि ज्ञानु म्वखु स्वख आस्तम।।
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भू।।०।।

संतोष्ट रोज़तम गरि गरे

कष्ट कास्तम भगवान हरे।
संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

भ्रमचे वुनरे वुनरोवुस, मुंह छ़टि अनिगटि वति रोवुस।
च़ेय रोस कुस मे अथरोट करे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

भवसरु क्रमुनुय रटिनम खोर, यिम ज़ोर लॉगिथ गोस कमज़ोर।
छांबरि लोगमुत छुस बांबरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

वेरि बु लागय शेरि पम्पोश, गद गद वॉनियन थावतम गोश।
वॅद्य वॅद्य यॅच़ छम म्यच़ मा हरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

व्यकोन्ठ प्यठु यितु ननुवोरुय, गरुडस खॅसिथ त्रॉवुथ च़े दोरुय।
म्वकुलावतम संकटुचे थरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

संकट मंज़ तस प्रह्लादस, कन थोवथस, आरच़र नादस।
हरनाकश्यप अद मदु वुतरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

हंगु आख द्रोपदी नंग रॅछ्थिस, नंगु वुछनस तस सामरथ कस।
रंगु रंगु आबरन नॉल्य तस हरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

लक्षमणो छ़ारुन 'परमानन्द', च़र च़राच़र युस छुय अंद वंद।
लो लो करान नेरवुन लोलरे, संतोष्ट रोज़तम गरि गरे।।

❋

सनियॉस्य हा गोसाने

सनियॉस्य हा गोसाने।
कुनि कने यिखना वने।।

जटि मंज़ छय गंगा जॉरी, ज़न छय वसान अमृत दॉरी।
सूर बस्मा मॅलिथ छु तने, कुनि कने यिखना वने।।

ड्यकस प्यठ छिय यिम त्रे नेथर, शूबवुन्य ज़न पम्पोश वॅथुर।
वासुक नाग छुय योनि कने, कुनि कने यिखना वने।।

जाय च़े रॅटथम शिन्या शयन, छ़ायि छ़्यॅयफ ह्यथ रूदुहम नयन।
सर्वुव्यापक छुख हनि हने, कुनि कने यिखना वने।।

खास भृषभा छुय वाहनय, सॉर करान छुख त्रुभवनय।
छय च़े उमा खोवरि कने, कुनि कने यिखना वने।।

पानु म्यान्यो मो नाज़ तने, काल वॅरिथ यथ सूर बने।
शिव चु गारुन मंज़ बाग मने, कुनि कने यिखना वने।।

ऑरतिस कास्तम ऑरच़रय, गटु कास्तम अमरीश्वरय।
म्वख मे हावतम हरम्वख कने, कुनि कने यिखना वने।।

च़्वन ब्वज़न छिय आयुदा, शंख च़ॅक्र कपाल गधा।
सारिनुय मंज़ छुख अन्दु कने, कुनि कने यिखना वने।।

✷

ॐ नमो जगदंविकाय।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(प्रथम तरंग)

लीला 1

ग्वडुन्य गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतुय रठ राजरेनि हुंद खास दरबार।।
वॅनिथ क्या ह्यकु बु दीवी चॉन्य लीला।
करय व्वन्य मूर्खगियि किन्य मूर्ख खेला।।
चु माता शारिका संतुष्ट मे प्यठ रोज़।
गदा आमुत बु दर्गाह छुस सदा बोज़।।
वॅहरिथ ज़ाल संसारन वोलुम नाल।
करुम व्वन्य चारु नतु क्या म्योन छुय हाल।।
मदन लूभन मुहन कॅरमुच़ छनम जाय।
कृपाये किन्य करुम म्वकुलावनुक पाय।।
अहंकारन स्यठाह ह्योतमुत छुनस तल।
यिमन च़ोन मुशकिलन माता करुम हल।।
बु दर्शुन छुस नु वातान न्यथ भवॉनी।
क्षमा पापन मे करतम मॉज्य भवॉनी।।
कोठ्यन शख्ती, अॅछन थाव तम पनुन गाश।
दरी दुनिया फकत चॉनी मे छम आश।।
मे मूर्खस गछ़तु बूज़िथ मॉज्य भवॉनी।
सिवाये चानि वनु कस कुस छु म्योनुय।।

दिलुक तमना मे कडतम छुस बु चोन दास।
रक्षा करतम पद्यन चॉन्यन तलय आस।।

कर्मु फल किन्य अगर केंछ़ा मे छुम पाफ।
क्षमा सागर च्रु येमि किन्य छख करुम माफ।।

कलम तुल पानु लेख म्यॉन्य कर्मुलीखा।
करुम सॅज़ कांह अगर हॅज्य छम मे रेखा।।

कृपा सागर ज़गत माता छु चोन नाव।
शरन आसय पद्यन पनुन्यन तल मे थाव।।

सिवाये चानि छुम नय कांह रछनवोल।
च्रु दीवी म्यॉन्य छखना मॉज्य तय मोल।।

ब्वज़व आष्टादशव सुत्य कर च्रु रक्षिपाल।
च्रु येमि किन्य आसवुन्य छख दीन दयाल।।

च़े रोस्तुय कस वनय कुस बोज़ि म्योनुय।
बु छुसना नाबुकार संतान चोनुय।।

यि अख मशहूर कथ, प्रथ कांह छु ज़ानान।
क्वपुत्र छुय, क्वमाता छय नु आसान।।

मंगुन छुम न तगान, बोज़ुन तगान छुय।
ल्वकुट शुर माजि यिथु पॉठ्य द्वद मंगान छुय।।

दिलस यॅच्रु कोल अमिकुय छुम मे हावस।
दितम दर्शुन लगय पॉर्य पॉर्य बु नावस।।

बु चान्यन पादि कमलन रथ वंदय ना।
शरीर अर्पन पनुन च़ेय पत करय ना।।

पनुन ज़ुव, जान, वॉलिंजि खोन्ठ वंदय ना।
पनुन्य यिम टॉठ्य छिम सॉरिय वंदय ना।।

लगय ना चॉनि मायाये लगय ना।
लगय ना बजि दयाये चानि लगय ना।।

यिमन पम्पोश नेत्रन च़ेय लगय ना।
मुकट दॉरी स्वन्दर शेरस लगय ना।।

यि केंछ़ा छुम चोनुय च़ेय वंदय ना।
क्षमा करतम क्षमा करतम चु क्षमा।।

चु छखना राजिरेन्य राजन दिवान राज।
अॅतीत आमुत मे बख्शुम ज्ञानुक ताज।।

गछ़ान दिथ छख अमीरन चुय अमीरी।
दरी दुनिया मे करतम दस्तुगीरी।।

च़े निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर।
मे पादन तल कृपाये पनुनि किन्य वर।।

बु ज़ॉरी छुस करान च़ेय दस्त बस्तय।
करय अर्पन जिगर ज़न पोशि दस्तय।।

दोयुम ब्याखा च़े ह्यु छुम नु कांह ति दाता।
बु हर कस्मुक मदद कर म्योन माता।।

गॅंडिथ गुल्य छुस करान च़ेय ज़ार पारय।
पॅतिमि वख्तय मतय करतम अवारय।।

परेशॉनी यि म्यॉन्यी करतु व्वन्य दूर।
यछ़ाये दिल कॅरिथ करतय मे मंज़ूर।।

चु छख म्यॉन्य इष्ट दीवी कष्ट कास्तम।
सदा संतुष्ट रूज़िथ मनि बास्तम।।

वनांन सॉरी छि चॉनी जाय स्यद पीठ।
स्यदिथ करतम मे ह्यु म्वकलिथ गछ़्यम कीठ।।

बु कश्मीर कुत्य वॅथ्य नेकनाम सत्ज़न।
कृपाये चानि किन्य सरतलि बन्योख स्वन।।

मूर्ख ब्वज़ु किन्य न छम शख्ती न भख्ती।
द्यालु छख गछुम बख्शिथ मे म्वख्ती।।

बु छुस आरुत बन्योमुत आरवल ज़न।
गशर चलिह्यम बन्यम मे ऑनु ह्यु मन।।

अगर रछहम पॅद्यन तल कुस मे पोर्यम।
तवय किन्य चॉन्य भख्ती ज़ांह नुय सोर्यम।।

कबूल गछ़तम कॅरिथ व्वन्य म्यॉन्य ज़ॉरी।
वंदय रथ पादि कमलन मॉज्य च़्वपॉरी।।

यि लीला परि युस सुबहन तु शामन।
तॅमिस दीवी सफल करि मनि कामन।।

दपान 'दासस' छय चॉनिस टॉठ बख्ती।
बु दुनिया स्वख बु उकबा दिम मे म्वख्ती।।

✸

लीला 2

संसार् सागरस सुम दिथ तर् अपोर।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाठ वाति बोर।।

ज़ीवु अद्यास ज़ख्मन निज़ानन्द बुलगार,
सत् ग्वर यॊलि दियि अद् बलि बेमार।
निर रोग बनि यूगु ज़ख्मन बेहि क्रोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर।।०।।

मोह बांदि वानस काम क्रूद पॅहर्दर,
बेडि खुलु गछ़न यॊलि ज़ॆवि श्यामु स्वन्दर।
वसुदेव ख्वनि ह्यथ जमुनायि तरि अपोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर।।०।।

द्वखु सागरस मंज़ दॆह अब्यासु करनाव,
पॊत नम तु ब्रूंठ्य नम संकल्प विजि वाव।
बठि यॊलि फटि नाव मटि कस छु म्योन बोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर।।०।।

ग्वर् वाक्य किन्य गर बख्ती हुंज़ नाव,
सत् ग्वर हाँज़ ह्यथ स्वख सागरस त्राव।
वाव वुछ्थि त्राव नाव व्वटि मंज़ गछ़ अपोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर।।०।।

मोह राज़ु रावुन राग राक्षसन ह्यथ,
शाँती सीतायि रामस च़ोल ह्यथ।
लंकायि मंज़ ब्यूठ दुतन द्यितुन ज़ोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अद् गाटस वाति बोर।।०।।

राम बन सागरस सॊथ दिथ तारुन,
रावुन मॉरिथ सीता तारुन।
शेथर् रोस राज कर पृथ्वी च़लि बोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

सत् ग्वर सागरस सॅनिस तु व्वॊगनिस,
व्यापक छु पानय गॅनिस तु तॅनिस।
सत् कथ बावनय व्वटि तरख अपोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

ज़ानखय सलाह ग्वडु गॅन्यराव श्रदा,
ग्वर् वाक्यस प्यठ रोज़ ठीकित सदा।
अनुभव अनुग्रेह दारि खुलु गॅछ़िय तोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

कॅदलुक असबाब कर्मुक व्यस्तार,
व्यराग गिलकार शम दम छान खार।
मुक्तिता ह्यथ बनाव नित्य अनित्यच सोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

सथ डेडि सथ ठॅठ्य तत् पद विशेषन,
ठॅठ्य दिस तमिकिय तिमय तथ शूबन।
निर्वैर बावुक कानुल तरि अपोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

चिल दिस बंद मुख्ती हुंद अब्यास,
न्यशकाम बल छुय छ़ल छुय श्वास अश्वास।
ज़ीव ब्रह्म एकतायि हुंद दिज़्यस ज़ोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

निर्द्वन्द्व निर्वैर निरअपेक्ष भावुक,
दिस फरश काठकर गंडुस श्वद भावुक।
सत् संग मॉर्यज़्यन स्वरुफ च़्वापोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

तत्व ज्ञानुच डेडि डीडि वोन्य प्रबुद्ध,
वेदान्त सार तस नित्य निज आनन्द।
मज़बूत ठीकिथ यपारि तर अपोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

आद्य अन्त मध्य निश त्रिशुन्य नाद बिन्द,
निमित उपादान कारन छु अबिन्द।
एक भाव यपारि अपोर कुन दोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

हरिद्वार श्रान कर सपदिय श्वद मन,
भिन्न बावस सुत्य ठीकित छु अभिन्न।
निर्द्वन्द्व हर मोल हरम्वख द्राव सोर।।
गछ़ शरन सत् ग्वरन अदु गाटस वाति बोर।।०।।

❋

लीला 3

मनु छुम मेलुहा पनुनिस यारस।
प्रारस अशि मुकाम।।

वॅनि मे दिच़ाम यथ भवुसरस, वॅनु कस वनि नो आम।
क्षनु क्षनु छ़्यनु नो तसुंदिस कारस, प्रारस अशि मुकाम।।

बुलबुल मुश्ताक छुय गुलज़ारस, ज़ांह ति नो तमन्ना द्राम।
कॉल्य मा खज़ानु लगि अथ बहारस, प्रारस अशि मुकाम।।

अँदरी वॅनि द्यू वॊन्दि मंज़ यारस, मंदिरस अंदर च़ाम।
सौदा ब्यॊन ब्यॊन छु साहूकारस, प्रारस अशि मुकाम।।
दूख छुम पूशुस नु लॉनिनिस कारस, नतु क्याह लेखनु आम।
ती बु वनहस पॆयि ना पायस, प्रारस अशि मुकाम।।
युन तु गछुन छुय प्रथ ज़ीवु द्वारस, यिनु यिनु मुस हो च़ाम।
सरु कॊरुथ नो यिथ संसारस, प्रारस अशि मुकाम।।
सुय नाव सु़त्य छुम मे नावि तारस, यॆमि नावु सांपनुस राम।
'वासुदेवु' लयि रोज़ तॅथ्य दीदारस, प्रारस अशि मुकाम।।

✷

लीला 4

पादि कमलन तल बु आसय, करनि मॉज चॉन्य अस्तोती।
मूक्ष दिम बॊड वर मे दिम, हे भरगुशिखा भगवॅती।।
गोम नेत्रन खूनु जॉरी, छुस च़े कुन ज़ॉरी करान।
बास प्रत्यक्ष कास खॉरी, ॲस्य छि पापव वॅल्यमुती।।
चानि आशायि यॊत बु आसय, ना व्वमेद नेरय नु ज़ांह।
या मे वर दिम मूक्षदामुक, नतु छुसय प्रारान यॆतिय।।
लोलु बागस पोश फॊल मे, वेरि चाने च़ॉर्य च़ॉर्य।
शेरि लागय बावु कोसम, शोलुवन्य कारेपॅती।।
क्या वनव ॲस्य मन्दछेमुत्य, चन्दु छॆन्य सोदा करान।
कर दया व्वन्य वुछ मु तथ कुन, शर्मि सु़त्य ॲस्य गॅल्यमुती।।
चॉन्य ग्वन व्यसुतारुनुक ताकथ, अनी कुस कुस वॅनी।
छुय च़े जय जय शामु स्वॅन्दरी, जामु शूबान छिय छॅती।।

ग्यानु दाता मूक्ष दाता, छख ज़गत माता चु छख।
ही भवॉनी कर मे वॉनी, स्यद म्वखस दिम सरस्वती।।
पज़ि मनु युस बख्ती चॉनी, करि नेश्कल राथ द्यन।
क्या छु संशय तसुंदि बापथ, मूक्ष दामुक्य बर वॅथी।।
चॉन्य ग्वन छुस बु व्यचारान, पन ओमुक्य खारान बु छुस।
अबसुनुक वर द्वन कुनुय कर, नतु छु आछुर कॅत्य कॅती।।
सर्वु व्यापक छख च़्वपॉरी, अॅस्य छि शॉरी क्या वुछव।
व्वन्य च़ेय रोस कुस बोज़ि ज़ॉरी, हाव म्वख पेठ्य परबॅती।।
करमु हीनन धर्मु हीनन, करतव्यन सान्यन मु वुछ।
डाल स्योद अथु करमु लॉनिस, प्रक्रमस चॉनिस खॅती।।
वीलु ज़ॉरी बोज़ 'वेष्णस', रोज़ सन्तुष्ट सर्वदा।
छुय च़े रोशन छुस बु तोशन, चुय मे बखशख थॅज़ गॅती।।
पादि कमलन तल बु आसय, करनि चॉनी अस्तोती।
मूक्ष दिम बोड वर मे दिम, ही भरगुशिखा भगवॅती।।

✷

लीला 5

हे कृष्णु दया छय ना गछ़न,	ब्रम दिथ मच़न गोख।
ब्रम दिथ मच़न नेन्दुरि हच़न,	ब्रम दिथ मच़न गोख।।
क्याह रुत समय ओसुय तेलि,	येलि चु राधा ह्यथ।
प्रेयम सुत्य रास मंडलस मंज़ नच़न,	ब्रम दिथ मच़न गोख।।
अन्तर बाहिर, रातस दोहस,	ऑस्य बाग्य वुठव सुत्य।
तोलान प्रेयमु बोज़ तारच़न,	ब्रम दिथ मच़न गोख।।

दर्शुन दि करुनाकर भक्त वत्सल, उदास कॅरिथ गोख।
अथुरोट कर वृचु गोपियि कॅचन, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास।
आशचर यि कस ओस बोज़ मंज़ अचन, ब्रम दिथ मचन गोख।।
माया मोहन चॉन्य मन मोहन, मोहन ब्योन ब्योन ओस।
मोहन रंग रूप आमुत मुनियन, ब्रम दिथ मचन गोख।।
अमृत रूपी दर्शुन म्वखय, व्याकजि गॉमुच़ छय।
शुर्य ज़न बोछे हॅचन ब्रुछन, ब्रम दिथ मचन गोख।।
छ्यनु कमि स्वनि सानि द्युतुय कॅरिथ, कन कम्य बॅर्यि सॉन्य।
मन सोन यिनस छुय ना पचन, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
अमृत वर्शनु नारायनो, शेहलाव मनुय सोन।
सन्ताप भवु सागर दज़ुमुच़न, ब्रम दिथ मचन गोख।।
असि लोल चोनुय गन्योमुतय, कॅम्य सोनि द्युतुय च़े डोल।
सुय लोल सन्योमुत असि कॅच़न, ब्रम दिथ मचन गोख।।
बरय च़े कॅरिथ विश्वम्बरय, बरय अचख ना।
छुय ना सोन ज़रु ज़रुह गछन, ब्रम दिथ मचन गोख।।
त्यॉगिथ लज़ायि क्रॉनिस द्राये, सीवायि आये च़ेय।
पॅज़्या अनह्योत लागुन ह्यच़न, ब्रम दिथ मचन गोख।।
ऑदीन अनाथ बख्त ऑरती, पालान छि दर्म तु दान।
हितकार उपकार करान गछन, ब्रम दिथ मचन गोख।।
श्रीधर, करुणाकर श्यामु स्वन्दर, ज़ानान च़े छि भास्कर।
ब्योन छुखनु सुत्य सुत्य ऑसिथ ज़ॅच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।

प्रेमन तु वीनायि आनन्द स्वरन, ब्रम दिथ न्यून मन सोन।
ब्रजवॉसी दॉसियि मलु हॅच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
प्राणो यिय च़े करुथ वॉणी, फीरिथ बु यिमोव यूर्य।
दुबार म्वख होवुथ न मुह हच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
केशन त्रॉविथ बूशन पॉरिथ, डेंशान छिनु म्वख चोन।
दर्शुन करन वाजे मॅच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
ज़ॉनी नु असि चॉन्य सेवा कॅरिथ, पूज़ा तु त्वता कॅंह।
दया कर असि व्यच़ार रछ़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
पज़िहे नतय छा दर्म करुन, फीरिथ न नज़र दिन्य।
त्यॉगिथ मथुरायि गोख अछ़ रछ़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
च़्यथ, ब्वद, मन, प्रान, अर्पन कॅरिथ, दॅरिथ छु चोनुय ध्यान।
सुय ध्यान खेलान असि ग्यान वच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।
रछ असि क्षन क्षन सॉरिय निशे, सॉरिय ज़न,राज़ु ह्यथ।
'केशव' आव आपदायव त्रच़न, ब्रम दिथ मच़न गोख।।

✸

लीला 6

पोत ज़ूने मोत वुज़्नोवुम।
ललुनोवुम नारायन।।

प्रेयि तॅम्य सुंज़ि हिंयि तन नॉवुम, पोश वथुरस प्यठ गोशन।
रोशि यियिना होश़ रावुरोवुम, ललु नोवुम नारायन।।
बालु पान तस पतु रावुरोवुम, हालु कॅमि सुय नालु रटहन।
शिवु शंभू शुन्य बोलुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।

कामुदीवस नामु लेखुनोवुम, पामु थविनम कर डेंशन।
रुमु रुमु राम रमुनोवुम, ललु नोवुम नारायन।।
द्वारु पतु द्वारु वारु वुछनोवुम, ज़ूनि छोंडुम मंज़ तारकन।
मारकन मंज़ लालु व्वलुसोवुम, ललु नोवुम नारायन।।
ल्वलि मंज़लि लाल ललुनोवुम, बोलुनोवुम सुबह शामन।
च़ीरुय सोवम सुलि वुज़ुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।
ज़ीरु बंमकुय सीर वुज़ुनोवुम, फेरुनोवुम तति हेरि ब्वन।
वेरि तॅम्य सुंज़ि शेरि वातुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।
ज़्यव नारु सुत्य वारु छलुनॉवुम, तवु लोलुन नार शोलान।
अॅछव बूज़ुम कनव वुछुनोवुम , ललुनोवुम नारायन।।
कंदु नाबदु आरदु नोवुम, फंद कॅरिथ यूरुय अनतन।
अन्द लॊबमसन व्वंद फ्वलुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।
हंसु दारय वारु पान प्रज़नोवुम, प्रारि प्रारोस रामु रादन।
ब्रमु सरु पान सरु करुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।
अथुवासय रास खेलुनोवुम, श्वास-अश्वास नॊन छु बासन।
'सास भास्कर' व्यकास बासुनोवुम, ललुनोवुम नारायन।।

✸

लीला 7

प्राता काल आव मॆति अनतु गाश मति,
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।
लटि म्वख हाव मॊह गटि करतु नाश मति।।
छम चॉन्य आश मॆति पूर्ण कर।।०।।

ज़न्मादि ज़न्मन ग्यूर आम फेरान,
छुस हालि हॉरान डेंशथ कर।
जल हाव म्वख पनुन छुम नु बरदाश मति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

भक्ति भावु सुत्यन वति चानि नेरय,
कति छुख आसान पॉगाम सोज़।
नतु दिम पनुनुय प्रोन यादाश मॅति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

मोहगटि मंज़ छुस वथ छमनु यिवान,
सत् ग्वरु हावतम सतुचिय वथ।
वथ हाव नोन त्राव सिरियि प्रकाश मॅति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कामन,
शहरन तु गामन कति आसि यार।
छुख पाताल किनु छुख आकाश मॅति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

निरवासन वनतु कॅति चोन आसन,
अंधकार कास्तम वंदयो प्रान।
करतम सोद्यवानिन्य हिश बाश मॅति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

कल्पनायि रोस्तुय कलु हो वन्दयो,
कलि चानि रॉवुम नेन्दुर तु नेह।
वलु व्वन्य 'वेष्णस' चलि अबिलाश मॅति।।
छम चॉन्य आश मेति पूरन कर।।०।।

लीला 8

हरे राम टाठि मैत्रय म्यानि।
लागय दान दान तुलसी।।

कौशल्या हुंद्य आनन्दु गनु, पादि कमलन पान वन्दुयो,
निर्बन्दन रघुनन्दन, दासस कास भव बन्दनुय।
महा प्रभू शुब दर्शन दि, लागय दान दान तुलसी।।

हा रामु श्याम स्वन्दर देवु, हृदयस वेशि सेवय चॉन्य पदम पाद,
शरनहो आसय वासुदेवु, चावतम च़रनन हुंद अमृत प्रसाद।
परन प्योसय सर्व ईश्वर चेय, लागय दान दान तुलसी।।

ज़गतस उत्पत्त स्थित तय नाश, तमि निश सांपनुस नेरआश,
आदि देव त्वं स्वयं प्रकाश, कीवल छम च़रर्णाबिंध चिय आश।
तनु मनु पान पुशुरमुय चे़, लागय दान दान तुलसी।।

यस चावि ईश्वर प्रेमय रस, तस थॉविन भव नियम च्यतस,
त्रावि राजस तु अमृतस, प्रावनाव्यस परम तत्वस।
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी, लागय दान दान तुलसी।।

स्वर्ग स्वखु खोतु रस रागस, रसु रसु व्यसुरावॉनी,
ज़गत आकार वृति बानस, च्य़तु निश मशरॉवानी।
राग रस ज़ानि अख वॉरागी, लागय दान दान तुलसी।।

मूर्ख़ु ज़ीवन काम रस च़ाव, ज़न्म मृत ज्वरा रोग बॉगी,
ज्ञाता जीवन राम रस च़ाव, स्वत: सांपनान सर्व त्यॉगी।
शुकदेव सु देवदत्त सॉक्षी, लागय दान दान तुलसी।।

प्रेम अग्नसु तेज़ बलुवान, बव नियम काष्ट बीज़ गालान,
प्रेमी मनस छु संबालान, नियमी ज़ीवन बन्दन गालान।
सहज प्रेमी सदा नियमी, लागय दान दान तुलसी।।

आश्चर्यवत छु बगवत ध्यान, अति वाहक दृष्टि मोकुलान,
च़्यत विकास हृतु कमल फोलान, सांपान श्वद स्कंलप बान।
बनान निर्विकल्प समाधी, लागय दान दान तुलसी।।

गौतुमुनि शाप सुत्य अहल्या, बनेमॅच़े ऑस जड शिला,
ज़गत मंगल छि राम लीला, व्वदयस आयस श्वब वेला।
पादि स्पर्श सुत्य बनेयि देवी, लागय दान दान तुलसी।।

वलनु आस बुद्धिस्थित चिदाबास, च़ित रंजन वाल वाशे,
चित घन राम साक्षात बास, कास अज्ञान कर्म ज़ाल पाशे।
बंद छुस चिदाकाश पॅक्षी, लागय दान दान तुलसी।।

मोक्ष दायक मुकुन्द राम, भाग्यवान अजोध्या वॉसी,
प्रावनाव्यथख विष्ण स्वदाम, युस यछ़ान योग अभ्यॉसी।
बख्त प्रिय मोक्ष करिथ सारिय, लागय दान दान तुलसी।।

ज़गत गुरु त्वं पुरुषोत्तम, सर्वेश्वर सर्व व्यापक सम,
बगवानु स्वखु म्वख यितम, श्रीमान श्वब दर्शुन दितम।
करतम निर्वान व्वपुदीशिय, लागय दान दान तुलसी।।

ज़नार्दन गोपाल गोविंदय, नारायण विष्णु वासुदेवय,
हृषीकेश माधव मुकुन्दय, हरे राम कृष्ण आदिदेवय।
आशा छम नाम निदान दानचिय, लागय दान दान तुलसी।।

प्रिय ब्वद,शवद च्यथ क्षेत्रस, वॆदिवत वविज़ि बगवत नाम,
नावस स्वरूप बनि मित्रस, च़तुर्भुज श्याम सुन्दर राम।
फल दायक छि प्रॆयम खेती, लागय दान दान तुलसी।।

देव बुद्धदेव दृष्टि छि सादन, नॆष्काम सीवान तिम विष्णु पादन,
परम पावन छि राम आरादन, क्षय सांपनान अपरादन।
उपासना बिन्न छय न गती, लागय दान दान तुलसी।।

दास छुनु स्वर्गु स्वख पुछ़ि राम, बरतल चनि त्राविथ लर,
कास मनस नरक दुख बय श्याम, दॊनवय आसवुन्य अस्थिर।
दासस छय प्रय श्वब दर्शन चिय, लागय दान दान तुलसी।।

यिछ गथ छय राम नाव प्रेयमस, तिछ़ गथ छनु तपस तु व्रतस,
प्राणायामस यमस तु नियमस, राजस स्वर्गस तु अमृतस।
राम महिमा क्या वनि वाणी, लागय दान दान तुलसी।।

ज़ीवनमुक्त हनुमान देवन, सीवुन राम नाव जानिथ सार,
सीता-पति राम ज़ुवन, कृपा कोरनस सारंगी म्वखतुहार।
हलमतस छय राम नाम प्रीती, लागय दान दान तुलसी।।

चवान राम नामु रस गलि गले, राम सेवक महा नैष्काम,
म्वख्तु हारस फलि फले, वुछनस न कुनि श्रीराम नाम।
चुन्य कॅरिथ त्रोव हलुमती, लागय दान दान तुलसी।।

महा महिमा राम नावस, दैव विबूत दर्शन न्यथ,
मान सांपनान निष्कामस, चिदाकाशस अन्तर्गत।
महा पुरुशन छु सुय हर्षय, लागय दान दान तुलसी।।

राम नाम रस महादेवस, तवय सीवान सर्व लूक तस,
गिरिजा राम नाम भूशणस, तोशान-तोशान लागान मनस।
क्षनु क्षनु न्यथ सादान ती, लागय दान दान तुलसी।।

युस वोर बख्ती यूग अभ्यासन, सुय फेरान न्यथ पॉच़न कोशन,
रामु नामु सुमरना बूशन, निवारान रोज़तम दूशन।
सांपनान ज्ञानु ग्वन सातविकी, लागय दान दान तुलसी।।

आदन बाजि म्योनुय स्रेह, कवु कारन केंहति छुयन चे,
छालु मार कोत गछ़ा लालो वे, अकिलटि रटतु नालु पायस पे।
म्योन संयोग चे सुत्य वीदान्ती, लागय दान दान तुलसी।।

नर्कुवासी सादु निन्दक, दुर्जनन क्रय स्वय न्यशदयेन,
स्वर्गु वासी छि सन्तु सीवक, सन्तन पालन मधुसूदन।
सादु वल्लबो लगय पारी, लागय दान दान तुलसी।।

यस अनाथस वरि रघुनाथ, तस क्या करि अस्त्वत तु निन्द्या,
साद सन्त राम रूपु साक्षात, रघुवरि प्रेयम प्वरुशस सदा।
रामु नामु रस च्यथ छिवेमती, लागय दान दान तुलसी।।

चंदन वृक्ष संत दुर्जन मख, मख चंदनस दिवान टख,
मखस प्रथ शायि अग्न दाहक, चंदनस वरान हरि मस्तक।
ज़ीव कृत कर्म फल भूगी, लागय दान दान तुलसी।।

प्रेयमस छय सारिचिय सिद्धता, महा दुर्लब बनान सुलब,
यस वरि हरि हर विदाता, दासु भावु किन्य सांपनान प्रभ।
भ्रमर कीटवत् छय प्रेमु खेती, लागय दान दान तुलसी।।

यस मनस आसि न प्रेयमच लीश, तस क्या करि गुरु व्वपदीश,
तस कदाचित गलि न राग द्वेश, चलि न तस माया मोह आवेश।
सगु खोतु संस्कार बली, लागय दान दान तुलसी।।

यथ शायि आसन संस्कारी नागवत, वुज़ान तति प्रेयमु ज़ल,
स्वतः सांपनान आदिकारी, प्रेमु जलु छलान च्यतु वृति मल।
स्वखसान बनान नेवृती, लागय दान दान तुलसी।।

यिथु पाठय मेघ वालि वर्शन,　　जलु वेग छुन वुछान दारि त बर,
तिथय पॉठ्य स्वत: सेद्ध पुरुशन,　प्रवेश करान बाह्य अन्तर।
सप्त सेद्धी ख्वतु छय प्रेमु नदी,　लागय दान दान तुलसी।।

तीर्थ ज़ल कासान बाह्य मल,　　अंत:करण वृत रोज़ान चंचल,
रामु रागु यात्रा सफल,　　　चित्तु वृत बनान शांत शीतल।
'प्रेमी' वोर राम भगवॉनी,　　राम महिमा क्या वनि वॉनी
लागय दान दान तुलसी।।०।।

✷

लीला 9

सखियव रूठम हॉय रूठम हॉय, गॅछ़िथ ब्यूठुम हॉय गामुनुय।
तति विगिन्यव ड्यूठुम हॉय,　　बु चाक दिमना जामुनुय।।
सॅंदि ज़लु तन नावसॉय,　　　बु सीर पनुनुय बावसॉय।
क्याज़ि लॉजिथस पामुनुय,　　बु चाक दिमना जामुनुय।।
बालु प्यठु नादा लायसुय,　　बु साज़ु सेतार वायसुय।
छवन्य छवन्य करस रवनि दामनुय, बु चाक दिमना जामनुय।।
तारामंड़ला द्रामतुय,　　　　ज़ूनि नादस आमुतुय।
रोव हॉय करव सुबह शामुनय,　बु चाक दिमना जामुनय।।
वनु विगिने द्रामुच़य,　　　　डलु सॉलस आमुच़य।
ज़ूला ज़ालव रंगु नावुनय,　　बु चाक दिमना जामुनय।।
सॅखियव मनुविथ ॲनितोन,　　आदन बोज़ म्योन नुंदबोन।
व्वन्य नय कॉंसि बु हावुनय,　　बु चाक दिमना जामुनय।।

लीला 10

पानय बिहिथ पनुनिस वानस, आनस आनस वुछहन यार।
तसुंदुय सौदा हर दूकानस, आनस आनस वुछहन यार।।

मस्त गयि मस च्यथ वॉत्य लामकानस, अयान सपदुक पनुनुय पान।
शबाश बॅविनय अथ खुमखानस, आनस आनस वुछहन यार।।

फना फिला निशु छुय पानस, बका बिला तहकीक कर।
ब्रह्मन लॉगिथ अछ़ बुतखानस, आनस आनस वुछहन यार।।

सॉलिकव मॉलिकी कॅर यथ जानस, तिम छिय वॉतिथ पय दर पय।
आशक छु मुश्ताक पनुनिस पानस, आनस आनस वुछहन यार।।

आश्कव पानु खोर अॅश्कु पेचानस, हॉसिल सपदुख वॉसिल कार।
दम दम ग्युन्दहोय पनुनिस जानस, आनस आनस वुछहन यार।।

पानय पानस ध्यान करु पानस, ऑनस निश तस लॅगिय नु छ़्यन।
मीलिथ सु ड्यूठुम दानस दानस, आनस आनस वुछहन यार।।

दमु सुत्य पम्पोश फौलियो जानस, गमगीन मो गछ़ रोज बेदार।
खय कास दिलकिस आयीनुखानस, आनस आनस वुछहन यार।।

हॅस्ती मो कर पनुनिस पानस, मस्ती पनुनिय रावन छय।
'लसु शाहो' लय कर प्रानस अपानस, आनस आनस वुछहन यार।।

✸

लीला 11

स्वख शब्द दर्शन चाने।   आनन्द गनु टाठि म्याने।।
रात द्यन करान छुस चेनतन, ख्यनु ख्यनु छुम चंचल मे मन।
ईश्वर दूरेरु चाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
राग चोन युस छुम मनुसुय, सातु सातु रातस द्यनसुय।
म्योन द्वख चे रोस कुस ज़ाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
राजन हुंदि महाराजे, टाठि म्यानि आदन बाजे।
लीखिथ मे क्याह ओस लाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
योदवय चु म्यानि कथु बोज़ख, दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़ख।
रोज़ चूरि यथ ग्वफायि म्याने, आनन्द गणु टाठि म्याने।।
यॅच़कोल चे तु मे दूरेर, किथु ज़ोरुथ युथ कोरुथ नु पूरेर।
अदु कर यि ज़ॅटु येलि प्राने, आनन्द गणु टाठि म्याने।।
ओसुस ज़ल बो न्यरमल, मोह कठुकश कोरनम छ़ल।
व्चिनम कचि शीनु माने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
त्रेशि हॅतिसुय मनस त्रेशा अमरयथ वरशुन बु डेंशा।
गलि शीन अकि कटाक्ष चाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
कर्मु किन्य वेश कम दॉरिम, गंर्दब बुथि बॉर्य सॉरिम।
ब्रशबु वेश तल अलुबाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
कामनायि अतुर कोरनस, अमर्‌यथ बास्योम वेहरस।
श्रोपरोवुम दानि दाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
कन थोवुम नु सतग्वर शब्दन, ज़र छुनुम खोट्‌य प्रारब्धन।
कर्मव कोडुस परिनि छाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।
आनन्दसु चाव अमर्‌यथु रस, संसारु निशि बनि बेहस।
बनि नोन अनुग्रेह चाने, आनन्द गनु टाठि म्याने।।

श्री शारिका लीला -लहरी

(द्वितीय तरंग)

लीला 12

चराचर छुख परम् ईश्वरो।
रछितम सॉ पनुन्यन पादन तल।।
गज़ म्वख बालचन्द्र लम्बूदरो, विनायको बॅविनुय जय।
हर म्वख दर्शुन दितम ईश्वरो, रछितम सॉ पनुन्यन पादन तल।।
निष्कल नाव चोन निरंज़नो, स्वकल दारिथ त्रे कारन।
सुमरनि चानि सुत्य ज़न्म मृत हरो, रछितम सॉ पनुन्यन पादन तल।।
दीवी तु दीवता सॉरी सॅमिथ, नॅमिथ छि करान चॉन्य सुमुरन।
सुमुरनि चानि सुत्य सॉरी पाप हरो, रछितम सॉ पनुन्यन पादन तल।।

✸

लीला 13

श्री राज़ु रॉज़ीश्वरियय आमुत्य शरन छिय
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वॅलाब, मादल तु हिय।
गौरी अम्बा अम्बराक्षीम अहम ईडे।।
ज़गत अम्बा चुय छख, मंज़ वदुनस असुनाव,
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामानु प्यठु त्राव।
कल्यानु सोस थाव सुत्य ॲश फेर्यन बरान छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

बाहन सिर्यिन ज़ुचन चान्यन हुंद प्रकाश,
चरन चॉन्यी करान संकट गटे छि नाश।
तिहुंज़ेय गरदि सुत्य देव मुकट जरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

लोका लोकन हुंद्य सतज़न कारन देवुगन,
सिंहासनस चॉनिस दिवान छिय प्रदिख्यन।
परम दामुक्य पुरुश प्यवान परन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

षटचॅक्र रूपी चक्र नागस छि नॅन्य नेरन,
तीज़ुचि रेखायि च़्वापॉरय त्रिकोनस फेरान।
यूगी ग्यॉनी प्रॉनी सुय द्यान दरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

ब्वद छ्वेनु वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय,
कामेश्वरी च़ेय मन कामनायन मंगन छिय।
येछ़ि चानि श्रद्धायि सुत्य स्तुतायि परन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

पनुन्यन बॅखत्यन दासन हुंदुय पेयनय पास,
तिहुंदेय पासय क्वकर्मन हुंज़ गटय मे कास।
ज्योति स्वरूप हाव छय च़े भूतेश्वरुन्य द्रुय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

भगवत मायायि हुंदि रंग चॉन्य छि रंगा रंग,
चाने सुती छुय यूग, छुय भोग, छुय सतुसंग।
तप ज़प समाद क्रिया कर्म करन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

महामाया चुय छख, च़ठ चुय ॲसि माया ज़ाल,
असि वॊलमुत छुय गृहस्थुकि कालसर्पन नाल।
लॅग्यमुत्य सॉरिय पनुन्यन पनुन्यन गरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

कम बॅख्ती किन्य बख्तावारन स्वरन छिय,
कथ कामि लगव क्याह तगि ज़िन्दय मरन छिय।
चुय टोठ सॅच़ चानि सुत्य ॲस्य द्यन द्यन बरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

प्रसाद कर गाल ज़न्मादिज़न्मन हुंद्य अपराद,
सब्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश पाद।
यिम तिम स्वरन यथ बवसरस तरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

चाने सुत्यी सृष्टी गॅयि नॅन्य जय भॅविनय,
मंज़ शून्य उत्पत स्थित सॉपनी जय भॅविनय।
कल्युगची महाराजरॉनी शरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

कुनुय यॆलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस,
ज़गत यस ज़ाव मॉजा मोला तस कुस ओस।
चित शख्ती चॉनी एक अनेक स्वरन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

चुय अज़पा गायत्री पांछ़ कारन ग्यवन छि गीत,
निस्त्रेग्वन छख ग्वनव चान्यन सुत्य परतीत।
चानि सुत्य कार अन्तःकरन करन छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसान,
प्यठ शेशनागस विष्णु रूपय छख बासान।
सॉरिय ग्वण चॉन्य महा पुरुषिय वरण छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।
च़ेय कित्य नाना रंगय बूज़न रनन छिय,
च़ेय निशि स्वर्न बानन लॅदिथ अनन छिय।
नाना रंगव मिठायव थाल बरन चेय कित्य छिय।।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।
चाने दयायि सुत्य कॅड्य बड्य बड्य नाव।
नेशब्वद 'कृष्णस' निश वॉनी हुंद अमृत द्राव,
परन वाल्यन ज़न्मन हुंद्य द्वख हरन छिय।
पूज़ायि लागय व्यनु पोश, ग्वलाब, मादल तु हिय।।०।।

✸

लीला 14

हे दयालु छुस बु चंचल लोलो।
अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
कर्मुहीन छुस आमुत संसारस, चन्दु छोन लोगमुत व्यवहारस।
अविद्यायि हुंज़ छम गांगलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
लय विक्षेप भय सुत्य छुम आवरन, मल खोतुमुत छुम अंतःकरनन।
विवेक पॉनि पान बो छलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
ज़ॉन्य ज़ॉनी ज़ांह तिनो ज़ोनमख चुय, ज़ान दिम तिछ़ जॉनिथ तवु गलि् दुय।
दिम नेश्चय युथ नु ज़ांह डलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
छुस बु लोगमुत संसारु सरुसुय मंज़, रोवमुत छुस पनुनिस गरुसुय मंज़।
ध्यान सुत्य ज़ालु ग्यानु मशलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।

प्योमुत छुस गटि मंज़ अनतम गाश, त्युथ गाश हाव युथ नोन छु सिर्यि प्रकाश।
कॉफी चॉन्य अख वुज़मलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
बानु हीन बु द्रास खानु गदाये, अंगहीन छुस फेरु कोत जायि जाये।
दिम बेख्या अनुग्रेह खलि लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
यम्बरज़ल बोम्बरो छस बु प्रारान, वेरि चानि पान छस पॉरावान।
वनु वनु छस व्रॅच़ आरवलु लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
लोल बागस फोलिमो गुल तु गुलज़ार, पोशनूलो अज़ वलो छावु सब्ज़ार।
होश दिम युथ पोशि वॉर फोलि लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।
हा विष्णो पनुनुय पान ज़ानतम, येलि ज़ानख तेलि बनि सरतलि स्वन।
चित्त 'ऑनस' करतु सोय कल लोलो, अनुग्रह चानि बेमार बलु लोलो।।

✹

लीला 15

व्यनथ बोज़ुम चु राधा कृष्णन, लायय लोलु नादा बो।
बरय लोला परय लीला बो, करय हो हो, करय हो हो।।
चु छुख यूगुक ज्ञानुक गुल, बु छस ना बावु कुय बुलबुल।
चु लोब रोज़ख ज़रय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
च़ेय छय पम्पोश पादुच द्रय, वरुम छस बख्ती बागुच हिय।
चु नय डेंशथ हरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
चु छुखना प्रान बो छस तन, सत्ता चॉनी छि दोन मिलवन।
चु नय आसख मरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
ज़लस मंज़ गॉड ज़न छस बुय, बु छस च़ेय सुत्य ज़ल छुख चुय।
च़े रोस्तुय व्वन्य दरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।

बु छस चॆय मेघु वर्णस मोर, रॅटिथ छस खोर रासस मंज़।
नच़य लूकन खरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
चु सर्वस्य छस बु कुमरी ज़न, करन छस बूल्य मॅशिथ हन हन।
छ़ुनय त्रॉविथ गरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
चु छुख चॅन्द्रम ह्यु ज़ोतन, ककुव ज़न छस चॆ कुन बोलन।
वुछुथ नय अॅछ ज़रय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।
चॆ श्रीकृष्णस बु छस प्रारान, दितम दर्शुन यितम लारान।
चॆ रॊस्तुय व्वन्य बरय मा बो, करय हो हो, करय हो हो।।

✷

लीला 16

लालु लगयो बालु बावस।
रामु नावस पॉर्‍य लगय।।

तंग ओननस व्यवहारन, रंगु बुलबुल गोम कौल।
गंगु वोन्य चाव मंज़ यथ तावस, रामु नावस पॉर्‍य लगय।।
बख्ती बावय नाद लायय, अर्दु रातन स्वन्दरो।
चानि दर्शुनकुय छुम मे हावस, रामु नावस पॉर्‍य लगय।।
हे मुरारी, वीलु ज़ॉरी, म्योन बोज़ख ना कनव।
छुख चु टोठान बॅख्ति बावस, रामु नावस पॉर्‍य लगय।।
त्रटि हुंदि सायबानो, गटि हुन्दे गाशरो।
मुह अनिगटि मंज़ लॊगुस दावस, रामु नावस पॉर्‍य लगय।।
गॊब गोमुत बोर पापन, दॊह लॊगमुत छुम दरय।
नाव लॅजिमुच़ मंज़ व्यथु वावस, रामु नावस पॉर्‍य लगय।।
हे शिव, छुख सर्वु व्यापक, बॆयि छुख विश्वम्बरय।

केशवु तार दिम वर्ज़निस वावस, राम नावस पॉर्‌य लगय।।
क्रूठ प्योमुत छुम मे पानस, संसारुक लंगरय।
ख्यमु क्या छुम नु कैंह ति छावस, राम नावस पॉर्‌य लगय।।
बालु बावय वन्य मे दितिमय, वॅनि नो आहम चु ज़ांह।
व्वन्य यितम ती छुम मे हावस, राम नावस पॉर्‌य लगय।।
शयि शये शय चुय छुख, शय नो बॅयि रोज़ि कांह।
शयि रूद येलि टोठयोख कावस, राम नावस पॉर्‌य लगय।।
'आनन्दो' बख्ती तमि सुंज़, ज़ान पननुय मोक्ष व्वपाय।
व्रत तम्य सुंद दर चु मावस, राम नावस पॉर्‌य लगय।।

✸

लीला 17

चानि बरतल राव्यम रॉचुय।
आवाज़ वॉचुय नो।।

च्वंज़ु शूभहय बो खज़मुचुय, ग्रंज़ साहिबो ह्योचथम नु ज़ांह।
तवय नाव प्योम ललमॅचुय, आवाज़ वॉचुय नो।।
बालि रनिमय सारेय न्यॉमॅचय, खेनि साहिबो आहम नु ज़ांह।
तवय ललु छस छिन्दरेमुचुय, आवाज़ वॉचुय नो।।
गरि द्रायस बु जमॉचुय, वनि साहिबो आहम नु ज़ांह।
कॉल्य मेलव कॅयामॅचुय, आवाज़ वॉचुय नो।।
खॉस्य व्वज़लि बॅरुग छॅचुय, छस बु स्वर्गुच यॅम्बुरज़ल।
दादि बोम्बरुनि बरु गॉमुचुय, आवाज़ वॉचुय नो।।
बाल्य बॉली मो पख यचुय, गॉल्य कॉत्याह संसारन।
काल्य सूरचन गछान मेचुय, आवाज़ वॉचुय नो।।

लीला 18

राम लीला चॉन्य वनय।
श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।

तनु मनय अर्पन बनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।
निर्गुणय निञ्ज़नय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
चानि लोलुक छुम होल गोमुत, देहकिस ज़िसिसुय मंज़ बु प्योमुत।
वनु कस द्वख मे छुम ख्यन ख्यनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
येमि यूनी छम हॅज्य कॉरुय, गोसु त्राव व्वन्य मे छम क्वसु तॉरुय।
म्वख हाव द्वखु किन्य आस ह्यनयु, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
नट बॅन्य बॅन्य नाटक हॉव्यम, ईशु कम कम वेश बदुलॉविम।
निनु आस गॅछ़्य गॅछ़्य यिनु यिनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
कुतिस कालस व्वन्य बु प्रारय, बोज़तम ऑरचर ज़ारु पारय।
आर यियनय रघुनन्दनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
यथ वेश्स मंज़ म्वकुलावुम, योग आनन्दस मंज़ मे सावुम।
मौछ़ि आनन्द निर्बन्दनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
नाशु सोसतिस येथ संसारस, कॅमि बापथ बु पतु पतु लारस।
अतुगत पठ च़टुम पनु पनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
कालस छुनु करार ख्यनस, ग्रास करान रातस तु देनस।
चानि दर्शनु अमर बनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
कालस निशि व्वपदान संसारुय, कॉली तथ बनान आहारुय।
मंगु क्या तंग आस मरनु ज़ेनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।

बूगन मंज़ तृप्ती मे न आये, युथ मृगिन्यन मृग तृष्णाये।
अमृत चेनुकुय छुम मे वेनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
श्वान नीरस हडन टकान, टकि टकि पनुने ज़समु ब्रकान।
रस रतुक तस हे रस गणय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
कोमल पादि कमल मलय, हे शरनागत वत्सलय।
कोत बु चलय चे निशि रोज़ छेनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
स्वख कीवल चॉनिय स्मुरन, स्वख कीवल चोनुय दर्शन।
हे निर्द्वन्द्व आनन्द गनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।
'ठाकुर' चुय हृषीकेशय, बुद्धि पर युस निशचल राग द्वेश्य।
सर्व आत्मा चुय सनातनय, श्यामु स्वंन्दर नारायनय।।

✸

लीला 19

कृपा करतम हरी हरय।
बु क्या करय ज़ोर।।

लूसिथ प्योमुत छुस बुजरय, खोतमुत छुम बोड बोर।
यथ पंचालस किथु पॉठय तरय, बु क्या करय ज़ोर।।
आरु छु वज़ान व्वगनि दरय, वाराह छु करान शोर।
छोपु छु करान समन्दरय, बु क्या करय ज़ोर।।
वॅन्य वॅन्य यॅच़ गोम चखि अंदरय, ननन ज़न छुस चोर।
छ्वपि हुंद स्वख दिम यूगीश्वरय, बु क्या करय ज़ोर।।
पखु छम जेरिमॅचु छुम ज़रु ज़रय, बन्योमुत छुस मोर।
हीन छुस खोरन हुंदि ऑरचरय, बु क्या करय ज़ोर।।

संम्वख रोज़तम श्याम स्वंदरय, प्रबात ह्युव च़ोपार।
युथ नु पम्पोशस दोह लगि दरय, बु क्या करय ज़ोर।।
आबासु चानि सुत्य गॉमुत्य खरय, अन्तःकरण च़ोर।
मे बास प्रकाश रूपु ईश्वरय, बु क्या करय ज़ोर।।
त्रेग्वन उलंघित छुख शंकरय, शख्ती चानि छुस लोर।
ओगनिस दोगनाव कुनी वरय, बु क्या करय ज़ोर।।
च़ोरोंग ज़न मु फिरुनाव गरु गरय, यि बॉज़्यगार छा सोर।
दुबारु मु डाल प्यठ खार दरय, बु क्या करय ज़ोर।।
अन्दर च़ॉनिथ ग्यानुक गरय, हावुम च़ूरिम पोर।
तस मंज़ रूज़िथ आनन्द बरय, बु क्या करय ज़ोर।।
'कृष्णस' मुचुराव बावुक्य बरय, कुनी वरुतरु तोर।
युथ लरि ह्यथ च़ेय बसि अमरय, बु क्या करय ज़ोर।।

✸

लीला 20

बो तनु मनय अर्पन बनय।
नारायण श्रीमद् नारायणय।।

भ्रम किन्य संसार सत्‌रूप ज़ोनुम, दुखसुय प्यठ स्वख मननुय मोनुम।
बासतम तु कास्तम मोहुन सनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
च़ेय रोस्त नाश सोस्त ईशवरु सोरुय, मृग तृष्णा ज़लुचिय दोरु दोरय।
स्मृत पनुन्य दिम चुय ख्यनु ख्यनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
यथ प्यठ ईश्वरु स्थित थव चुय व्यन, सोरुय गछ़िय पोन्य सारुन क्रेंजल्यन।
आसरु चोन थवु सनातनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
संसारु कुलिस शरीर हर्दु पनय, कामना सॅहित तथ कुलिस मूल मनुय।
कालु छ़टि सुत्य नटि मंज़ द्यन द्यनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।

मूल संसारुक मन येलि गले, जामु बदलावनुचि आपदा चले।
मन गाल ज्ञानु खंङ्ग सुत्य ज्ञानु घनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
देह अबिमानन हनि हनि ज़ोलनस, दमु दमु क्रमु क्रमु शीन ज़न गोलनस।
स्मुरनि चानि निश कोरुनस छ्रेनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
थज़रुक ज़ल युथ कलु छावि पलनुय, ती करनोवनस ममता मलुनुय।
समतायि हुंज़ ब्वद दितम सतु ज़नय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
अच़्यतु सत्रूपु निरामये, भवु भय नाशस गछ़ि चानि लये।
चानि प्रेयि दय बुति चेय ह्यु बनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
विस्मृत कोरनस अविद्यायि दूशन, ब्रमु किन्य वश सोंपनुस पंच कोशन।
पंचु कोशातीत निरण्जनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
दिनम अपि रजनी सायं प्रातः, शिशिर वसंतो पुनरायातः।
कालुदेव करान ग्रास शनुय शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
मन म्योन मूहित कोर मुह मसुनुय, बेहस कोरनस तृष्णायि रसनुय।
मोह मद गाल व्वन्य हे मदुसूदनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
कामदेव कानय स्यज़रावानय, तस यस मनस आसि नु चोन द्यानुय।
सर्व आपदा नाश चानि दर्शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
ज़ीवन छुय जीवन चॉनी स्मुरन, देवु भाव देवन करुन चोन कीर्तन।
उत्पत्त सारिचिय चानि यछ़नय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
ज़ीवन हुंदि ज़ीवन देवु आदि देव, आनन्द दायक बांधव त्वमेव।
सर्व आत्मा रूपु सुदर्शनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
हे निराकारय सर्व आदारय, चानि दर्शनु मुक्त बनु नरक नारय।
स्वखु रूपु म्वख हाव हे चिद्घनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
सत् रूपु ज़ान सत छम मलिन प्रकृत, संताप ॲग्नस ग्यव ज़न बु आहुवत।

कष्ट गाल संतुष्ट बन ज़नारदनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
खो गया दिन दिन सो गया लडकपन, आगया योवन पीडा उत्पन्न।
तेरा अनुग्रेह मेरा विनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
आसुरी प्रकृत निर्मल करतम, श्वद प्रकॅृच़ किन्य गोविंदु वरतम।
कर अभेद पानस सुत्य पूर्णय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
सारिनुय आत्मा पर प्रेमास्पद, सर्व आत्मा चॉन्य बख्ती स्वतः सेद्ध।
मूलस थफ छ़नु मूलु कॉरनय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।
सर्वात्मा चॉन्य एकात्म भक्ती, यस आसि तस भवु बंध निश मुख्ती।
'ठाकुर' बंदु भावु पेयि अर्च़णय, नारायण श्रीमद् नारायणय।।

✷

लीला 21

पूर्ण पुरुषस सुरासुर विन्दनस, परमानन्दय परमात्मस।
तस रोस क्या छ़ुम दप पान वंदस, परमानन्दस परमात्मस।।
कृष्णस ज़ग यस तुंद बलि वोनय, च़िनमय मंदिर द्वारिका तस।
सुदाम सालिग्राम सुय पूज़ि व्वंदस, परमानन्दस परमात्मस।।
द्वार द्वार पूज़ा म्वख अरविंदस, सर्गु अर्गु सुत्य ज़न अमृत रस।
पुष्पु कनि आकाश पृथ्वी गंधस, परमानन्दस परमात्मस।।
ह्यनु व्यनु गॉरिथ मन निस्पंदस, क्षनु क्षनु पनुन आर्च़र वनुहस।
लगहा नु बेयि बेयि अग्यानु द्वंद्वस, परमानन्दस परमात्मस।।
वर येम्य ज़ि निद्रा दिच़ मुचकंदस, कालयवनस सुय काल वनुनस।
पीतांम्बर सुत्य लॉगिथ फंदस, परमानन्दस परमात्मस।।
वनुनचि मे यछ़ एकादश स्कंदस, बोज़नस तवुकिस परमु अर्थस।
मनु रोज़ि नेशचल बेहि मसनंदस, परमानन्दस परमात्मस।।

ज़िन्दगी छ्यफ दिथ रूज़ दिह जंदस, स्पर्शु रोस वोत तस अपरस।
वाठ छुय तसुंदुय प्रथ पैवन्दस, परमानन्दस परमात्मस।।० ।।
स्वर येमि द्युतमुत छुम प्रथ बंदस, ग्वरु प्रणवुय द्यान करि त्रानतस।
ब्रह्मा रेश्य तु यस गायत्री छंदस, परमानन्दस परमात्मस।।
'परमानन्द' मेलि परमु आनन्दस, महिमा मेलनुक बनि मावस।
पानुवन्य यिथुपॉठ्य रव छय इंदस, परमानन्दस परमात्मस।।

✵

लीला 22

दितम दर्शुन मे वर्शन तलु।
बेमारु बलु बु बेमार बलु।।

रावुन रोव नु रावण तल, बु वन्दय कलु तु हावतम रोय।
गुपिथ गंगा बरतु नेर्मलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।
वज़ान शिवहू छु शंखु केय बलु, प्रज़ान छुम नार शशिकलि रेह।
रोटुम छ्लु अँश्कि ब्रह्माण्डतलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।
पोरुम ओमकार सोऽहं तलु, कडॅम पानस सोय कल मे।
हरन दोप पानु ब्रोंठकुन वलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।
अच़ान ओसुस बु बीमस तलु, यछ़ान ओसुस गोछुम यी मे।
तरुन तारु सोथि ईश्वर ज़लु, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।
गशुन त्रोवुम म्य संसार तलु, मशान आम सोर गंजरुम मे।
दोशान छुम कीवलु सुन्द फल, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।
वनान 'लसु शाह' वोवुम यी फलु, ग्यवुम रातस द्वहस यी मे।
च़ोलुम वसवास म्य ऑईन तलु, बेमारु बलु बु बेमार बलु।।

लीला 23

श्यामु स्वंदर जी लालु बना।
खेलि बना राधायि सुत्य।।

वेलु यिथ कोनु खेलुनि नेरव, नन्दलालस मेलुनि नेरव।
यि छु कीवल प्रयोज़ना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
श्यामु सौन्दरस तस कामदीवस, राम, चन्द्रस श्री कृष्ण दीवस।
असि छय गामॅच़ तस अर्पना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द, ज़ीवन सुति खेलुन तसुन्द।
पानु बॅनिथ बिन्दराबना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
प्रेयमु आनन्दु वीना वायन, तॅथ्य मंज़ नाद थॅदि थॅदि लायन।
गछ़ि स्वफल मनु कामना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
द्राव पालुनि वादन सान्यन, फियुर दिनि कर्म फलन प्रान्यन।
पालुवुनि कॅर सॉन्य पालुना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
आयि जमुनायि जल तन नॉविथ, प्रोन मॅशरॉविथ नौव प्रॉविथ।
शूबवुन्य भूषण वर्दना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
असि छय आमॅचु असंख्य स्त्रिये, तृप्त आनन्द अमृत गये।
त्रेयि ग्वनु कॅरुख प्रार्थना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
वौसि यिथ कोनु विसव अॅसी, यिथि रासु कोनु असव अॅसी।
गेलि कुस मेलि नारायणा, खेलि बना राधायि सुत्य।।
ज्ञान गव अथि लगुन नु यमस, गॅयि प्रॉविथ परम ब्रह्मस।
मोक्षु पद बख्ती कारना, खेलि बना राधायि सुत्य।।

पोशि कुल्यन मंज़ दीव चा़ये, लॉगिथ बंबूर रूदिय छ़ाये।
च़रणु कमलन वरिना सना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
ऑस्य दीवता तति दर्शनस, पोशि वर्शनस हर्शनस।
पोश वर्शन ति अवय छिना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय, पॅतिमि ज़न्मुक चो़लुख होलुय।
बोरुख लोलुय खवश गोख मना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
पनुनि शब्दु चु छनु थालुज जान, छस बवुसरु बु चे़य रोस वज़ान।
यि छु ज़डम्वोड़ गुह्युल वना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
हृदयस मंज़ ह्यथ भगवत् च़रन, ऑस्य तथ निथ सीवा करन।
ब्रह्मस सुत्यी रूदुख नु ब्यना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
सनकादिक नारद मुन्नी, व्यास शुकदेव यी करुवनी।
राधा कृष्णन कीर्तना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
लूकु वनु वन क्या करि तिमन, ऑसि ब्रह्म ज्ञान गन्योमुत यिमन।
कथु ज़ि करनुच़ छख कल्पना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
रामु अमृत रस गछ़ि चोनुय, बख्ती रस यॅमि नु चव रूद छोनुय।
रूद छोनुय ज़न्मनि ज़न्मना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
रस उपदन कर सत बख्ती, गोपियव बख्तीवत प्रॉव म्वख्ती।
म्वख्ती छनु बख्ती बिना, खेलि बना राधायि सुत्य।।
द्रायि न्यरमल थॉविथ वोदंस, गॅयि प्रॉविथ 'परमानन्दस'।
कॅरख कीशव आरादना, खेलि बना राधायि सुत्य।।

*

लीला 24

चॊयशीथ लछ ज़न्म दॉरिथ।
चिन्तामन देह अथि आव।।

दीवन किन्नरन गंदरवन,
अविनॉशी पान् शम्भू,
आगरो चय कव् लॊगखो,

दुर्लब रटुन यहोय देह आव,
यमि शाये अथि आव।
हा घर्चे छ़ाये।।०।।

अश्वत्थ नॊव कुल नाश् रॊस,
मूल ह्वॊर कुन लंजि बॊनकुन,
युसुय तथ ज़ानि वीद तॅमिय ज़ोन,
आगरो चॆय कव् लोगखो,

वॊन ज़नार्दनि धर्नुधरसुय,
पत्र वीद तथ कुलिसय।
पॉर्यज़ान तस शिवसुय।।
हा गर्चे छ़ाये।।०।।

अमृत फल सुय कुल छु दिवान,
हठ् यूगियन कर्म कॉन्डियन,
रॆयि पकुन तोत् संज़ वुफ,
आगरो चॆय कव् लोगखो,

राज़ यूगियन ति ह्वोतये,
द्वलर्ब वातुन तॊतये।
खॅज़ुर कुलिसुय इथिये।।
हा गर्चे छ़ाये।।०।।

भ्रम काया माया छय,
ब्रम त्रॉविथ रोज़ ब्रह्मय,
सत्-चित आनन्द अद्वैतय,
आगरो चॆय कव् लोगखो,

पॊज़ पॊज़ टाठि बोज़,
सर् खर, करत् अॅज़्य दॊह।
रोज़ि रोज़ बोज़।।
हा गर्चे छ़ाये।।०।।

नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन, युथुय ओसुख त्युथुय आस,
युसुय अन्तर सुय बाहिर, युसुय स्वॉमी सुय दास।
पॉन्य पान अरूप दय, साद वुन्यु यूगु अब्यास।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

आत्म सॉक्षी टाठि ज़ानतो, शरीर आव क्षण क्षण बंग,
संसारु किस दुखु रूपस, यूगु लयि चुय असंग।
भूर भुवः स्वः चेय निश द्राव, छुख चु सॉक्षी चेय न रंग।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

ज़ीव येलि गछ़ि ईश्वरस लीन, सुय ज़ीव अदु ईश्वर,
विश्व रूपस सुय बर्ता, सुय हर्ता गव हर।
अविनॉशी तस नावुय, अद्धय आनन्द सरु कर।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

हर गरि तय बु कुसू छुस, सुय मरि घरु परि युस,
सुय बु निर्मल आत्मा ज़ान, मरि मोर ज़ुव अमर गव।
पॉन्य पानय तति सुय गरि, वनतु ब्याख अदु रोज़ि कुस।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

दिवुसरै मंज़गामि गोम, गुपिथ वनान रुवये,
बु नबा सुय युस बु वनान, मटन अंदर दिवये।
त्रेयन बवनन चूरिम दीवी, पुंच़िम मोच़ पतु शिवये।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

आँतु रोस्त्यॆन यूनियन हव,
छ़यपि छ़ॆयपरे गिंदु लो,
ग्वॅर श़ेछय हर गरि बोज,
भूर भुवः स्वः छंड लो।
यॆमि यूनिये वुछतः ऋशो,
जुतु लाला गव लो।।
आगरो च़ॆय कवु लोगखो,
हा गरुचे छ़ाये।।०।।

रंगु लरि छुम रंगु रॊस दय,
प्रथ वानु सुय रंगरुय,
नाना रंग दारन सुय,
ना रंगु तस नु गुथरुय।
ज़ानी कुस तस नॆराकारस,
सांरगी यस छि नेत्रुय।।
आगरो च़ॆय कवु लोगखो,
हा गरुचे छ़ाये।।०।।

चॆनतुमनयू चिन्ताय मन त्राव,
चि़न्तामन चि़त रूप प्राव,
खसुवने वसुवने द्रायि गंगा,
हंसु द्वारै पूर्य त्राय।
ज़ानतु हरमुखु द्रायि गंगा,
च़य दिवये तन नाव।।
आगरो च़ॆय कवु लोगखो,
हा गरुचे छ़ाये।।०।।

शब्दु ब्रह्मस गछ़त लये,
सुय पुय कासि मनि खय,
खय त्राविय मन चि़त गव,
चुनतन प्रथ शायि दय।
दय टोठयोम ऋशि पुत्रो,
तस तु म्य द्वय रूज़ नय।।
आगरो च़ॆय कवु लोगखो,
हा गरुचे छ़ाये।।०।।

दय नॊनुय ठॊर पनुनुय,
मरनुक रस तिथु च़्यय,
मॅरिथ परमु ज़ान दय छु दिवान,
मरि मॊर ज़ुव अमर गव।
राम लंकायि रूद सन्म्वख,
साक्षात दर्शुन हव।।
आगरो च़ॆय कवु लोगखो,
हा गरुचे छ़ाये।।०।।

वीद शास्त्र पर्य पर्य छिय, पॅरिमित्य ज़ॅर्‌य गछ़ान,
अपरिस निशु नेरान छिय, च़ोर वीद ब्ययि पुराण।
अज़ानतो शब्दु ब्रह्मय, परमु पद दयि वथ मान।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

सहज विचार सहज पाठ यस, सुय ज़ानि सहजानन्द,
भूतु विचार भ्रम जानतो, विशय रस मूर्खानन्द।
मूर्खु भावय निश्चय कर, श्वद नेरि सत चित्त आनन्द।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

निश्चल नित सहजानन्द, कुल अकुल गछ़ि नाशस,
बाशि रुस्तुय अविनाशी दय, निशि ज़ान वुछ़तु गाशस।
बोज़ि सुय बाश राज़ु यूगी, च़ेनवन स्व प्रकाशस।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

कामु क्रूधु लोबु मोहु स्यन्दुय, गुति खोतु छुय गुतलुय,
यिरु सॉरिय ज़ीव दॉरो, अमि गुति कुस छु मोकलुय।
वस्तु विच़ार क्षमा संतोश, यस छु तस तार सरलय।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

लछिनोव दय नाना रूप, द्राव जगंम तु थावरुय,
रूप ना तस ना नावुय, परम आत्मा सु अपरुय।
तत्त्व प्रकाश साक्षात्कार, अंदर न्यबरय अॅछयरुय।।
आगरो च़ेय कवु लोगखो, हा गरुचे छ़ाये।।०।।

लीला 25

हे दयावानु मे ह्यव चोर च़े कोताह प्रारे।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे दारे दारे।।

फाकु दिय दिय गयि वाँसा येति क्याह हॉसिल आव,

चॉरिरस म्यॉनिस व्वन्य टोठ, मनस यियि आराम।

च़ितु शांती व्रत धारे नित्त द्वर्गत हारे।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे धारे धारे।।०।।

छिनु ठीकान पॅक्य पॅक्य कुनि अनेकन भवनन,

च़ंचल कर्यमुत्य अॅस्य कुत्य येमि आवागमनन।

कर्मु फल सुत्य ह्यथ बारे यथ ग्रटु अनवारे।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे धारे धारे।।०।।

रंग रंग डलनुक सामानु समय ह्यथ यिथ प्यव,

चेय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव।

हे दयावानु दया चॉनी म्य केंछ़ाह यारे।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे धारे धारे।।०।।

कुत्य बदकार, दुराचार, परम्पार कॅरिथ,

कूत्य बदबक्त ग्वनाहगार ब यकबार वॅरिथ।

कम गछ़िय क्याह च़ेय मेय तेय चॉन्य दया बोठ खारे।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे धारे धारे।।०।।

मंदछा छय ना कोर वॉसि म्य चाने चाने,

ज़ेवि किन्य कोर वनुना नतु महिमा कुस ज़ाने।

सुय वनुनुय भङ्गुसर तारि अद कस कर तारे।।

असुवनि म्वखु वसुवुन ओ़श छुम मे धारे धारे।।०।।

काल दिचु डालु फिरव मालु करव रुत्य रुत्य कार,
सुबह येलि फोलु तु पगाह आलछिकुय रोट दरबार।
गॉयि वांसा गंजरान द्येन असि वारे वारे।।
असुवनि म्वखु वसुवुन ओशा छुम मे धारे धारे।।०।।

चानि रायि कोर म्यॅ यि केंछ़ाह ती थव मन्ज़ूरय,
नतु कुस ज़ानि करुन्य भख्ती क्रेया गछ़ि पूरय।
काम क्रोदस लोभु मोहस मद सुय कुस मारे।।
असुवनि म्वखु वसुवुन ओशा छुम मे धारे धारे।।०।।

मृत विज़ि ध्यान थवख प्रान सु मेयॅ सदांरे,
वारु 'कृष्णस' निर्मल करि भवु सागर तारे।
पदम पत्रक्य पॉठ्य सरु मंज़ ज़ल तस कॅति लारे।।
असुवनि म्वखु वसुवुन ओशा छुम मे धारे धारे।।०।।

✷

लीला 26

म्वकलाव मंज़ कॉदखानय।
हा दयावानय व्वलो।।

वूनमुत मे छुम ज़ाला,	म्वकुलावि चोन अनुग्रह।
छुम ज़लॅर्य ह्युव निशानय,	हा दयावानय व्वलो।।
न्यथु नॅन्य संदि सायेबानय,	छुस बु तापु तचि़ वुडर मंज़।
त्राव रूदा आस्मानय,	हा दया वानय व्वलो।।
मंगुवुन छुस छुम नु बानय,	बडि दयि करतम दया।
बानु लदतम मानु सानय,	हा दयावानय व्वलो।।

प्रथ सौदा छु वानु वानय, गछ़ि आसुन चोन भाव।
अदु मेलि पूर परमानय, हा दयावानय व्वलो।।
छुम स्यठाह बॊड कारखानय, अंद वाति चानि प्रॆयमु सुत्य।
सुत्य दीव सत्य नारायनय, हा दयावानय व्वलो।।
हिय बु लागय दानु दानय, द्रय च़े छय राधायि हुंज़।
यी मंगय ती दिम चु पानय, हा दयावानय व्वलो।।
सोम्बरिथ छुम सामानय, वति लागुन च़ेय तगिय।
अदु प्रावु आश्चर्य थानय, हा दयावानय व्वलो।।
छुख कुनिय रूपु भगवानय, द्वैतय छुम मॆ बासान।
त्रिबवुन सुत्य अग्यानय, हा दयावानय व्वलो।।
द्वारिका ज़न प्रथ मकानय, वुछ बनोवुथ कृष्णु च़ेय।
यि छु चोन, सोन छुय बहानय, हा दयावानय व्वलो।।

✸

यॅच़ काल वोतुम प्रारान प्रारान न्यबर बरस तल।
व्यनथ करान थारान थारान त्वं देव दीन वत्सल।।

थॊकुस बु जन्म गारान गारान, व्वन्य मुच़रावतमं बर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद, गोविंद गोविंद कर।।

✸ ✸ ✸

लीला 27

बंद कोरनस बु बाशे, ज़गतुचि वालु वाशे।
मोकलय चानि आशे, शिव नाथु अविनाशे।।

बावु सुत्यन यिमयो, हरम्वखु वॅन्य दिमयो।
मोह गटि हुंदि गाशे, शिव नाथु अविनाशे।।

कैलास कोह छ़ारथ, दारनायि ध्यान दॉरिथ।
सत चित आकाशे, शिव नाथु अविनाशे।।

ज़प शबनम दारे, पॅपि ब्योल तपु वारे।
कांह फोल गछ़िनु हाशे, शिव नाथु अविनाशे।।

शंभुनाथु सादय, आवाहनु नादय।
सानि बोज़ शुर्य भाषे, शिव नाथु अविनाशे।।

तार दिम मोह वावस, मायायि दॅरियावस।
कड द्रुख नावि पाशे, शिव नाथु अविनाशे।।

संसारक्य सरय बो, हरु नावु सुत्य तरय बो।
कास संकट विनाशे, शिवनाथु अविनाशे।।

'कृष्णस' आंप चॉनी, बख्शुस पाप प्रॉनी।
शापन कर चु नाशे, शिव नाथु अविनाशे।।

*

लीला 28

होश दिम लगयो पम्पोश पादन।
हा सादन हुंदि सादो हो।।

यूगियन हुंदि यूगु, प्रॉनियन हुंदि प्रान, ज्ञानियन हुन्दे ज्ञानो हो।
चानि प्रसादु सुत्य स्यद छि तप सादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

अच्युत चानि सुत्य च्यतु कुय चेनुन, नतु गछ़ि मेनुन क्रँजल्यन पोन्य।
प्रेयमु ज़ल छुय वुज़ान भावु नागुरादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

ब्रह्मन ज़न्मस यिथ छुम नु ब्रह्म स्मृच़, वुछ मु म्यॉनि राक्षस प्रकृच़ कुन।
चानि सुत्य भक्ति चॉन्य कॅर प्रह्लादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

पूर्न पुरुश छम चॉनी लादन, प्रणव पान वंदु होय च़्वन पादन।
नादु ब्यंदु कन थव सान्यन नादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

व्यच़ार नेत्रन ज़ान्य गाश अन छि अनय, हर हरम्वख च़ेय दिमहोय वॅन्य।
निष्कलु मनु निष्काम रामु रादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

अनुग्रेह चोन गछ़ि आसुन सादन, क्या छु पापन कमन ज़्यादन प्यठ।
दय छुख क्षय कर सान्यन अपरादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

छ़ॊपि मंज़य तस छ़ोचरा नेरिहे, अदु कति बनिहे ज़ेछर यूत।
याद हय पॆयिहेस वुनि छुस आदन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

'कृष्णय' चॉनि कपटनि तल नेरिहे, अदु कति पॉरिहे जामु नॅव्य नॅव्य।
पुशु कति पॆयिहेस होंज़न तु रादन, हा सादन हुंदि सादो हो।।

लीला 29

पाँछ़ दोह यावनुनि श्रावनुनि सूरी।
यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

मतु वुछ तु संसारुचि शोबायि कुन, मतु वुछतु देह सोनु लंकायि कुन।
वॅद्य वॅद्य गॅयि लॅद्य लॅद्य लूर्य लूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस, ज़ेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस।
येति प्यव सारिनुय पुशि पूर्य पूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

व्यवहारु बोज़ु सोस अनु दनु द्यार सोस, गाटुजार सोस ब्रह्म व्यच़ार रोस।
मूॅन्य हिव्य गॅयि हून्य ज़न वूर्य वूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

ज्ञानु वैरागुक बन अदिकॉरी, संकल्प विकल्प सॉरिय त्राव।
ममता पत थाव वथ युथ नु दूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

मोह ज़ालु मंज़ु नेरनुक उपाया कर, राज़ु हंसुन साया त्राव।
अमरनाथचय जानवर जूरी, यी भूल त्यागु कस्तूरीये।।

क्रेयायि खोत छुय श्वद वासनायि फल, पूज़ायि खोत प्रेमस तु मायि फल।
'कृष्णस' रायि चानि आयि मनज़ूरी, यी बूल त्यागु कस्तूरीये।।

लीला 30

कृष्णा छुख मंज़ हनि हनि लोलो।
व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।

सोज़य ब्रह्मु ज़न्मुक मज़िमयोर, पासा पेयिय यिख नतु छा मे ज़ोर।
व्यच़ार पुछि च़े सुत्य अनु लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
यूगकिस बामस प्यठ मे खारुनाव, दोह तारु मज़ु रूद्य मे मु प्रारुनाव।
म्वख हाव तन लाग तनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
रॉछ छिम च़े निशि वातनस, कुत्य ज़ोरु निमु कॅडिथ ह्यथ पानस सुत्य।
च़े रोस्स नतु क्याह मे बनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
कामु क्रोदु, लोब मोहुन शशपाल, ज़ेनुनि आव मे कस वनु हाल।
ज़ोरु निम यिम ओरकनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
शरणागत वत्सल छुय चेय नाव, धर्मस यथ नावस मु मंदछाव।
वीरु धर्मय चोन व्वन्य ननि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
भक्त वत्सल छुख बोड़ बलुवीर, म्वकुलॉविथ निम कॅरहस गीर।
ऑच़्र म्योन च़े कुस वनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
ॲछि लोसम च़े वुछ्य वुछ्य यिम, दर्शुन दिम सुत्य पानस निम।
युथ नु ज़ांह अथुवास छ्यनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
द्यानु जामुवन्तस कास मे हान, वासनायि जामवन्ती सान।
मनि मन नितु दाज कनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
म्यानि संसारु यशुकुय मॉज मोल, तृप्त कर ज़्यवराव मोकतुक ब्योल।
बख्ती कुलिनुय म्वखतु छनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।
तन स्वख मन स्वख भाव प्रावुनाव, स्वख म्वख 'कृष्णस' कृष्णु म्वख हाव।
अख सुखिया अख सु बनि लोलो, व्वन्य यितु मनि रुखमनि लोलो।।

लीला 31

हे दयि, बोज़ म्यॉन्य लोलु नाद, कूत गोमुत छुस बेदाद।
यिथि द्वखु मंज़ कर मे आज़ाद, दयालु बोज़ फरियाद।।

यि छु संसार ब्रम तु बॉज़्यगार, अंत ज़ोनुस नु कॉंसि ॲक्य।
ज़्यूठ सोदराह बे शुमार, तार ज़ोनुस नु कॉंसि अकॅय।
यथ नु अंत आसि तथ कॅति आदि, दयालु बोज़ फरियाद।।
मोह आवलुनि फाटुनोवनस, छ्रट छ्रट करुनोवनस,
गोस बाम्बरि थरु थरु छम, नरि ज़ंगु वायिनोवनस।
वांति लगनस दिम विवेक पाद, दयालु बोज़ फरियाद।।
दिह तु यॅंद्रिय छि परिणॉमी, मन छु यिहुंदुय स्वॉमी,
अथ मनस पतु पतु दोरुन, स्व छय ब्वज़ि हुज़ खॉमी।
संकल्पन हुंज़ छस उपाद, दयालु बोज़ फरियाद।।
चानि आशायि च़ेय कुन आस, छ्रट छ्रट संकट मे कास,
छुस चोन दास पेयिनय पास, हृदयस मंज़ कर मे वास।
ग्यानु अग्नु ज़ाल म्यान्य अपराद, दयालु बोज़ फरियाद।।
संकल्पन तु विकल्पन, सुत्य गव म्योन वर्तन,
विवेकु नॉम्य शिल वासन, चूरि नियहम हन हन।
होशु डालान छुम मे प्रमाद, दयालु बोज़ फरियाद।।
गोसु क्याह गोय क्याज़ि रूठहम, छायि छ्यप दिथ ब्यूठहम,
दूरि रूज़िथ लावि मूरे, नार ललवुन थोवथम।
दिम दर्शुन मन गछ़्यम शाद, दयालु बोज़ फरियाद।।

यस नेथ आसि सम च्यत मन, सुय ज़न गव सतज़न,
श्रुतियन मंज़ ती छि वखनन, यी छु वॊनमुत व्यासन।
सुय छु तप ज़प स्वय छय समाद, दयालु बोज़ फरियाद।।
आसि करुवुन अज़पा ज़प, दारनायि मंज़ त्रावि ड़ाफ,
अंत: किन्य दूर कॊरमुत, संसारुक संताप।
छुस नु शुमार छुस नु तेदाद, दयालु बोज़ फरियाद।।
हे दयालो, दिह त्यागु विज़ि, नेर संम्वख पानय,
वृथ म्यॉन्य पज़ि रज़ि सुत्य, थॉविज़्यन समादानय।
द्रुलब छुम पानु युन याद, दयालु बोज़ फरियाद।।
नॆर्वान पद दितु 'विषणस', चावतन विज्ञान रस,
रोज़ि अन्दकनि शुमारस, मनु कामनायि चलुनस।
हृदयस मंज़ रटि चॉन्य पाद, दयालु बोज़ फरियाद।।

✹

लीला 32

यितु दितु दर्शन भस्माधरय, प्रारय कोताह काल।
हे शम्भो, रक्षपाल स्वामी, हे शम्भो रक्षपाल।।
हरु दितु दर्शुन मरु मरु कास्तम, आस्तम नॉली नाल,
लोलुचि बबरे तर छुम द्रामुत, गोमुत छुम यॆच़ काल।
द्यायि ज़लु अथ बबरे सग दिथ, पननुय अथु च़ुय डाल।।
हे शम्भो रक्षपाल।।०।।
मॊह सॆंदि उदरस मंज़ छुस यिरय, यॆति छुम नु सुम नॆय तार,
तलु छुम ज़लकुय नीजर हावान, प्यठु कनि छुम गटु कार।
नरि छम हजि तॉय ज़ंगु छम बॆसॊर, किथु पॉठ्य मारय छ़ाल।।
हे शम्भो रक्षपाल।।०।।

फुचमच़ि ख्वपरॆ मंज़ छुस प्योमुत, प्यठ छुम कर्मुक ताव,
अँदरी अँदरी ग्रख छम आमुच़, बतु लॊजि हुंद छुम छाव।
शॆहलनु खॉतरु प्यठु कनि छखतम अख अमृत ज़लु च़ाल।।
हे शम्भो रक्षपाल।।०।।
ईश्वर, म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार,
च़ुय छुख अनिनय अनि गटु कासान, च़ुय छुख बख्शनहार।
यॆमि किन्य सॉरिय छिय च़ॆ वखुनान दीनन हुंद दयाल।।
हे शम्भो रक्षपाल।।०।।

✷

लीला 33

हे दय, बोज़ कनय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।
करयो अर्च़नय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।
संसार आवलुनुय यि छु सनि खोतु सॊनुय।
अथ मंज़ आस ह्यनुय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।
चोवनस मोह मसय रूदुम नु दानु ह्यसु।
उन्मंत गोस तनय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।
हरुम मॆ कष्ट हन हन हरि हर छुख थवुम कन।
ऑर्च़र आलवनय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।
सूक्ष्म नॆर्मल करुम वृथ, प्रत्यक्ष पॉठ्य बु वुछहथ।
सुत्य ज्ञानु लोचनय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।
च़्यतस सॊय कल करुम पूर अज्ञानु गछ़यम दूर।
हे टाठि नॆरंजनय, च़ॆय रॊस्त कस बु वनय।।

पादन तल ब़ मरय चॉन्य त्वता करय।
वाऱ वाऱ आर अनय, च़ेय रोस्त कस ब़ वनय।।
वासनायव नाल़ रोटहस संकल्पव ब़ च़ोटहस।
कोडहोस पऩ पनय, च़ेय रोस्त कस ब़ वनय।
दितम सत् संग मे हरदम यियेम शाँती त़ शम दम।
बॅनिथ आज़ाद बनय, च़ेय रोस्त कस ब़ वनय।।
'विष्ण़' थावतन समादान, च़ल्यम द्वयेव़ दिह अबिमान।
मंगन छुय क्षऩ क्षनय, च़ेय रोस्त कस ब़ वनय।।

✹

लीला 34

यिमय पत़ दिमय नाद।
क्यथो याद मे प्योहम।।

च़ुय छुख ज़प़ यग्युक ज़प, च़ुय छुख तप वनुक तप।
च़ुय छुख सादन हुंद साद, क्यथो याद मे प्योहम।।
च़ुय छुख यूगियन हुंद यूग, च़ुय छुख प्रॉनियन हुंद प्रान।
च़ुय छुख सतक़ुय संवाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
च़ुय छुख ड्यक़, च़ुय छुख टिक़, च़ुय छुख दूर, च़ुय नज़दीक।
च़ुय छुख सारिऩय हुंद आदि, क्यथो याद मे प्योहम।।
च़ुय छुख द्वख च़ुय छुख स्वख, च़ुय छुख परम़ आनन्द म्वख।
च़ुय छुख कम च़ुय छुख ज़्याद़, क्यथो याद मे प्योहम।।
च़ुय छुख सादन हुंद संग, चाने तनि सफेद रंग।
पम्पोश हिव्य छि चॉनी पाद, क्यथो याद मे प्योहम।।

वीदन मंज़ छुख साम वीद, दीवन मंज़ इन्द्रा ज़न।
दैतन मंज़ छुख प्रह्लाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
रजो ग्वन छुख ब्रह्मा, सत्व ग्वन विष्णु भगवान।
तमोग्वन गालान व्याद, क्यथो याद मे प्योहम।।
धर्मुचि लरि कर्मुकि बर, चाने सुत्य अचुन छुम।
चुय छुख कुन तु चुय बुनियाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
येम्य युस ज़ोन सुय तम्य मोन, चुय छुख म्योन कर्मुलोन।
वनय चेय बु लानिन्य वाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
लोलुक्य साज़ प्रेमुक्य बंग, वायय सोज़ दमा बोज़।
यितम योर ह्यतम दाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
'कृष्णु' दारनावुन द्यान, सुय युथ द्यान छु ब्रह्मु ज्ञान।
ह्यथ शिवराग दितु समाद, क्यथो याद मे प्योहम।।
संकल्प त्रावि रटि मन प्रान, वासना गालि दियि समाद।
चानि दयायि प्रावि बिंदु नाद, क्यथो याद मे प्योहम।।

*

लीला 35

अंत कालुचि ज़ालु छम तमि हालु निश रछतम दये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।
भवसागरु दिवयि रंगस आयि कुत्य कुत्या गये,
पार तारुम बोठ मे खारुम द्रख नेवारुम मंज़ भये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।
आस्तम ख्वश कास्तम द्रख बास्तम संम्वख दये,
मन मे छुम आईनु सूरत साफ कोरमुत छुम खये।

दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

कितु पॉठ्य ज़िंदुय मरव व्वन्य क्या करव वांसा गये,
मायि रॅट्य पनुन्यव गरव बस, नाव मंज़ शाँती शये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

वश छि गॉमुत्य संसारस यश कडनस ख्वश छिये,
ओरु योर अनतु ज़ोरु म्योनुय मनु चु मंज़ नैर्नय नये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

द्युन शरीरस वाँसि हुंद आराम वुन्यक्यन क्याह लये,
यथ दपन ब्रमा छु तथ थानस मे निम सत् ग्वरु पये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

नि चऱ म्यॉन्यर म्योन लागुन्य क्वसु अथ लागथ छये,
पत म्वचऱक सोरुय चु पानय अथि कालस क्या यिये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

शून्यकिस शून्यस वनय क्या तत सोरुन कांह क्या ह्यये,
कर तु नैर्वासन चु दासन मोक्ष मस प्रथ कांह चेये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

चऱलुनावख ज़ीवतुक्य छ्रट युथ नु यिछ़ मूर्च्छा पेये,
फोलुनावख यस च्यथ सुय भक्ति बागस फल खेयि।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

श्वेत दीपक्य हिव्य मनुशय कर पालवुनि काल क्षये,
मोक्ष अमृत प्यालु चाव अज्ञानु रोस्त नेरामये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

गछ़ शरण 'कृष्णस' करिय अंत:करण लय मंज़ प्रये,
लूक डेंशन दय सॊरन आलव करन जितेन्द्रिये।
दिम अभय वर छम यमुन्य थर कर दया मृत्युञ्जये।।

✸

लीला 36

हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान।
अमर पान कवु मशन छुय।।

कालुनि च़ंजे देह यॆलि प्यवान सु कुस सना युस मॅरिथ गव,
वॊथान बेहान भूगन बूगान, सुय यॆलि गछ़ान देह अदु प्यव।
देहस च़ॆ क्या हिशर छुयो ज़ुव ज़ान ईश्वरु अंश दो।।
हशाम ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

ज़ुव ज़ानवुनी छियि ज्ञानु वानुय नतव यिम मूढ़ु भावस गॅय,
नाना यूनियन देह आदिकन कुंबीपाक नर्कन बॆयि।
पुण्य पापु कर्मु शापन वॅलिमुत्य ज़न्म-मरन रूगन क्षय।।
हशाम ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

ईश्वरु अंश ॲग्नु त्यंबुर, अग्यानु काठस संदुर्यजे,
काठस ह्यथ सॊय अग्न त्यंबुर ईश्वरु अंश सांपनिज़े।
यि दय दनु, तस यस ग्वरु कृपा भ्रम यि संसार गंज़ुर्यज़े।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

ग्वड् छुख वेश्य भूगन भ्रमन पतव विफल नेरन द्वख,
कालुनि सुंदे तिमय तरन सिद्ध यस ग्वर् चरन परम स्वख।
महा चंचल मन लय करन स्वरान सु देव अंतर्मुख।।
हशा ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

संसार यशस वश गछ़ि बूतय, थ्यकन दीहक्य डबर दो,
छम लरि् छुम राज्य, छुम नाव, गोत्र, छिम बंद बांदव मित्र दोस्त।
थरि पोश बर् ज़न गॅयि कालु छ़टि वॅर्य दयि तिम यिम अमर दो।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

सतुक यश सुय यॅंद्रिय रॅटिथ सोरान सु देव आत्म शिव,
त्वतान नेत्य तस दीवता सॉरिय प्यथर सतु रेशॅय चंद्रम रव।
अनेक अश्वमेद नरमेद कॅर्य तम्यॅ त्र्यन भवनन हुंद स्वॉमी गव।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

पतव कॉल्य देह येलि पेवन खोच़न तिम टाठॅय रॅछिमुत्य यिम,
च़िताये हुंदुय यत्न करन यॉन्य दज़ि मोर् गर् गछ़न तिम।
पतव तस सुत्य कुस छुय पकन कस यमु किंकर पच़न दो।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

तवय अमृत कथा वनय मरनु ब्रोंठुय हा मॅर्यज़े,
मरनय मरुन गव दय सोरुन यूग लयि सुय दय सोर्यज़े।
सहज़ अमृत च़े गलि गले यम बयि भवुसर् तॅर्यज़े।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

युथ नो यि कथ वॊन्य कॅन्य पॅत्य गछ़िय तु गछ़ख गटे मंज़,
युथनो यि वथ पॅकुन्य मशिय, कठकशि लगख छ़टे मंज़।
यि कथ यि वथ पालनु प्रावख दय गरि मेलिय व्वटे मंज़।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

यिमव यथ कथि यछ़ पछ़ बरुख सत्संगु नावे तॅरिथ गॅय,
यॆमि बवुसरय स्वरूप विमुख तिमय अकालु मरिथ गॅय।
देहुचि छ़ाये लॅगि मोह माये पतव पानस फॅरिथ गॅय।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

हरन तिमय सॊरुख नु ईश्वर, गरूक ब्रम गोख असुर गॅय,
यिमॅ गयि शरन तिम वॅर्य हरन, यमु त्रासु कठिने उद्धार गॅय।
गर बार वर्ज़िथ अंदय रूज़िथ कॉलुनि सॆंदे अमर गयॆ।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

कालुनि च़ंजे गछ़ान खंजे स्वंदर तु गंदर गछ़ान दो,
अन्न पान च़े कियुथ रोचान छुयो च़े क्यथ मन अदु पछ़ान दो।
कालस हारि बयस तारि चु कोनु दयस सॊरान दो।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

कालुन दुर्बय सु क्युथ सना, ज़न्म कष्टय सु क्या गव,
ईश्वर अनुग्रह यस बाग्य ज़नस तति छुय पानय उदय शिव।
ज़न्म कस सनु सुफल गछ़े त्युथ कॅमि सना युथ अमृत चव।।
हशान ज़ीवो देह दॊह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

यिमन भाग्य उदय करान स्वॉमी सोरान व्वन्दे मंज़,
आकाशु पातालु तॅरिथ गछ़ान क्रीड़ा करान कंदे मंज़।
संगरमालन शीनु यिथ ज़ल द्राव ज़लय बिंदु सॅंदे मंज़।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

यिम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम हनि हने मंज़,
यस लोल ईश्वरु सुंद ग्वन मने तस कोनु तिम अदु वने छिय।
युस यी वने सुय तिय बने यिम सॉमनित सॅन्य व्वगने छिय।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

मधुर वेह छुय मनुक वेश्य हा मित्र रूपी शथुर ज़ान,
युथ नो फसख लसख नु अदु मन लय कर दीव सोरुन ज़ान।
वेह गलि दॅह येलि शुत्र गलन नेथ यूग अमृत चोनुय ज़ान।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

यन्द्रेय अति विषय महावीरुय मन राज़ु महावीरन दो,
अख वीर दह सास वीर करि यिरय ब्योन ब्योन बल छुख त्युथुय दो।
ॲकिसुय कामे सॉरिय छि लारन क्या तति उपाय ज़ीवन दो।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

कुस सनु यिथेन वीरन मारे मन वीरु राज़स रटे कांह,
बेयिस कांसे बख्ती आसे, सु ज़न योदवय टोठे कांह।
वुज़मलि सुय र[illegible]ट आकाश च़टे रवस रटे कांह।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

नाथो बु नो रानिम मंगय मे रावनुन राज्य करे क्या,
यि कैंह दीहस प्रारब्द आसे तथ मंज़ हरे तु हुरे क्या।
ओसुम दुर्लब बन्योम सुलब स्वराज्य लोबुम व्वंदे मंज़।।
हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान, अमर पान कवु मशन छुय।।०।।

✹

लीला 37

श्यामु स्वन्दर बेह स्वन्दर जाये।
वथुरय मन मथुराये लोलो।।

प्रान पवनु सुत्यन मुचरनु आये, नव द्वार देह द्वारिकाये लोलो।
वॅच़ गूपियि च़ेय वुछने द्राये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

बालु रठ नालुमति सुत्य पालनाये, सानि भक्ति हुंज़ि क्वबुज़ाये लोलो।
निष्काम सिद्ध कर मनु कामनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

टोठ्योख गजेंद्रस कथ विद्याये, आहिरस कथ श्रद्धाये लोलो।
कमि श्रोच़ि ख्वश सॉपनुक शिबराये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

कीवल भक्ति हुंद कर मे उपाये, सुत्य पनुनि प्रेयमु तु माये लोलो।
वासुदेव वास कर मंज़ वासनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

राजु द्वारस चॉनिस बेख्याये, आदीन कर्मुहीन आये लोलो।
चारु कर मे आरुकॅच़ि सुशीलाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

सुदाम ज़ॉनिथ कर मे उपाये, व्वलुमुत छुस ज़िष्टाये लोलो।
छ़ोचरुय म्योन पूर सुत्य पूर्नाय, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

बानु रोस द्रामुत छुस बेख्याये, वूँचमुत दैव संपदाये लोलो।
बिक्षुकस त्राव राज़ु हंसुन साये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

फलु दायक चानि खलु किन्य आये, अनुग्रह तोल पूरि त्राये लोलो।
वोवमुत कॅंह ति छुम नु कर्मु बूमिकॉये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

शोज़राव संकट तु ग्रह दशाये, उल्ट समयस प्यठ ज़ाये लोलो।
फिरुथुर कर चु सानि कर्मु लीखाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

भावु मुचुकन्द म्योन पनुनि यछ़ाये, साव मंज़ु मोह निद्राये लोलो।
वुज़नाव मंज़ स्मृच़ ग्वफाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

पानस पतु दोरनाव म्यानि राये, सिरियि रूपु ज़न पोत छ़ाये लोलो।
ज़ाल मदु कालयवनस कायाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

मारकॉण्डी ज़न चानि आशाये, आयस मंगने च़े आये लोलो।
कालस ग्रास कर बास जायि जाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

आत्मा रामु निवृॅच़ हुंज़ि राये, सुत्य पख शांत सीताये लोलो।
दण्ड कर प्रवृच़ श्रुपनखाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

गाल मोह रावनस तु क्रूद सेनाये, ज़ाल लूबचि लंकाये लोलो।
विवेक मनु लक्ष्यमनुनि बाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

सत् ग्वन प्रकृच़ कवशलाये, म्वख हाव सुत्य दयाये लोलो।
राज कर आनन्द अजोध्याये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

ज्ञानु ताज दितु ध्यानु दारनाये, सुत्य स्वतंत्रताये लोलो।
च़्यतु तख्तस बेह ह्यथ समताये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

होशयार रोज़ मंज़ योगु नेंद्राये, ह्यथ समदृष्ट एकताये लोलो।
तुर्या रूप मंज़ राजु सबाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

अज़ तान्य कुत्याह गॅयि कुत्य आये, वतुगत यथ यात्राये लोलो।
एक कुस वोत चानि अनेकताये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

वीरु कॅर्य यिरु चानि विष्णु मायाये, बडि दय बेपरवाये लोलो।
यिम तॅर्य तु तिम तॅर्य चानि कृपाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

मॅति तार बवुसरु आवलुनि जाये, सुत्य विवेक उपाये लोलो।
युथ दिह डंगु सोहम हम वाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

केशव नाव ज़पनाव भावनाये, अज़पा ज़प मालाये लोलो।
मन नाव आत्म तीर्थचि जमुनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

राम च़न्द्र शिव लगहोय एकताये, हॉविथ च़न्द्र कलाये लोलो।
मोह गटु कास म्यानि बोज़ मीनाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

सावदान मन कर यॅज़मन बाये, य्वसु द्रायि मंज़ प्रज़ाये लोलो।
वर तस व्वन्य वॉनी कन्याये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्मु लीखाये, सुत्य नाना वर्णाये लोलो।
शक्तिपात दृष्ट थव प्यठ नॆष्ठाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

कर्णेश्वर्यन हुंज़ गूर्य बाये, रास खेलुनि ननि द्राये लोलो।
थफ कर क्रशनुनि रागु राधाये, वथुरय मन मथुराये लोलो।।

✸

लीला 38

चित्त गोम शांत चोन प्रेयमु अमृत चोम।
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

यॆमि संसारु मंज़ पतु लार्यम क्या, दय नाव स्वरनु रॊस्त थावुम मु ज़ांह।
चानि भक्ति भावु खॊतु कांह परम स्वख छा, पतु बनु बिक्षुका ह्युव बादशाह।
ब्रोंठ्य मॆ ह्यसु फिर, गरि कुय ब्रम गोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

मनु वाजि् नारायण नाव खनतम, संकटु गटि मंज़ अनतम गाश।
रायि मंज़ गनतम, मोक्ष पद वनतम, प्रकट बनतम परम आत्मा।
कॅन्य हिश ब्वद छ्म थॅन्य ज़न करतु मोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

न ज़ांह ज़्यवहा न ज़ांह मर् हा, नारायण नारायण करहा न्यथ।
चानि नाव् सुत्य भव सागरस तरहा, ध्यान चोन स्वर्हा थव मे स्मृत।
होश दिम व्यवहार राग द्वीश यिथ प्योम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

हकरे बनि मंज़ अनगगुराह च़ाव, ह्यथ क्या च़ाव तोर् ख्यथ क्या द्राव।
कायायि म्यानि मंज़ छु आश्चर्यवत वाव, रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव।
न्यरलीफ द्रास पत् क्या ख्योम क्या चोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

योर अथ् वॅहरिथ तोर् आख वॅटिथ्य, कौलि मंज़ फॅटिथय छुय हौख पान।
क्या लारि दन सौम्बुरिथ पान च़ॅटिथ्य, धर्म व्यवहार कर खॅटिथ्य पॉठ्य।
ज़न्मस यिथ कर्नाव दर्मुच कॉम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

बॅड्य बॅड्य कार कॅर्य कॅर्य क्या प्रोव, थ्यकुनोवुम छुम बौड खानदान।
यश् पुछि मान् पुछि दौह रावरोवुम, लूकन होवुम दिह अभिमान।
ह्यस् फिर मे मोह मस च्यथ पान व्यसुरयोम, ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

मृत् विज़ि अज़ामल गंज़रावतम, मॅशरावतम ज़न्मुक्य करतूत।
यम् कैंकर बुथि मत् बुछनावतम, नारायण नाव पावुनावतम याद।

युथ छु त्युथ चेत् 'कृष्ण्' प्रेयम् द्वद ओम ज़ोम,
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण ओम्।।

✵

लीला 39

करसय सॅन्य पोशन मालु।
अज़ यियि लालु सोनये।।

मयखानुके हा कलुवालु, असि मोय ह्योत चौनुये।
प्यालु तु प्यालु माला माल, अज़ यियि लालु सोनये।।
तसुंदुय मोय तु तसुंदुय प्यालु, तसुंदे वानु कॅनुनय आव।
खुँबुचि कुंज़ तस हवालु, अज़ यियि लालु सोनये।।
दूरॅर ति लॊब कोताह ज़ालु, मूरे नार छुम ललुवोन।
शुर्य पान कहि संभाल, अज़ यियि लालु सोनये।।
यॆमि लायि लोलु स्वदुरस छ़ाल, तमि खोर लालि दुरखशान।
सुय रुद आद्य अंत बहाल, अज़ यियि लालु सोनये।।
तेजोमय युस नूरानु, विज़ि विज़ि वुज़ुनावन गोम।
करुसय शिल दिल हवालु, अज़ यियि लालु सोनये।।
कॅंह गॅय रिंद कॅंह रिंदान, केंच़व रिंदव ज़ोलुय पान।
कॅंह गॅय अचिथ च्यवान प्यालु, अज़ यियि लालु सोनये।।
दागु सुय ह्योतुथ कुनि गुलाल, बागुच हिय सु छाव्यम ना।
नावस तन तॅय रटनय नालु, अज़ यियि लालु सोनये।।
केंच़व कॊड मुलक दाल, केंच़न निश हावान पान।
कॅंह गॅयि बरु ज़न गुलाल, अज़ यियि लालु सोनये।।
वॅल्य मे तॅमिस दि लोलुक्य जामु, अज़ यियि श्याम स्वंदर सोन।
सुय यियि 'वासुदीवुनि' सालु, अज़ यियि लालु सोनये।।

✹

लीला 40

कर यियि मे कुन, गिंदुन दिमस च़ंदन हार।
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।

ओमय आद्य ओमस अंदर पञ्च़ाकार,
ओमुय ज़गत दॉरिथ कीवल निराकार।
ओमुक निर्णय कुस वनि ब्यॊन ब्यॊन छुस व्यस्तार,
ओमस पॉर्य ओमस हर म्वख नमस्कार।
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।०।।

ओमय छु सार ओमुच स्मुरण मनस दार,
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार।
भक्ति देवु प्रमान थावख बनि उद्धार,
भक्ति सुत्य लय कर भक्तयो लबख तार।
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।०।।

मोहुचि नेंदरि अन्दर मॅ गछ़ गिरिफ्तार,
बोधाई अन्दर नेंदरि गछ़तो खबरदार।
स्यॊद वॊथ नेंदरि यन्द्रेय क्रीडस निश रोज़ खबरदार,
दिल थव डंजे लंजि छुय बिहिथ जानावार।
बोलुनावुन लोलु पनने सुय ओमकार,
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।०।।

आनन्दमय बनख प्यालु चावनय मालामाल,
भावनय सोरुय स्व मनि सोहम साहाकार।
त्रेग्वन उल्लंगित नेर्गुण छु पानय निराकार,
अनतन लये मनस सुत्यन पनुन यार।
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।०।।

पान पनुन येमि कोर सही बॅ संसार,
बही तम्य सँज़ सही सांपुन्य बु सरकार।
'वासुदेवु' मेलव देवाद्यदीवस बा वेस्तार,
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार।
पादि प्रणाम नाद बिन्दस छु बारम्बार,
आद्य शक्ति शिव जीयस नमस्कार।।०।।

✸

लीला 41

फुलय लॅजिम सहज़किस संजीवनस,
समय वॉतिथ कुनि भावुन मनुष्य ज़नस।
सहज़ पूज़ा करि कूँछाह नारायणन।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

> गव कल्यान स्वधर्मु मरुन पर धर्म ज़य ज़ान भये।
> पर गव यि शरीर बोज़ दीवन ति छुय नशुवुनुय,
> यि करि शरीर रंबुवुन योद तॉय पश्यवुनुय।
> आत्मु दर्मी द्वख ना हरि तोश्वुनुह।।
> श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

स्वधर्मी युस पॉन्य पानय पानस अर्चान,
अनेक रूपस भेद ना तस कीवलुय मोचान।
स्वधर्मु वेध्या तस बिना कॉसि नोव्यचुनय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

घंटायि शब्द ठिनि रोस्तुय छुय वज़वुनुय,
सदा शिवस निशु नेरान सुय बोज़वुनुय।
बो तन मोरुय ओरु योरय सुय रोज़वुनुय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

मोदुर मसुय ब्रह्म यूगुक चे गलि गले,
दीर्ग रूगुय संसारुक तवय बले।
ननिय सु ईश्वर, निश पानस संदेह च़ले।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सुत्य सुत्य दीहु दीशस अमर छु तॅय,
सु ज़ुव म्योनुय युस कीवल ब्रह्म छु तॅय।
वाकु ईश्वरीय रूप नाव तसुंद सु पर छु तॅय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

व्यॅच़ेस नु कुने यी बु ऑसुस तिय हो मोचुस,
प्रज़ायि आंगन बालु पानय रुमा नॅच़स।
युथुय खॅचुस त्रेन पोरन त्युथुय वॅछुस।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सु मा ड्यूँठवन नाव गोत्र वर्नु रोस्तुय,
युस दज़ि न तॉय होखि नतॉय छेयनन रोस्तुय।
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसनु रोस्तुय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सॉरी भय त्रॉविथ युस दयस रटे,
तस दय दर्शन सिर्यि ज़न दियि मोहनि गटे।
दय ललि टोठयोस सॉरिसुय मंज़ तस केंह न मटे।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाशु रॅसितिय,
अकालु पोशन छख उत्पत आकाशु खॅसिथुय।
ज़ानान तिम ज़ॅनि सुकृति ज़ॉनिम गाश सॅसितिय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

स्वछन्द नावय ओस पानय सुय बॉलिये,
युस कंदि ओसुम छ़ायि रूज़िथ केंह कॉलिये।
युधिष्टयर ज़न चक्रव्रत द्राय सु कॉलिये।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

स्वरूपुय ज़ोन भगवान संतव राज़ रेशव,
अनेकु रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव।
सु शांत प्रकाश सुलभातीत सुलब लयव।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

ब्रह्माण्डस दॅयि वॅन्य मे दिछ़ॉम आगुर कॅते,
सहस्त्र दलय फॊलिथ आव सुयोग वते।
सुदर्शनस विना केंह नु लॊबुम तते।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

स्वतः प्रकाश जानवुनि दॅय स्वतः सॆद्धय,
स्वराज्य करान स्वदीशस सु श्वद ब्वदुय।
सुधीर रोजु बोजु बोजु सु धर्म विधय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

स्वमाला छम स्व मने नित्य जपवुनिय,
सपुद सु वाक सरस्वती छय वनवुनिय।
ननिय स्वज़ात श्वद स्फाटिक शांत शोलुवुनिय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्रय,
सु बोध मये बोज़ुवनुय छु स्व मन्त्रय।
स्व भक्ति बिना भू क्रेया छय नु स्वतन्त्रय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सुवॉदी कम केंह न मन्त्र कुस बनान,
सु आनन्द गन नॅदियव येतिय अमृत फिरान।
सु भोग तिम नु च्यन यिमय अद नु मरान।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सु बाशि करान नाशि रोस्तुय छुम सुय ज़ुवुय,
ज़ुवुय शिवय ज़ुव ब्रह्मा विष्णु ज़ुवुय।
स्वतः चेतन युस प्रज़ायि कुनुय ज़ुवुय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

गुपिथ कर्म नेत्य करान सु कर्म वानुय,
परामर्श छुख स्वभाव छिय धैर्यवानुय।
सो गथ सो वथ भाग्य हीनन ना यिवानय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

सोज़ॉन्य किनिय नित्य सोगथ दिवान दये,
दुर्भिक्ष नु कुने तति सुभिक्ष सु समये।
सुधैर्य सुसंग आद्य अस्त यथ नु समये।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुणय।।०।।

अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान अव सु चेननय,
परम विधान सु स्मृत छम सुदर्मवानय।
सुवॉनोहव केवल आनन्द स्वरूप निर्नय।।
श्रेयान धर्म छुम मे पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

सुदृढ करान बु ज़न्मान्तरनुय स्वकर्म,
ज़गत मेथ्या ब्रह्म सुत्य सेद्ध गव धर्म।
सुधर्म फल द्राव सर्व खलु इदं ब्रह्म।।
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

बु तस निशे सु मेय निशे दूरेर् नु क्षन,
द्रुय हव गॅजिम कस वनय लक्षणुय।
सु यूग कला सु पूज़ा सु प्रदक्षनुय।।
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

सु शिव वने कस यियि सु तेज़ मये,
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोद मये।
सु तेज गाशस अविनॉशी वुछ हृदये।।
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

सु बूल्य करान सुत्य ब्रार्यन सु ब्वदु ब्रोरुय,
चिन्तामन देह पारिजातक कुल देवु द्रायु।
यि केंह मंगान सेद्ध गछान तथ केंह नु तॉरुय।।
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

छय लछ संख्या नाव तसुंदि अलक्षय सु दय,
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म हियुव सु दये।
तस केंह नु ॲन्दी ज़ानतु संदेह दपान तस दय।।
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुनय।।०।।

✷

लीला 42

उत्तम भावु सहज़ यज्ञस ब्राह्मन नित्य हुमनस छिय,
देह अभिमान आहुती तिमय परमु हंसुय छिय।
तति तोर सॉरिय आरम्भ दॊपुन वॉर वॅलिमित्य छिय।।
सहज़य ज़ान सहज़य मान सहज़ चे़न सहज़ पान।।० ।।

सहज़ क्रय दूश यॊदवै मो त्राव प्राव सहज़ ध्यान,
सहज़ छुय सहज़ रस चि़त्त सहज़ रस छुय मे कारनय।
सहज़ पान नित्य प्रज़लान दूरी ना नेरि प्रावनुय,
सहज़ क्रय शम्भूहस प्रेयि सुय ध्यान पज़ि धारनुय।। सहज़ ज़ान०

सहज़ लयि च़लि मनि खय निशि बनि दय सहज़ानन्द,
सहज़ भावु दीप प्रज़ल्यव गटु च़लि मेलि परमानन्द।
सहज़ वारि सहज़ पोश फॊलि फल द्राव सहज़ानन्द,
सहज़ बीज़ आत्म तेज़ चिन्मय अविनॉशी छुय।। सहज़ ज़ान०

अनिगटि कॅति सहज़ दृष्टी सोरुय प्रकाशुय छुय,
सहज़य शम सहज़य सम सहज़य परम गाशुय छुय।। सहज़ ज़ान०

सहज़ वति रावुन कति रोवमुत अथि यिवॉनी,
सहज़ कथ छय अमृत ज़न्म मृत सोर छिवॉनी।
सहज़ थान योगीश्वर नित्य समाध दिवॉनी।। सहज़ ज़ान०

सहज़ नित्य आत्म तत्त्व सहज़य ऊर्ध्वगति ज़ान,
सहज़ नाद सहज़य बिन्द सहज़य अव्यक्तुय ज़ान।
सहज़ुय शिव सहज़ुय शक्ति सहज़ुय परम गति ज़ान।। सहज़ ज़ान०

सहज़ शब्द ब्रह्मुय गव, सहज़य ज़ान 'अ' शब्दुय,
सहज़य सुत्य वेचारय सहज़य पर् प्रसादुय।
सहज़ुय थान अमृत छुय सहज़ भक्ति छय अलबदय।। सहज़ ज़ान०

सहज़वाद गव संवाद सहज़बाष्य गव सतसंग,
सहज़ बोलि कूंछ्राह तोलि कूंछ्राह ज़ानि सहज़ बंग।
सहज़ुय सार्यकुय मूलुय सहज़ुय सारि निशि असग।। सहज़ ज़ान०

सहज़ ब्रोंठ सहज़ पतु सहज़य यथ समयस छुय,
सहज़व स्वयं नाथुय छुय सहज़ुय अद ईश्वर कुस।
सहज़य आद्य अंत रोस्तुय सहज़ुय स्वरूप अरूप युस।। सहज़ ज़ान०

सहज़ तारक मत्रय सहज़ुय संत मार्गुय छुय,
सहज़य गव वेदांतय सहज़य वेद अपारुय।
सहज़ुय तत्त्व बोदानन्द सहज़ुय जानतो भर्गुय।। सहज़ ज़ान०

सहज़य वति नु लबुनुय, वॉतिथ हनि हनि छुय,
सहज़ुय नित्य अमृत दय सहज़ुय मंज़ मनि छुय।
दयस गारि सहज़ाचार नित्य नारान वने छुय।। सहज़ ज़ान०

सहज़ुय सिर्यि खोतु छुय नोन त्युथ छु गंभीरय,
गंभीर सान सहजुक बाव नेथ सोरवुन छुय वीरुय।
वीर ना यिरु प्रल्यन छिथ त्वोत मान कुस करि वीरुय,
सहज़ुचि तारच़ि तूलिथ तस तु मे भेद रोजिनव केंह।। सहज़ ज़ान०

या सुय यातो बुय ना केंह नतु बुय योत सुय नव केंह,
सहज़ बाग अनन्त नाग ह्वयि तति ज़ाग सहज़ानन्द।
सहज़ वारि सहज़ पोश फोलि फलु द्राव सहज़ानन्द।। सहज़ ज़ान०

✵

लीला 43

स्वकलि निष्कल द्रायिसो कले।
व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ॐ।।

होश थव वासनायि द्यान रोज़ि सम, मन प्रान सुत्य भासि सरु फ्वलि पम।
मान रट पानस विघ्न हान च़ले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ॐ।।

कस चावि लोलुकिस प्यालस मस, सुय करि तय ओरु चावन यस।
लोलुके दॅरियावु ग्वडु पान छले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ॐ।।

मन ब्वद सुत्य छुय खूर तॅय हम, सोऽहं रज़ि सुत्य पवन नावि लम।
अहं त्रॉविथ सोऽहं फोले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ॐ।।

सोऽहं हेकि सुत्य परमानस, येति तति प्यतरुन छुय पानस।
होश थव वासनायि युथ नु मॉल गले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

प्रानचे त्रकरे शब्द परुमान, सार रठ बोज़ु सुत्य पूर तोलान।
सत चिय साक्षी लेखु अमले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ऊँ।।

शब्द बूल कुकिले गूविन्द गू, पोशनूल छिय ज़पान कृष्ण गूपियो।
श्रावुन सूरिथ कस्तूर कले, व्वथ मनु हा कले शब्द जप ऊँ।।

स्वन खसि कॅहवचि तारुच़ि तोल, तोलि सुय रच़ि रच़ि येम्य अहं गोल।
ब्योन ब्योन म्वल छुय स्वनस सरतले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

यावन बागस फुलया छम, नाद खस सादान तेज बिंदम।
सत्य लोक समादि सहज़ प्रज़ले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

ही फोज्य ज़ारन आरन आरवल, मसवल गुलाब बेयि यंबुर्ज़ल।
बंबूर छ़ारान छुय यंबर्ज़ले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

मनुकिस द्यानस सू हम खानस, सहज़ संदानस स्वरनुय ह्युव।
दम ह्यु सम रोज़ अदु पम फ्वले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

कन थाव क्याह चज़ान टल्द ज़ीर बम, च़ेनतो आकलो दर नफीस दम।
कलि कलि कल गनेयम वुज़ मे शेशकले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

यिय ओस रोवुमुत तिय पनने गरे, गोरन द्वोपनम अ‍ॅतिथुय प्रार।
ओरुत प्रारान ओश कर मेय येले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

'परमानन्द' त्राव फिकरु तु गम, चिन्तामनु रॅत्नु सुत्य ज़पुन ॐ।
बुय बुय त्रॉविथ दुय मनु गले, व्वथ मनु हा कले शब्द ज़प ऊँ।।

✸

लीला 44

निराला वास दय वरतन त्रिकालु, कर्ता भर्ता बालु ब्रह्मचारो।
भक्ति भावु कोसम पोशन करय मालु, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

प्रथ बूमिकायि मंज़ शून्या वलये, अंति थ्यत करतु चि़त्त भगवानो।
बुद्धि संयोगु स्राक्षात्कार बास्तम, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान, विश्व रूप किन्य छुख व्वलसानो।
विश्व आत्मु अनुभव दितु दीनुदयाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

शुद्ध प्रग्यायि हुंदि सत् संयोग भान, मध्य मायि मध्य भूत प्रज़लानो।
तेज़स्व बालुक तेज़ दीप्ति विशाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान, चित्त गण द्योतवुनि चि़त्त भानो।
चि़त्त शक्तयानन्द भोगी प्रज्ञाकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

पश्यन्ते यत-वत् ज़ेय योगेश्वर, तत् वत् वुछिथ चि़त्त स्वप्रकाशो।
बाह्यान्तर तेज निर्भर त्रिकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

द्वादशांत वासु वासी चेतन भान, स्व सुखस्थानु स्वख भूगानी।
स्व परानन्द आनन्दय सर्वुकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

सहस्र दलु प्यठ स्वांस्त ज्योतिष्मान, अंडु पिंडु अखंड़ दीप्ति मानो।
अप्रमेय अविच्छि़न दिन दिक्काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

परात्परु गाशरु हुंदि गाशरु, सर्वज्ञेवश्रु बोधु भानो।
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्रु पाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

सत् सत्व तत् तत्व अच्युत ब्रह्म तत्व, नित्योदित चि़त्त विवस्वानो।
ओंकारु रूपु परिपूर्ण निर्देश काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

साराति सारु सर्व आत्म सर्व आदार, देवादि देव गो दाम नाथो।
हे दातु शक्तिपातु करतम् उपराल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

सुज्ञानु सर्वदा सर्वतो भास्तम, क्षनु क्षनु भास्तम साक्षात्कार।
कृपा करतम भगवानु कृपाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

पादार्बिद अमृतु तृप्तावतम, प्रावनावतं परम आनन्द थान।
पादु कमलन वदंय नेत्रन हुंदि लाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

दासन क्युत द्योत छुख बडि स्वभावय, शुभ दर्शन वर दिवानो।
विदुरस हाकु मेंचि प्यठ आमुत सालु, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

प्रारान प्रारान वोतुम यूत काल, अनुकूल भगवानु दयालो।
ब्रह्मार्पन बोजतम् प्रातःकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

श्रीदर सुर ग्वरु बालु दामोदर, श्री कृष्णु वासुदेव श्री रामो।
स्वख म्वख संम्वख आस्तम अन्तुकाल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

निराला चानि संयोग प्रावुयना, सुग्यानु विग्यानु अति वृद्धा।
दय गोविंद 'दासुय' बनु त्रिक काल, बालु गोपालु नन्द लालो हो।।

✹

लीला 45

चे़तन स्वप्रकाश सर्वु आत्म ज्ञानी, सत् चित् आनन्द गंन परमाशक्त।
नित्य सार संवित ज्योत द्योत वानी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

नित्योदित चि़त्त रव चु बासॉनी, विश्व आत्मा चोन ज्योति स्फार।
सर्वान्तर्यामि भावु आसुवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

या द्वादश अर्कु तेज़मान दीपिका, स्वप्रकाश गन सत् चि़त्त प्रतिभा।
सर्व तेजोमय श्री महाराज्ञी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

दुर्गा अव्यय कर्ता अक्रिय, विश्वोत्तीर्ना विश्वरूप विश्वमय।
स्वयंभों सर्वत: ज़य वॉणी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

परा पशयन्ती वयॅखुरी मध्यमा, च़ोरि पादु एकांग शुद्ध विद्या।
अनुभव मात्रा शिव मर्शिनो, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

सम शुद्ध चेतन निस्त्रैगुणी, स्वर ग्वरु देव देव चिन्मयी।
क्या करु न्यशब्वद अस्त्वत बु चॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

शुद्ध बोध थावतम विध संज्ञानय, सोहं शब्दार्थ विज्ञानय।
पूरार्ण हता स्वरूप आसवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

ब्रह्मार्पण एकांत थ्यत थावतम, अनुसंदावतं सत् चित्त ज्योत।
सुज्ञानु विज्ञानु सोद्ध पर: रॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

अनुग्रेह चोन बनि यस बाग्यवानस, सुय गछ़ि संम्वख च़ित्त भानस।
गलि अदु अज्ञान मोह मद मानुय, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

अनुग्रेह किन्य असि़ अंधकार कासख, यान्य तान्य भासख सर्वतोमुख।
सर्व आत्मा पर ज्योत द्योन वॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

आदनु मंजिमय पर नाद सादन, ॲन्य नादन हुंद छुम नु अबिलाश।
वरु चानि तरु करु परु भक्ति चॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

बिक्षुक द्वार चोन ज़ाव भिक्षाये, शिव निर्वाणुक्य अभिप्राये।
दितु दान बॊड दातु छख आसवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

चानि शक्तिपात वातु ब्रह्म निर्वासन, परम-स्थानस करु निवास।
भक्त्यिन छय मुक्तिदा दया चॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

क्षनु क्षनु ज़रनामृत चोन चमु हा, शमहा चान्यन पादन तल।
शाप पाप शूक संताप कासवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

संम्वख सुज्ञानु अनुभव थावतम, हावतम सुविचारु भवुसरु तार।
प्रारान आश्रित आशि छुस चॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

सूतक मृतक भय निवारतम, भवु सागरु मंज़ु बॊठ मे खारतम।
ऑरत्यन ऑर्चर छख कासवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी, अमरावती सरस्वती।
द्वंद दूश कास्तम विद्यावासिनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

हिंगुला ज्वाला मंगला कॉली, पिंगला त्रिपुरी ह्रींकारी।
राज़ राज़ेश्वरी परः राज़ुरॉनी, कृपा कर मॉज्य बवॉनी।।

कठिने भवुसरु मतु मंदछावतम, प्रावनावतं परमु आनन्दु थान।
कृपा कटाक्षु तार दिवुवॉनी, कृपा कर मॉज्य भवॉनी।।

लीला 46

श्री राज्ञी स्तोत्रम्।।

स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकलं मलम्।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां काम दायिनी।।
त्रिजगन्मोहिनी ईडये मिहिरी भूत सद गुणे।
नमोऽस्तुते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम्।।
शेषाशष मुखागण्य गुणे गुण गण प्रिये नमो०
सुरासुर नर सिद्ध वन्दनीय पदाम्बुजे नमो०
चराचर जगत्सृष्टि स्थिति संहार कारिणी नमो०
म्वत: कल्पलतेऽनल्प वाड़मार्धुय जितामृते नमो०
ब्रह्माविष्णु महेशान बन्दिते गिरिनन्दिनि नमो०
भक्तानां भीम संसार पारावार प्रतारिणि नमो०
निर्गुणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि नमो०
राज्ञीस्तोत्रमिदं पुयं त्रिसन्ध्यं प्रयत: पठेत्।
असंशयमशेषेण वशयेदखिलं जगत्।।

✷

लीला 47

मे संतन हिश नु छय शांती न शम दम।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।

द्या सागर वनन छिय लूक सॉरी,
द्याये हुंदि समन्दर छिय चे जॉरी।
द्या हय मेय करख अथ क्या गछ़िय कम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

म्ये ज़न्मन हंदि महा अपराद हरतम,
दया करतम म्य मूर्खस लोल भरतम।
प्रेयम दिम पूर त्युथ युथ दूर हेयिय यम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

फस्योमुत छुस बु मंज़ संसारु ज़ालस,
फक्त छम चॉन्य आशा अन्त कालस।
कॅडिथ निम ज़ालु मंज़ बख्शुम परम शम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

बु कोताह रोज़ु येति ऑखुर मरुन छुम,
कठिन संसारकिस सोदरस तरुन छुम।
नितम मंज़ नावि प्रेयमुचि स्योद रॅटिथ नम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

व्वपाया कर म्य युथ मन रोज़ि नेश्चल,
मलिन बुद्ध छम बनेमुच़ बनि नेर्मल।
करुम अंत: करन शुद्ध प्राव उपरम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

बु छुस अंदर न्यबर छ्योट खोट क्रेया छम,
फकत बोठ खारु वन्यॅ चॉनिय दया छम।
गंगा जल ह्युव बनावुम श्रूच़ उत्तम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

शरीरस प्यठ नज़र छम छुस बु अनज़ान,
यछ़न छुस मान मॉनि तथ मांसुक पान।
मे ज्ञानुक सिर्यि मंज़ मोह रॉच़ बनतम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

यशस ह्यथ छम वेशय भोगन हंज़ुय प्रय,
दया करतम दया करतम चु छुख दय।
पाखंडस कामु क्रोदस नाश करतम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
शरुचि शोरुह बने छम पाप प्यॅच सुत्य,
कोहा हिश बॅड छि खोचान अथ वुछिथ कुत्य।
च़ हावुस ज्योति रूप अथ वोथि जम जम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
च्य छय द्रुय पननि कुनिरुचि म्य द्वयि कास,
च्य छय द्रुय पननि बजिरुच ज़ु मु ज़ाँह बास।
च़्यतस गनतम तु ज़न्मस ज़ांह मु अनतम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
कुनुय ऑसिथ च़ नाना रूपु किन्य द्राख,
च़ॆ ह्यु ग्वनवान नेस्त्रैग्वन छु कुस ब्याख।
कुनिय तत पदु सुत्य शोज़ुरावतम उत्म।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
पॅतिमि समये यमस निशि मोकलावतम,
च़ पानस ह्युव बनावुम मोक्ष द्यावुम।
असॅवुनि म्वख फोलनावुम मे कोसम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
छु सागर चानि कुन्यरुक सोन स्यठा ज़्यूठ,
ॲनिथ दिम मोख्तु नतु खारुन गछियं क्रूठ।
बु कथ सुत्य लाग हम किथ पॉठय दिम दम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

हवा ज़न बनु बसंतुक अन चु मे बोश,
फॊलन बुद्धि योगु बागस होशु किय पोश।
तिमन पोशन प्यठुय छुख शांत शबनम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

बु बुय करनुक मु थावुम कांह ख्याला,
न बाष्य दिह दिहुच चाला तु डाला।
गल्यम आवागवन रोज़्यम नु कांह गम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

ज़गत किथ दरिहे कुस कार करिहे,
समय ऑदीन कुस ज़्यविहे तु मरिहे।
छु ठहरॉविथ ॲमिस चाने सतुक थम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

अगम अपार छुख निर्गुण निराकार,
मे केंछा यार कर भवुसागरस पार।
कॅरिथ सोरुय मे थाव लोब निरालभ।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

अविद्या कास्तम न्यथ बास्तम सत,
ज्ञानुच स्थित दितम सोय छम परमुगथ।
अचि़त थॉविथ म्य पत मोचुरावतं ओम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

चु सन्म्वख रोज़तमं अदु चा़ल स्वख द्वख,
खसि् बोठ मोख्तु सत् सागर दियेम ग्रख।
रॅटिथ निख होश दिहु मंज़ चे़नि क्या च़म।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

स्वतन्त्र थाव मे चेनुन शेलि ह्युव शम,
स्वरूपस तेलुवुनिस नशि छा कम।
प्रेयम मस मेलि यस कम गेलि आलम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।
पनुनि करतूत वुछ्य वुछ्य छुस बु आदीन,
'कृष्ण' पननिस स्वरूपस मंज़ करुन लीन।
करुस मन लय तु अदु नोन नेरि सोऽहम।।
चु छुख पानय बु कुस छुस कास्तम ब्रम।।०।।

✻

लीला 48

कलजुग नहीं करजुग है यह — यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है — इस हाथ दे उस हाथ ले।
दुनिया अजब बाज़ार है — कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है — बद से बदी की बात ले।
मेवा खिलाओ मेवा मिले — फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले — दुख दर्द दे आफत ले।
कांटा किसी के मत लगा — गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे हक में तीर है — किस बात पर झूला है तू।
मत आग में डाल और को — क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता बेखबर — किस बात पर भूला है तू।

✻

लीला 49

वॅलिव पूज़ा करव नेष्कल,

कलु माला धरुसुय, हरु कलु माला धरुसुय।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।

जय गंगा धरुसुय, हरुसुय शंकरसुय।।०।।

ओम् शिवु शिवु शिवु शंभो।

ओम् हरु हरु हरु महादेव।।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

सुय छु अजर सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर,

तस छि ज़ानन यूगीशवर आश्चर्युक आश्चर।

ज्ञान गाश अनि योगु नेत्रन वुछनावि आश्चरसुय।।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

त्यागु वैराग च़्यत सॊस्त थावि, करनावि ब्रह्मु वेच़ार,

सतचे वति पकुनॉविथ ज़ाननावि ब्रह्मुय सार।

आत्म बोदुक ज़ल वुज़नावि, ब्रह्म भवुसर सरसुय।।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

ह्यथ गछ़ि दिहु अभिमानस अज्ञानस गंडि नार,

अच्युतचे स्थिरतायि सुत्य वथ हावि ब्रह्मु आकार।

तमि ग्वनु ब्रह्मवित् सादन, पादन ॲछ्य जरुसुय।।

क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

संसार यश भ्रम मॉनिथ, मन किन्य थावि उदास,

यूग ज्ञानु ध्यान सॊस थावि बस्ती मंज़ वनुवास।

चिन्मात्र ओत म्वच़रावि मंज़ क्षनु मात्रसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

अंतकालुच ज़ाल कॉसिथ चित्त थावुनावि नेष्कल,
च़ंदुन च़ंद्रम कॉफूर ह्युव मोख सुय हावि शीतल।
सानि पालनुचि आज्ञा दियि अभयस तु वरुसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

दर्मु ज़ोर दियि तोर मुच़रावनावि श्रद्धायि बरुसुय,
ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शान्ती गरुसुय।
कर्मु फलकुय बोर लोच़रावि दिह ब्रम किस खरुसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

सिर्यि ह्युव प्रत्यक्ष बासिथ नित्य सन्म्वख ऑसिथ,
सतचे वति पकनॉविथ अज्ञानु गटु कॉसिथ।
आत्मु बोदुक दीप ज़ालि थावुनावि मंज़ मरुसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

वनु कॉच़ाह छय स्त्रियि, पुत्र, प्रिय अथ दपान मायाजाल,
यिथि ज़ालु मंज़ डालु दिथ कडि च़टुनावि मोहु ज़ंजाल।
अतुलास वलुनावि सन्यास ब्रॅच थावनावि मंज़ दरुसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

कर्म हीनस दोग़्थ हरि दरिद्रस करि नाश,
पालना सॉन्य छस मटि, गटि मंज़य अनि गाश।
आर यियनस तारि कृष्णस यथ भवुसागरसुय।।
क्षय करि सान्यन पापन, नाश करि सान्यन शापन।।०।।

✵

लीला 50

वाक्य

'वयकुन्ठु वॉसी श्री टिकु काकजी'

क्या सन गोम तथ संवित स्वखस, बो वनय योदवै पोज़ वनुखय।।
भ्रमुरोवुख अॅम्य रतन तु माज़न, अमि रतुच तु माज़ुच मो भर प्रय।१।

भोग बोछरन छलु छांगुरि कोरुनख, लांगुर्य लोगुथ ऑसिथ राज़य।।
प्रकाशमान पान पानु निश खॅटरोवुथ, पानु फाटुनोवुथ रत तु माज़ुय।२।

आयस कदर नाव ज़ोनुथ दानय, शीनु मान्य ज़न बानु व्यगलिथ गव।।
ब्वज़ुवान वन तु योद ब्वद क्या चॉनी, ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय भैरव।३।

दिह छुय आयुकिस ऑमिस पनस, अलोंद, करान छुख शुर्य बाशे।।
यि कोरुम तु यि करु मरिके म्यान्युर, कव, लोगुख वासनायि ज़ालु वालुवाशे।४।

गरु गरु करान हरु हरु मोठुयो, मरु मरु कोरुथ अमर पानय।।
अस्थिर वेशय वासना व्रथ दॉरिथ, मूढ कोनु रूज़ुय स्मरन दानय।५।

पॅज़ कल त्रॉवुथ पर कल प्रॉवुथ, अॅछ्य गाशरॉविथ सपनुक अन्द।।
वेद्या सॉविथ मोह वुज़नॉविथ, द्रढु संकल्पन कॅरिथ व्वन्य सॅन्द।६।

मूढव बूज़ुय सतुचिय कथा ज़न, पामुरव ग्यवनुच कथा ज़न।।
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा, शौंगि शौंगि बीठ्ये म्यॅचि़ दथा ज़न।७।

स्यदखय स्योदिय सोरुय पानय, अथि यियि यि केंह छुख छ़ांडान।।
रावनय रावरुथ गाह ज़न माने, ज्ञानु व्वलुसोवथो यि अज्ञान।।
ज़ोर कवु बन्योख बोज़नुकि ब्रमय, ज़ाननुकि भ्रमु कवु रॉवुरुथ ज़ान।८।

उों नमस्त्रिपुरसुन्दरी।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(पॉच़म-तरंग)

लीला 51

प्रये चाने दयो नेरय।
वु फेरय दरदु नयि हू हू।।

ह्यतन सत्यॅन पनुन रहबॅर, गछ़ख कौत रठ चु पननुय बर।
न्यबर मो नेर चु अछ़ अंदर, दिलुक दिलबर छु सोऽहंसो।। प्रये०
चु अछ़ अन्दर पनुन वुछ ओल, चु पानय छुख गरुक गरुवोल।
ग्रटै फेरान महीन नेरान, बु ज़ोर आब सोऽहंसो।। प्रये०
छय गफलत गट गाशस ठॊर, तमिय गाशे दॅरिथ छुय मॊर।
शबस ख्रसान दोहस वसान, शबुय रोज़ान छु सोऽहंसो।। प्रये०
छुखय रिंदान कतरस प्यठ, छु कतर्यव, कुलि दॅरियाव च्यथ।
छु दॅरियावु दुरि अरफानय, गुहान पानय छु सोऽहंसो।। प्रये०
रबुय छुय सब सबुय छुय रब, सपन रिंदान बाज़ानय।
छु हॉसिल बा सफा वॉसिल, छु हांसिल आशकै हो हो।। प्रये०
हुवल अवल हुवल आखिर, हुवल ज़ाहिर हुवल बॉतिन।
हुवेदा शाहि शाहनय, वज़ान पानय छु सोऽहंसो।। प्रये०
अथव पनन्यव ल्यूखुम नामय, मवुंद रामय पनुन अवहाल।
यि केंह वव्याम ती ज़ामय, मे अरामय छु सोऽहंसो।। प्रये०

✱

लीला 52

रामन सिद्ध कॅरुय म्यान्य मनु कामन।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।

महागणीशन ऋषि सिद्धि नाथन,
नादन म्यान्यन यॆलि थोवनम कन।
प्रज़लोवनम तॊलि गटि मंज़ सिरियि ह्युव शुद्ध मन।।
दामन रटस न्यॆथ प्रबातन तु शामन।।०।।

लूख सरयि मंज़ सरि गरदान ओसुम,
वृच़ लूकन निश हर्षिदेव गोमुत।
ओसुख भक्त म्वकुल लॊगमुत व्वलामन।।
दामन रटस न्यॆथ प्रबातन तु शामन।।०।।

शिव शक्ति पोश फॊलि ज़ीवन मुक्ति,
फल द्रास अबिन्न अर्थ रस नाशि रॊस्तुय।
कीवल हृदयस नॆष्कल जामन।।
दामन रटस नयॆथ प्रबातन तु शामन।।०।।

भक्ति भूमिकायि गुरु युक्ति बीज़ वोवुम,
वेद थलि मंज़ सांख्य सग सगरोवुम।
सिदांत सोंतन तॊलि कॅडिस बामन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

शांती सीतायि मल गोल भूमिकायि,
हंसो सोहम् च़रनन चर्यायि।
न्यथ लॊगमुत आमुत ठीकिथ लक्ष्मन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

द्रौपदी कॉली पापु ज़ाय खॉली,
कॅरमुच़ कुरूक्षेत्र शुद्ध यॅच़ कॉली।
क्रशनुन्य बहॉली यॅछ़ बलरामन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

अर्ज़नस सुदर्शनु मुक्ती साँपन,
गीतायि न्यथ गावान गीत क्रश्नुन्य।
स्वॅय कलु यॅछ़मुच़ नेष्कल सुदामन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

राज़ु हंसु सुंद सायि प्यव मनु मथुरायि,
वसुदीवन ति यॊछ़ देवकी मातायि।
स्वॅय जाय मंज़ूर कॅर आरामन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

व्यासन वास कोर शुकु संदि भागे,
बागवत ग्योव तम्य श्री कृष्णु रागे।
ज़ागि कोनु जिज्ञास पय पैगामन।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

नारदन नारायणस यिय ओस मोंगमुत,
साम वीद कृष्नुन रासु मंज़ बूज़मुत।
प्रय बॅरनस अक्रेय 'हलधर रामन'।।
दामन रटस न्यथ प्रबातन तु शामन।।०।।

*

लीला 53

लुयि दारि त्रॊपरिथ सपद मावरयो।
हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

मन सरु तन नावु यछ़ पज़ बरयो, प्रानु च़ूर हाविय गटि मंज़ गाश।
इन्द्रेय शॊमरिथ आनन्द बरयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

गारस अचि़थुय वनवास बरयो, अथि च़ेय यिययॊ सोऽहंसो।
सासा मॅलिथ हय हंसो परयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

गोकुल गॅछ़ि हय तवुकल करयो, अथि चेय यियको गाशो हो।
शम सो वॉतिथ हम सो परयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

ऒमके रसु सुत्य द्यन तु रात बरयो, चुय गोस बुय तय बुय गोस चुय।
वर्शन तमिके दर्शन बु करयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

झूठ संसारस दॊह तार बरयो, ताशोक छुम मे चोन माशोको।
आशक लॉगिथ च़ेय पतु मरयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

केंहनस क्याह तान्य हा बु क्या करयो, रॉविथ अथि यिख 'लसु शाहो'।
हर ग्वन बूज़िथ सतु नाव सॊरयो, हरु ज़ीवु परुयो सोऽहंसो।।

✸

लीला 54

अपॉर्‌य यपॉर्‌य च़्वपॉर्‌य पानस।
बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

शाह फेरि पानय शाह नतु कॅम्य खार्य, ब्याज़ुच गयेस त्राये लोलो।
ज़ीनिथ छु बापॉर्‌य हॉरिथ गव ज़ार्य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

सुलब तिमनुय यिमव तिम गार्य, नतु छा अंदन न्याये लोलो।
दयि लॉन्य वनिमुच़ न ज़ि मँज़िम यॉर्‌य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

सु दपि पानय मा खसनम बार्य, बु दपु गॅयि लायि लाये लोलो।
रूद क्या मूद क्या न्वकसान कॅम्य च़ॉर्‌य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

क्रालन ज़ि थुर्य मा गॅर्‌यमुति मा खॉर्‌य, यिम ख्यॆलि कुत्य द्राये लोलो।
पुज्य मा रॅछ्य च़्वपानि या ताय चमार्य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

वाति मा दादस सु साद मकॉर्‌य, दायि अकि च़लिहेम वाये लोलो।
दॊपनम च़ु बलख च़ालखय बेमॉर्‌य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

मॅरिन कूँछा बलन यिम सॉर्‌य, मो थाव वॊंदस ग्राये लोलो।
'परमानन्द' ह्यथ छु सारुय तयार्य, बु पॉर्‌य लगस नाये लोलो।।

*

लीला 55

बेद् दृष्टि सॉन्य हार।
पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।

सत्मुख अवतार दार, मोंह ब्रमुक दैत्य मार।
भवु सागरस कर मे पार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
चारिरस मंज़ पांच़ दोंह, यिन तु गछ्नु दितमय छ़ोंह।
युथ नु अस्थिरु ज़ान सार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
नशुसुय मंज़ बुद्ध नॅशिथ, युन गछुन गछियं मशिथ।
कर नावुम सत् वेच़ार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
ध्यान शम् दम् धर्म दान, तप ज़प ह्यथ यूगु ज्ञान।
कर दया केंछा मेय यार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
मूर्खु बोज़ सुत्य रात दोह, छिम समेमुत्य पापु कोंह।
शोरसुय ज़न गंडतु नार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
यियतनय व्वन्य म्योन आर, वुछतु म्योनुय ठगु कार।
अनुग्रहकिय लदतु द्वार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
आसि योंदवै गाटु खार, कुनोन यियस नु हार।
दिम ज्ञानुक गाटुजार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
छुस बु मदुक खानुदार, सॉर्य छिम गर्ज़क्य मे यार।
करुनाव नेष्कामु कार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
छुस ऋणन हुंद कर्ज़दार, मतु पावतं पतु लार।
लोंच़रावम कर्म बार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।

नाव छुय संसारु सार, भवुसरस दिम म्य तार।
पतु नितम शूबिदार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
त्रॉविथ गोम लोकचार, यावुन ओस अंदकार।
रछ बुडस छुस नाबकार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
प्यव मे कर्मुक कुल छॅनिथ, च़ोलुम च्यतु बुलबुल बुछिथ।
हाव नोन यूगुक बहार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
खोट छु म्योनुय व्यवहार, त्रावनस अथ छुम नु वार।
थव मे नेर्मल नेर्विकार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।
कृष्ण करनाव सत वेचार, थोद छु चोनुय मोक्ष द्वार।
ज़न नबस कुन रेह मे खार, पनुनि कुनरुचि द्रय च़े छय।।

✸

लीला 56

संकट कट अथु रठ दयालय।
च़ट सोन माया ज़ाल।।

वोलमुत छुम अमर अकालय, ब्रमु कालु सर्पन नाल।
म्वकलाव च़लनम कालुनि ज़ालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
तापु रोस तर फोजि संगर मालय, खसुनस छुम बोड बाल।
नेशब्वद वृद्ध छुस दिमु कमु छालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
शक्ति पात सुत्य बिक्षुकस कृपालय, दातु बन छुस कंगाल।
ज़ीठिस मँज़िलस वातु कमि हालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
अख ॲछिनाठा करतु श्यामु लालय, अशि सुत्य बॅरिथुय छि लाल।
नॉल्य छुनहोय भक्ति भावु मुक्त मालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।

नेरहा मंज़ घरिके जंजालय, टोठ छुम अन्न दन माल।
तथ मंज़ थावतम त्याग ख्यालय, च़ट सोन माया ज़ाल।।
हावु कॉच़ाह दिह ब्रमचिय चालय, कॉल्य मा म्वख हावि काल।
सूक्ष्म स्थूल म्योन रछ क्याह बु संभालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
अन्नज़ल भोग असि सोन यितु सालय, बरनाव अनुग्रह थाल।
आत्म तृप्ती दिमु ब्वछि कुच़ च़ालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
असि कर्मु हीनन दीनु दयालय, काम क्रोद लोब मद गाल।
द्वख हार गगुनस खार पातालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
कॉत्याह बलुवीर समयिकि हालय, सुह ऑसिथ गॅयि शाल।
राज़न नाव प्यव खरि जदालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
पॉन्यवान थव शॉन्ती व्रथ पालय, स्योंद कर हॉल कपाल।
नतु कर्मुलीखा क्यथ पाठॅय डालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
यॉर ह्यु सब्ज़ कर मृतु हर्द कालय, पशु भावुच लशि ज़ाल।
मोक्त बनाव त्रावु अशॅने च़ालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
प्रेयमुच जमुना वॅछ़ नाल नालय, ज़ल छुस माला माल।
तनु नॉव्य गोपियि ह्यथ गोपालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
ग्यानु म्वख हाव त्राव मलालय, मे मु बनाव गॉफि शाल।
स्फूर्नायि सीमिनि मॅशराव छ़ालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
फीरय फीरय क्या वाति ब्रज बंगालय, ह्यथ कॉशी नेपाल।
म्वख हाव मन दीशु प्यठ बंगालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।
प्रवॅच़ मंज़ निष्कलु कलुवालय, निवॅच़ नशु दित डाल।
'कृष्णस' मोक्षु मस चाव प्यालु प्यालय, च़ठ सोन माया ज़ाल।।

✸

लीला 57

अज़ सॉन्य व्यनती सत् ग्वर् सादय।
कुनिय नादय बोज़।।

रातस गंज़ॅर्यम नबुचे तारय, कृष्णु च़ंद्र यित प्रारय कूत।
श्यामु रूप सुबह फोल यिन डलि वादय, कुनिय नादय बोज़।।

विग्यानु रव चूरिमि पद्म पादय, च़ित्त बंबूर सोन व्यूर ह्यत द्राव।
गीत ग्यवि चानि सत्संग संवादय, कुनिय नादय बोज़।।

मायातीतु अंत रोस्त अनादय, कुस अखा चॉनिस अंतस वोत।
हे अगम अपारु आद्यकि आदय, कुनिय नादय बोज़।।

मंज़ चानि माया सागर उत्पत्तु, छिय गछ़ान ब्रह्मांड बुद-बुद वतु।
अवतार कारन देव अगाधय, कुनिय नादय बोज़।।

च़्यत अबलक च़ोल कोत पकु प्यादय, स्यज़ि वॅति वॅवछि क्यथ रोन पकुनाव।
छुस पथर प्योमुत करुम इस्तादय, कुनिय नादय बोज़।।

उन्मत भूता छुय ज़गत गोमुत, तथ मंज़ प्योमुत छुस बु अनज़ान।
स्व व्यच़ारस वातु चानि प्रसादय, कुनिय नादय बोज़।।

पानय सोरुय छुख उपदावान, कलु गिलुनावान बुति छुस कांह।
पोत ह्यतु यिथि भ्रम के अपराधय, कुनिय नादय बोज़।।

मेगवर्ण रछतु व्यवहारुच त्रटि मंज़, गृहस्थ गटि मंज़ नॊन हाव गाश।
अमृत चाव प्रेयमु शब्द अहलाधय, कुनिय नादय बोज़।।

म्यानि भक्ति भावनायि हुंदि प्रह्लादय, सर्वु आत्म भाव सम दृष्ट प्राव।
सुख दुख सम ज़ान मंज़ कमु ज़्यादय, कुनिय नादय बोज़।।

बुद्धि योग होश गछ़ि ज़ीवु भाव मशनुय, पशनुय अदु च़लि दॊन आलमन।
यिथि मशनुकि नतु यादुकि यादय, कुनिय नादय बोज़।।

अनुग्रह चानि सुत्य भोग ब्रोंठ यियतन, 'कृष्णस' प्ययतन भोगनि तिम।
एक रस ह्यस दिस तालुक्य स्वादय, कुनिय नादय बोज़।।

✷

लीला 58

छ़ुख मोक्ष दाता पानु च़ुय, केवल सतुक व्यच़ार दिम।
यिय गछ़ि आसुन तिय मे दिम, योगुक तु ज्ञानुक सार दिम।।

सन्मुख यितम सोरुय नितम, ह्युतमुत यि छ़ुथ फीरिथ ह्यतम।
भक्ती दितम भक्ती दितम, भक्ती हुंदुय दरबार दिम।।

मस्ती होशस सुत्य मंगय, मतु नच़ुनावतम दिथ बंगय।
भक्ती कुनय जामय रंगय, सुय रंगनुक व्यसतार दिम।।

मूहकिस ज़िनिस दज़ुन स्वभाव, च़ुय ज्ञान रूपी अग्न हाव।
भक्ती हुंज़य रेह प्रज़ुलाव, अज्ञान शोरस नार दिम।।

ममतायि लंका ज़ालतम, भावुक विभीशन पालतम।
श्री राम मुह मद गालतम, यथ भवुसरस मे तार दिम।।

शक्ती तु मुक्ती शूभि च़ेय, मन क्याज़ि तथ प्यठ लूभि मे।
भक्ती दितम भक्ती दितम, भक्ती मे बारम्बार दिम।।

छुख बेद रोस्त शिव कृष्ण राम, आसन कोरथ प्यठ परम दाम।
प्रारन छुसय च़ेय निशि यिनस, जल्दी मे व्वन्य आंकार दिम।।

मिथ्या पदार्थ क्याह मंगय, तमि भोगि व्वन्य आसय तंगय।
शाँत गछ़ अदु सुत्य सत्सगंय, यिछ़ि भक्ती हुंद आच़ार दिम।।

वाँसा गॅयेम मिथ्या वनन, क्रय करन रोस छा कॅंह बनन।
छुस लूब फल पेहनस अनन, व्यन्य ग्रटुचिय अनुवार दिम।।

करनावु तारस चुय स्वरिथ, तारुम मे तारस थफ कॅरिथ।
पारस बनावुम शस्तुरस, नारस कॅरिथ गुलज़ार दिम।।

छुय क्या मे च़ारुन छोत क्रुहुन, छुम मंज़ु प्रथ भूगस चुहुन।
छुम अरसरव रोस्तुय बिहुन, शेमरिथ मे येंद्रिय द्वार दिम।।

काया छे म्यॉनी द्वारिका, चुय छुख कृष्ण परमात्मा।
मंगन सुदामा छुस भिक्षा, सर्वु ऐश्वरी यकबार दिम।।

✺

लीला 59

राधे श्याम हरे कृष्ण, अरे प्रभू गोपाल।
गोपीनाथ मक्खन चोर, मदन मोहन लाल।।

मेरा मन है जमुना जी, वृत्तियां गोप ग्वाल,
वह है प्रेम अमृत रूपी, जल से माला माल।
उसमें नहाओ खेल बनाओ, बालकपन की चाल।। गोपी०

देह भ्रमरूपी शेर को है, मद से आंखें लाल,
उसको पकडो खेंचो बांधो, मारो उतारो खाल।
इस सिंह आसन के ऊपर, अपना आसन डाल।। गोपी०

हम तुम पर अर्पन करते हैं, तन मन अन्न दन माल,
सब प्रानों से तुम प्यारा हो, न्यारा हो अकाल।
हमको मोह से मद भ्रम से, दुख से गम से टाल।। गोपी०

क्या करे हमको मथुरा काशी, गोकुल ब्रज नेपाल,
साडी चित्त नगरी में बसिया, तुम हो दीन दयाल।
भगतों का तुम पालन वाला, तीनों जगत का पाल।। गोपी०

हम ग्रहस्थ में फँस गये हैं, काटो माया जाल,
फकत तुम्हारा आसरा है, देख हमारा हाल।
कृष्ण को शुभ दर्शन देवो, लेवो अपने नाल।। गोपी०

✸

लीला 60

वाक्य

(प्रानु स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी)

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ॉनिथ सुज्ञान, विज्ञान मोनुथ प्रकृथ लय।।
ज़ॉनी ज़ान परज़ान परमात्मय, तवु ज़ाननु सपनक देव तन्मय।।१।।

वनखय केंह वन छ्वोपि हुंदि मुखय, बोज़खय केंह, बोज़ त्रोपरिथ कन।।
यछखय पूर्ण हृदय स्वखय, कर्म कर केंह बॅनिथ निश्चल मन।।२।।

केंच़व वोनुय वुछुन केंछ़ाह, वुछवुन्यव केंच़व केंछ़ाह नु।।
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस, कारन कुनि केंह रेछ़ाह न।।३।।

केंच़व मोनुय केंह क्या वुछुनुय, वुछवन्यव वुछुन केंचव मोन।।
केंह केंह केंच़व अनुसंधोनुय, केंच़व बह्य ज़ॉन्य ज़ॉन्य पर ज़ोन।।४।।

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे, अन्तर्म्वख सुय उलसावे।।
सन्म्वख भावय सुय शिवु मुख हावे, एकाकी शख्ती दोयि म्वख छय।।५।।

पोज़ पॅज़ुराव पोज़ पज़ि निशु अनुभाव, पॅज़ि यार्यव पज़्युक रछ़ भाव।।
पचनुय पालुन अपुज़ गालुन, अपुज़ भ्रम पोज़ ब्रहम स्वभाव।।६।।

पज़्यव कनव यिमव बूज़ुय पोज़, पज़रुक निर्णय पोज़ तत्क्षन।।
क्षण क्षण सत अमि किन्य नित्य स्यज़रुक, रज़नी दिनय शोमरिथ मन।।७।।

पॅज़िस प्यठ यस यछ़ पछ़ आसिय, पज़ि पुछि रावुरि न्यन्दर तु नेह।।
पोज़ बोज़न रसु मस चॅयि खॉसिय, पज़ि बिना भासि नु तस कुनि केंह।।८।।

भय निशि रछि रव ज़न गाह छ़टे, छ़टे मजंय डेंयठे गाश।।
भैरव भक्तयन रछि मंज़ त्रटे, छटि गटि प्रख्टावि स्वप्रकाश।।९।।

✸

लीला 61

ज़ाख नंदु गोरिनि अकु नंदनय।
आख ज़गि कासुनि मोह अंधकार।।

यादव क्वलुके क्वलु दीपकॅय, लोलु चानि शोलवनु आव संसार।
व्वलु सोन अज़ छय पोशु पूज़ॅये, आख ज़गि कासुनि मोह अंधकार।।
लोलुक्य मंज़ुले लोलि लोलि करहय, म्वल्य हेमहत छिम न म्वख्तु तु द्वार।
मुक्त गछ़हा चानि शुभ दर्शनय, आख ज़गि कासुनि मोह अंधकार।।
ज़्योन चोन ज़गि मंज़ सिरियि उदये, नतु ज़न ज़गि मंज़ प्रान आदार।
लगुहाय नावस रघु नंदनय, आख ज़गि कासुनि मोह अंधकार।।
साक्षात्कार चोनुय अवतारुय, चारु म्योन भवसरु लगिहेम तार।
'परमानन्दने' कृष्णु गंदरय, आख ज़गि कासुनि मोह अंधकार।।

✸

लीला 62

कस क्या छु ज़ेनुन येमि संसॉरी।
सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

कोत गॅयि बब तु मॉज बॉय बंद तु यॉरी, अख ॲकिस तिम नु कॉंसि प्रॉरिये।
तॉर लॅजिनु तस यस येलि वॉच़ वॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

येमि देहु पुछि कॅर म्य जॉन निसॉरी, बारेन प्यठ खॉर्‌य बॉरिये।
कुनि विज़ि दज़ु पतु च़ेन्तायि नॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

केंच़न गुर्य हॅस्य रथु सवॉरी, कॅंह न्यथुनॅन्य तु ननुवॉरिये।
वुछ्यॅ वुछ्यॅ बुछ्यॅ यिम कालु शाहमॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

नामु रूपु जंगलस कर्म कुल्यॅ बॉरी, विज़ि विज़ि गॅयि उजॉरिये।
उत्पन्न ब्योन ब्योन उत्पात सॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

वासनायि ब्योल बेयि नवि नोव खारी, बोवि बोवि बारम्बॉरिये।
वॅव्य वॅव्य लोनुन हरदु तु हॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

ज़गत अरहटस देह तोलु वॉरी, कर्मु रज़ुनुय चॉर्‌य च़ॉरिये।
छरि लटु लटु छख पोन्य सॉर्‌य सॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‌य हॉरिये।।

मनुष्य मोर प्रॉविथ देव हितुकॉरी, यथ मंज़ सर्व आधिकॉरिये,
गछ़ि न रावरुन छु दूर्लब तु दुशवॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

छ्यनु गोमुत पान परमु सुखु धॉरी, मटि ह्यथ कर्मु द्रख भॉरिये।
मोह भ्रमु राज़ु ऑसिथ बेचॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

बॆयि कॅच़ मोकलन यॆमि अंदकॉरी, सत् सिरियिकि चमत्कॉरिये।
च़लनस न्याय बलनस बेमॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

यॊद कॉंसि मुच़रन बरन्यन तॉरी, अनुग्रह अनुभव दॉरिये।
च़ारनस तु खारनस लगि विच़ॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

भक्ति श्रवनन बोज़ि कन दॉर्‍य दॉरी, प्रेम नेत्रव ओश तॉर्‍य तॉरिये।
साधन ग्वरन लॅग्य पादन पॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

वनुनस तत्व उपदेश उपकॉरी, करनस पारँ पॉरिये।
बे इख्तियार यॊद बनि बा इख्तियॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

'लक्ष्मण' परमु आनन्द च़्वापॉरी, सॉक्षी छु साक्षात् कॉरिये।
पानय पानस करि उद्धॉरी, सॉरी गॅयि हॉर्‍य हॉरिये।।

✸

लीला 63

काँसि यम बय चोन प्रेयम तु लोलो।
ज़्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।
नेत्य नियमु युस ज़ि करनस लगि भक्ति चॉन्य,
मनु त्वरगस हेंकि रॅटिथ वगि भक्ति चॉन्य।
पय सहज़ुक दियि रगि रगि भक्ती चॉन्य।।
अनुभव भोवि अनुग्रेह अगम तु लोलो।।
ज़्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।
पतु लारनस अष्ट स्यज़ स्योद वुछख नु ज़ांह,
असि सारिनुय सु गोमुत प्रोद वुछख नु ज़ांह।
तस विन युस छु सारिनुय थोद स्योद वुछख नु ज़ांह।।
शान्त एकांत प्रावि शम दम तु लोलो।।
ज़्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।
कॅंह ति रोज़्यस नु ज़ानुन नॅ अज़ानुन तस,
स्वाद अस्वाद निशि केंछा न स्योन न नून तस।
कॅंह खटुनस लायख तु नोन वनुन तस।।
स्वख द्वख क्या अथ्य दोपुख सम तु लोलो।।
ज़्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।
दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल,
दिस प्रथख तय प्रथमुय दिस मृत फल।
कान नेरि क्या निर्णय कानय फल।।
मोक्त फॅलिसुय तॉर्यज़्यस नु त्रम तु लोलो।।
ज़्योन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

गाल हन हन कालुन त्रास मॅशराव,
ज़ाल मॅर मॅर सोर वसुवास मॅशराव।
वर्ण आश्रम कृत तु सन्यास मॅशराव।।
बोध पनुनुय छु सूद सूहं तु लोलो।।
ज़्यॊन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

वेद पुरान शास्त्र यॅच़ पॅरय पॅरय,
कर्म कॅरयज़्यनु अभिमान सच़ कॅरय कॅरय।
मशन युस ब्रुज़ बूज़्य बूज़्य यॅच़ सॊर्य सॊर्य।।
तॉर छॊनु तस तार तारि ओम तु लोलो।।
ज़्यॊन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

यॆलि तेलिय अँन्दरिम लोलुक स्नेह,
तॆलि मेलिय पानस ह्यु लुकु स्नेह।
खेलि अन्तर बाहिर बुकु बुकु स्नेह।।
छुन परवाय गेलि आलम तु लोलो।।
ज़्यॊन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

कथु करुनस तु मरुनस छुन हिशर,
मानि बोज़ुनस परुनस छुन हिशर।
द्यान स्वरुनस तु शरुनस छुन हिशर।।
च़मि तस युस बनि छ़ॆय च़मि तु लोलो।।
ज़्यॊन मरुन तु युन गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

'परमानन्द' परम आनन्द प्रॉविथ,
प्रानि नोव नोव सांग नोव जंद प्रॉविथ।
नावि तरि अथु छॊन्यॅरुक चंदु प्रॉविथ।।
रूज़िज़्यनु कुनि नज़ि दिज़ि तम तु लोलो।।
ज़्यॊन मरुन तु युन. गछुन छु भ्रम तु लोलो।।०।।

लीला 64

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल।
ज्ञानकुय लाग ॲछन अंजन अज्ञानकुय पोह मे गाल।।
भवसरय फोटमुतुय छुस मोह मायायि वोल मे नाल।
छुस नु ज़ानान बोठ खुसिथ व्वन्य अथुरोट करतम दयाल।।
सत असत विचार छुम न कामु यन्दुल्य छिम पतय।
असतुचि हांकल मे च़टतम हावतं सतचिय वथुय।।
काम कूदन लूभ मूहन छुस बु कोरमुत ज़ेरबार।
भवसागर दु:खु गरु मंज़ अथुरोट करतम दयाल।।
दीनु वत्सल रछ पद्यन तल आनन्दुक अमृत मे चाव।
यव किन्य शांती मे बनिहे वैरु भावस गछ़ि अभाव।।

✷

लीला 65

ज़न्मस यिथ येति कैंह छुन लारुन।
धारनायि धारुन गोविंद गो।।

अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन, नित्य नियमु स्मरणि वायुन ह्यू।
धैर्यच यॅट फोरि दतु फुटरावुन, धारनायि दारुन गोविंद गो।।
युस करि स्वमनु दारुन तु पारुन, ती छुस लारुन संसारस।
तवु खोत रुत छुय पर उपकारुन, धारनायि दारुन गोविंद गो।।
धनु द्यार अथे ग्यिथ मॅशरावुन, कर्मुचि वति प्यठ दर्मस द्यू।
येति नो प्रोनुय फोत छुय लारुन, धारनायि दारुन गोविंद गो।।

दांद हुर नँदिरे सुलि वुज़ुनावुन, कल करुनावुन सू हम सू।
'ललद्यद' गुरु ह्यथ स्वरूप वुछुनावुन, धारनायि दारुन गोविंद गो।।

✷

लीला 66

ललुवान सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि हेरि ब्वन, छम वज़ान ज़ीरु बम तार।
ह्यसके मयखानु मस येलि बु चोवनस, भोवनम सीरि असरार।।
आलव तोरय गोख दॅर्याव दामु चोख, शोकन कौरुख मिलुच़ार।
सतवुय आकाश सतुवय पाताल, तल प्यठ दिथ कुनुय ठान।।
गाह गटु गाह गाश गाह प्रकाश नूरान, यकसान सोरि सामान।
रंगु रंगु बेरंग सूरत स्व मूरत, नॅन्य द्रायि दरुबाज़ार।।
गगुनय पवुनय लागुनय बागुनय, सथ नयि बॆयि नव द्वार।
सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि, म्वलुवान ह्यथ खॅरीदार।।
पनुनुय ह्योन द्योन पनुनुय बाज़ार, पानय ग्राख तु सोदागार।
हर्दु सोंतु कुनिरस वोंत कुनि लोबमस नु, दर्दु नयि फेरि शेहजार।।
सथ पर्दु च़ॅट्यथुय हूरु द्रायि वनुवान, पोशन करिख तूमार।
ग्रख लॅज सोदरस दरवाज़ु खुलु गॅयि, अनुग्रेह ह्युतुक अंबार।।
कंदपोरि ज़ूनि डबि शेश तु रव सॉविथ, नॉविथ अँद्रमि तोंदर प्रान।
गटि मंज़ 'भास्कर' सास भासुनॉविथ, सुय प्रावि शांत आकार।।

✷

लीला 67

सुन्दरो स्वनु संदल गरय।
हो हो करय श्यामु सुन्दरय।।

गोपिय प्रारान गोकुलय, वेरि चानि फेरान निर्मलय।
खेलव तु मेलव अमरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

जसोधा वुछतोन भाग्यवान, टोठॅयि यस यिम ज़ु सन्तान ।
भलभद्र तु बॅयि कृष्णु गंदरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

अॅतुरे पलंग पॉरावयो, पॉटिय करुछ़ वथुरावयो।
अंज़लि दशन मोक्तु हो जरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

गलि गलि द्वद बु चावथो, फलि फलि नाबद ख्यावथो।
बादाम कंद चंदु हो बरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

आसान छुख कैलास कोह, बासान छुख येति रात तु दोह।
हरमुख कॅय गंगाधरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

नॉल्य मालु ख्वॉल्य कनुवॉल्य, रंगु रंगु जाम ज़रुकारय।
शीतल स्वभाव पीतांबरय, हो हो करय श्यामु स्वन्दरय ।।

✱

लीला 68

करुम मे हे प्रभू मंगल। वरुम चरनार्बिन्दन तल।।

शरण आसय बु दयि नावस, चु टोठ्योख शरनय भावस।
गँड़िथ छुस भक्ती हुंद अंज़ल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
वुज़ान छुम चानि प्रेयमुक स्नेह, करुम अनुभव मे नोन अनुग्रेह।
गछ्यम युथ वासना नेर्मल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
दि मे शक्ति पातकुय प्रसाद, बुछान छुस कोनु चॉनिय पाद।
तवय छुम चित गोमुत चंचल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
छु चोनुय आसनुय संमुख, छ्यनन द्रख प्राव नेभर्य सुख।
मे स्वय भक्ती गॅयम स्वफल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
छोचर छुम ओसमुत कर्मुक, यि ब्राहमन ज़न्म छुम धर्मुक।
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
बु छुस पुनर् आवृती कालन, फसोवमुत वासना ज़ालन।
मे कास अविद्यायि हुंज़ गांगल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
गछ्यम सत्ज्ञान त्युथ उपदुन, यियेमु युथ दृष्टि मंज़ दोन कुन।
छु सू हम नाव युथ केवल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
मे रोज़ुन गछ़ि नु रज तय तम, बनुन तत सत गोछुम उत्तम।
छुसय स्वभाव किन्य शीतल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
दया हुंज़ दृष्टि कुन केवल, करुम अंतर बाहिर निर्मल।
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
दितम वेचार अग्नुक बल, दज़न कामादिककक्य जंगल।
वुछन स्वप्रकाशचिय वुज़माल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।
हे केशव, केशव अर्पणय, सदा नेर्मल सुदर्शनय।
मे फोलुनाव द्वादशांत मंडल, वरुम चरनार्बिन्दन तल।।

लीला 69

भगवानु तमि कालु कर मे अनुग्रह, येमि कालु प्राण अंत आसि मे।
चानि अनुग्रह रोस ईश्वरु, कर्मु न्याय कुस कासि मे।।

सार्य त्रॉविथ रोट मे दामन चोन कामन सिद्ध मे कर,
भाय बंध संतान नारी यिम छि अस्थिर छुख चु स्थिर।
नाव चोन लयि लछ करोरुय दिम पनुन भक्ति भाव मे।।
बालु भावु किन्य ग्युंद मे हारन ग्रावु व्वन्य बु कस करय,
वक्त सख्ती छमनु कांह छुस तारि गोमुत शशदरय।
छुम मे तकसीर पानसुय चॉन्य नामु सुमर्ण करु नु मे।।
कर्मु फल किन्य ल्वकुचारस रंगु रंगु भूगिम वेशाद,
यावनस मतुवालु सॉंपनुस कालु भय रूदुम नु याद।
बुजरस मंज़ अंत कालुक छुम स्यठाह वसुवास मे।।
राज़ होंज़ाह ज़ालु लोगनस कठिनिय कर्मय फलन,
ज़ांह कॅरम न रामु सुमर्ण साधु सेवन हरि बजन।
लाल अथि यिथ रावुरोवुम सुय खोतुम अपराद मे।।
अंत:करनन ज़न्म ज़न्मन हुंद मे सार्योमुत छु मल,
आदि दैविक आदि बौतिक आद्यात्मिक कर्मु फल।
कर दया पनुनिय प्रभो, वेच़ारु मन शुज़रावतु मे।।
यीरु गोस भवुसागरस मंज़ धैर्य भाव रूदम नु कॆंह,
गोपाल चॉनिय छम मे आशा पान म्योन मटि छुय हा च़ेय।
म्योन रुत क्रुत छुय च़े रौशन थफ कॅरिथ बोठ खार मे।।

अंत समयस टाठि छि खोचान अख ॲकिस पथ कुन चलान,
पानुवन्य अख ॲकिस वनान वुछतु वुनि छुस शाह खसान।
वुछतु ब्रम बॉज़्यगार यि संसार स्नेह तिमन रोज़ान नु कैंह।।

हे प्रभो, बोज़ तु मे ज़ॉरी सर्वु ख्वॉरी कास्तम,
वक्ति पोरी दस्तगीरी कर प्रबो, चॉन्य आश छम।
छुस पथर प्योमुत मे थर छम करतु गमु मंज़ु शाद मे।।

निरुअर्थ आत्मा कोरुम हाय व्वन्य बु कोताह छुस पशन,
पतु नार छुम ब्रोंठ छंब आमुत तु चामुत छुस गशन।
कर दया पनुनिय प्रबो, छम चॉन्य वाराह आश मे।।

छुख क्या दया सागर करतम शरण बो आस चेय,
विष्णापर्ण करतु म्यॉन्यन सॉर्यनुय पापन चु क्षय।
अंत कालस हाव मे दर्शन सर्वु संकट कास मे।।

✱

लीला 70

भक्ति वत्सल मोनुख म्यॉन्य मननुय।
शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल।।

बूज्य बूज्य श्रवनुय तु कॅर्य कॅर्य मननुय, निदि द्यासन ज्ञानु द्वीप प्रज़लाव।
साक्षात्कार छुख शिव रूप ननुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल।।

आदिकार द्युतमुत छुय सत ज़ननुय, मंज़ छिय अंद ह्यथ माया ज़ाल।
निर्गुण लगयो यिथुनय गुणनुय, शक्ति नाथु गंडयो मननुय माल।।

भीषण यिम मुख च़ेय कुन अनुनुय, तिमनुय आय मंगि काल यॅचुकाल।
तिहंज़ि अॅछनाटि मंज़ कल्पांत बनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

च़ित्त आकाशु हाव न्यथ मुख पनुनुय, छ़ारनस लोगमुत छुस बु पाताल।
ओन छुस ख्वनुवटु ख्वड छुस खनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

युथ छुख तु त्युथ छुख क्युथ छुख ननुनुय, सुय ज़ानि यस बनि युथ ह्युय हाल।
वोन दिथ छु नोन वुछ्य वुछ्य ओन बनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

देह अभिमानुक कुल हेयि छनुनुय, तीव्र वैरागुक सूराह मल।
शिवु रूपु ती बनि यियि पॅह्य पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

लोलु आलव ओश फ्योर कननय, चान्यन गछ़ि ना, तर छिम लाल।
सुय म्वखतु बनिहस यथ छि म्वखतु वननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

पज़ि भावु पान प्रमान नाव पनुनुय, शाह पूर वरताव अथि ह्यथ माल।
मंज़ बाज़ारस वान लोद निर्धननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

हेलि हेलि लावि लावि मावि मावि गोनिनुय, कुनिरुकि खलु फलु वॅछ़ मोक्त हाल।
गाटस गाटु प्यव हुरिरस छु छ्वननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

नियमुचोन नॉर्य्जन यमुक्यन यननुय, सम दृष्ट जल फ्यूर माला माल।
निष्काम कर्मु बूमि कल्पवृक्ष बननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनुय माल।।

यूग अगन बिन छुस ज्ञानु अन्न रनुनय, योगेश्वर छुय मूर्खु सुंद साल।
अन यछ़ा करतम अनुग्रेह पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

दय धन प्राप्त प्रथ कॉंसि बनुनय, बानु रॉस्त कर्मुहीन छुस कंगाल।
बडि भगवान लदतम बानु पनुनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

गंड गंड वुनि छम आम्यन पनुनय, वर दिम इन्द्र चन्द्र छुख द्याल।
दॉगनाव उल्लंघित छुख त्रेयन गुणनय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

शक्तिपात सुत्य भक्ति भाव न्यथ ननुनय, भक्त कर मीना भाव हीमाल।
ताह खोल वर दिनुक्यन वर्दननुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

थप कॅर मनस चित्त आनन्द गनुनय, तप गव सिद्ध अथि म्वठ ज़प माल।
मस्त कॉरनस यिथिय प्रेयमु मस चनुनय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

मीनायि हीमाल पर्बत वनुनय, च़क्रेश्वर छुय त्रिज़गत पाल।
सार्य दीव च़क्रस फीर्य प्रदख्यनुनय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

'कृष्णस' हरुमुख मुख हाव पनुनुय, थपि खारतन प्यठ सूहम बाल।
फीर्य फीर्य नीर्य नीर्य नेरनुय नयिनुय, शक्ति नाथु गंडयो मनुनय माल।।

✲

लीला 71

गूकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वानु।
च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

वॅ्च़ म्यानि गोपियि च़ेय पतु लारान, बन्सरी नादु वादु मतानो।
नॅशरिथ ह्वस तु होश, मॅशरिथ पर तु पान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

अथुवास च़ेय सुत्य रास आसु खेलान, व्यास नारद ति तति आसानो।
दासु भावु राधा कृष्णु कृष्णु ज़पान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

दीवियि तु दीवता सीव च़ेय करान, भवसरु तवु तार लबानो।
ग्यवान रिवान ज़्यव छखनु लोसान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

असवुनि कोसम मुख चानि फ्वलान, कोस्तुब नजि आसि शेहलानों।
कौस्तुब त्रॅटि तु मालु आसुहोय पॉरान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

मायायि सुत्यन चु शायि शायि आसान, कायायि मंज़ भिन्न नु रोज़ानो।
सिर्यिकि आसनु छाया छय भासान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

आकाशु मुखु छुख आकाश भासान, तत सत प्रकाश आसानो।
देवन हुंदि देव प्राणियन हुंदि प्रानु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

युस युथ स्वरिय तस त्युथ छुख हावान, मुख हाव मेति श्री नारायणो।
प्रारनुचि फुरसत छमनु रूजमच़ दानु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

युस यी येछ़ि तॉय तिथुय छुय प्रावान, कर्मु फल दातु च़ेय वखनानो।
ह्योन द्ययोन पनुनुय लूक लूकन बहानु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

क्षमा मूर्खस गाटुल्य छि करान, गाटु छुख नु तमि सुत्य प्यवानो।
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस यी जान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

तगिहेम तु जगि मंज़ आसह्य थ्यकान, वनु कस काँसि छुनु व्यॅपानो।
कुनरचि कथ छय सनिरस श्रपान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

सिरियि च़न्द्रमु रोस ज़ग छा प्रज़ुलान, भगवानु रोस प्रान अप्रमानो।
लगुहस नित्य नियमु रोज़िहेम सन्निदान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

दास छिय अॅस्य चॉन्य कोनु छुख मानान, लॉगिज़िनु पनुन्यन बेगानो।
शरुम छय ना छिय शरन यिवान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

वननुच जाय छमनु वनुन कवु ज़ानु, सननु चियि कथ छय ब्याख आसानो।
बनि यस यि पानस सु वॅनिथ नु ज़ानान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

बाकि बाकि वदुनस ति वाख छिनु फोरान, साक्ष छेनु अन हित आसानो।
चाक गॉम जिगरस आख छिम नु बलान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

छुसनु डेंशान बो दीशु दीशु छ़ारान, प्रारान छुसस छुम नु यिवानो।
पॅद्य लूस्यमुत्य वॅद्य वॅद्य च़ॅड्य भरान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

अंत छुनु भगवत मायायि आसान, दयायि तति कुत्य छ़ारानो।
छ़ॉरिथ तु गॉरिथ लॅबिथ तु रावान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

गिंदनस रंगु रंगु तंगु छिनु यिवान, मंगु हाय बुति श्री नाराणो।
हंगु तॉय मंगु रोज़तम संतुष्टान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

हे कृष्ण पाप सॉन्य चुय छुख डेंशान, शाप कास असि अॅस्य छि नादानो।
क्षमा कर यवु पायस छि प्यवान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

भगवत मायायि कांह छुनु ज़ानान, तस त्युथ छु युस युथ छु मानानो।
मानु अवमान रोस्त चुति मान बुति मान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

युस नु ज़ाव कुँसि तॉय कांह छुसनु ज़्यवान, ज़ीव आनुमॉनी यस छि ज़पानो।
ज़ानि सु सोरुय तु ज़ानि तस कांछ़ा नु, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

ब्रह्मा ति छुन च़ोर वेद ह्यथ पोशान, तोतनस यूत तस पज़ानो।
शेषनाग सासि ज़ेवि सुति कोल गछ़ान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान, दय नज़ि मनि कुनि आसानो।
बुय च़ेय अर्पन तु चुय म्योन आसान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

धनु द्वार पतव त्रॉविथ छि गछ़ान, भाग्यवान तिम यिमन नु आसानो।
सन्तोश वृत्त दिम छिम तिम नव निदान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

सन्तोश वृथ दिम छिम नव निदान, तृप्त कर म्य सत स्वरूप ज्ञानो।
यथावत युथ बु आसुहथ वुछान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

दयायि सुत्य ओस भगवान वनान, आँतिस बौडिस तारु तारानो।
करुना करुनावि अपोर तारान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

यस कांह नु तसु रौस्त ज़गि मंज़ आसान, पानु वनुनस तु पानु बोज़ानो।
स्वरूप छु करुवुन पानय आसान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

अमृतमय वर्शायि सुत्य वनान, वॅनि यिनु के मुख चवानो।
ॲस्य ॲस्य ति सुय सुय ती आसान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

'परमानन्द' परम आनन्द प्रावान, सूरमौत हनि हनि आसानो।
राधा माता तु बब कृष्ण भगवान, च़्यथ विमर्श दीप्तिमान भगवानो।।

✷

लीला 72

शुभ मुख हाव मेति अमृत चावतम।
सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

ग्वड् सत् गुरु सुंद ध्यान स्वरुनावतम, दमु दमु अद च़ेय कुन न्यमुहा।
रात दिन अख क्षन छ्यन मतु थावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

ज़न्मस यिथ कर्मु खुर संभालतम, मतु दिशिरावतम सादन मंज़।
मनचे कलि येंद्रेय चूर मत पावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

दह शोमरॉविथ मद होस पावतम, काहन हावतम कुनिय वथ।
सू हम शब्दु निशि ब्योन मतु थावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

शिशरम नागु सरु तन नावनावतम, मतु वुछ तु म्यॉन्यन क्वकर्मन कुन।
मोहुनि सुंद्यि मेति अपोर तारतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

क्षनु क्षनु पनुनुय द्यान दारनावतम, स्वरुनावतम ती यी पज़िहे।
कामदेव श्याम स्वंदरु लटु मतु द्यावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

विश्वभर पनुनुय शुभ मुख हावतम, रोज़त तु भावहॉय पनुनुय हाल।
मॅशरोवमुत नाव चेतस पावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

वनुमाल दॉरिथ दर्शन हावतम, हावतम पनुनुय प्रकाश रूप।
दोह गोम लूसिथ मतु प्रारुनावतम, सत् गुरु हावतम गटि मंज़ गाश।।

*

लीला 73

शिव नाथस प्यठ सपज़ुक सॅतिये।
श्री पारवॅतिये भविनय जय।।

पूज़ायि पोश लागय लवु हॅतिये, ॲकिन गामि आसवुन्य छख शिवा।
रक्त बीज़ मॉरिथ छख पानु तॅतिये, श्री पारवॅतिये भविनय जय।।

पोश सोंबरॉविम व्वज़ुल्य नील्य छॅतिये, पूज़ा करुहय इष्ट दीविये।
ज़ारु पारु वारु बोज़ छिय आर कॅतिये, श्री पारवॅतिये भॅविनय जय।।

अमरनाथ कैलासुक्य सूरु मॅतिये, वॅरनख तु कॅरनख अर्दु शरीर।
नित्य छख आसुवुन्य तस सुत्य सॅतिये, श्री पारवॅतिये भॅविनय जय।।

अष्टु स्यज़ सुत्य छय ब्रून्ठय तय पॅतिये, शिव शक्ति रूपु छख सर्व व्यापक।
'कृष्णस' टोठ छख बोज़ान यॅतिये, श्री पारवॅतिये भॅविनय जय।।

✹

लीला 74

प्रेयमु पोश लाग शेरि तसुंज़े।
वेरि करवॉय रोवये।।

होश बुलबुल प्रान पोशुनूल, ध्यानु कुल्य चावु फोलनम।
प्रारवुन रोज़ु खबरि तसुंज़े, वेरि करवॉय रोवये।।
भावु भम्बूर द्राव गोशस, पोशु बागस च़ाव मंज़।
करिनु गूँ गूँ असुंज़ि वेरे, वेरि करवॉय रोवये।।

सॅमिवि सॅखियव अस्त अस्तय, तस लागव भावु पोश।
यस नन्द लाल नाव प्यवये, वेरि करवॉय रोवये।।
शशकॅलि प्रावख अदु चाव, ज़ाव, अमृत द्राव नोन।
श्यामु स्वंदरन दामु च्यवये, वेरि करवॉय रोवये।।
आव सोंत तॉय छाव अछि पोश, च़ाव बुलबुल बागनुय।
त्राव मोह जंदु वंदु कवुये, वेरि करवॉय रोवये।।
नोन सु वुछतु जानावारय, म्वख्तु हारुय आव ह्यथ।
ज़ीव डाल दिथ द्राव बरिये, वेरि करवॉय रोवये।।
ह्योछतु वारु करतु चारु पनुनुय, द्यान दारनायि दर द्यान।
ज़ान प्रान मा छु मूर्ख प्रॅवये, वेरि करवॉय रोवये।।

✷

लीला 75

पादि कमलन तल मॉज्य मेति वरतम।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।
कष्ट दूर करतम संतुष्ट रोज़तम,
बालकस नालु तॉय फरियाद बोज़तम।
पाप शाप कास्तम संताप हरतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।
म्योन हाल पानस छुय ना रोशन,
बे होशस मेति अनतम होशन।
तोशतम मनि मंज़ लोलु रस बरतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

कन थव म्यान्यन ऑरत्यन नादन,
आसय शरन बोज़ तम फॅरियादन।
सॉर छख चुय मॉज्य धारनायि धारतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

भय दूर करतम येमि संसारुक,
मटि बोर वालतम ख्वटि व्यवहारुक।
तंग आस येमि निशि वासना फिरतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

ज़ोदहान भवनन माता चुय छख,
दाता चुय छख त्राता चुय छख।
रूग तु शूकु निशि जल चुय मे कडतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

वदवुन बालुक मॉज्य छुस प्रारान,
थोद तुलतम यितु लारान लारान।
दिलासु दितु मेति ओश वॅथरावतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

दिनस तु क्षीणस सथ छम चॉनिय,
भास्तम हृदयस मंज़ हे भवानी।
दासस त्रास तॉय वसवास हरतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

संसारु द्वैतन बुय रोटमुत छुस,
द्वख सागरस मंज़ बुय फोटमुत छुस।
खारतम आवलुनि मतु मॅशरावतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

पाय म्योन च़्रेय रोस कांह करि न माता,
उपाय रस्त्यन चुय छख त्राता।
कास्तम अंधकार दास गँज़रावतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।
विलुज़ार मॉज्य बोज़ चुय 'नीलुकंठस',
शील हर चुय छख आशा चॉन्य छस।
भक्ति भाव पनुनुय मेति पुशरावतम।।
अनुग्रेह करतम मॉज्य, अनुग्रेह करतम।।०।।

✷

लीला 76

गन्योमुत छुम मनस चोन भाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।
मे आमुत लोलु बानन छाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
ज़गत माता चु टोठान छख, भगत संताननुय बेशक।
ह्यवान युस लोलु सुत्य चोन नाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
मे वोल शानव प्यठुय बोरुय, मे पशुरोव पान च़्रेय सोरुय।
मे केवल चोन छुम चिकु चाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
बु छुस पज़ि किन्य स्यठा नादान, करान छुस पाप छुस अनज़ान।
करुम माफ छुय च़े माता नाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
प्रेयम नगरस अंदर च़ामुत, बु चाने डेडि तल आमुत।
प्रेयम अमृत पनुन दोद चाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
तॅमिस क्या गम यॅमिस यावर, चु आसख ताज दिथ बर सर।
शत्रु सुंद पोरि कति तस दाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।

वदान छुस चॉन्य घनेयम कल, दॅलिस तल माज्य ह्योतम जल जल।
मे सतुचे प्रेमु नॅदिरे साव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
वनान छुस वीलु तय ज़ॉरी, थोकुस यूत काल प्रॉर्‍य प्रॉरी।
मे लोकचार गव बुजर व्वन्य आव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
ज़गत माता मे संत्वष्ट रोज़, वनान ज़ॉरी छुसय च्रेय बोज़।
पनुन्य दयगथ दयालु हाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
बु छुस हियि गोंद च्रु कित्य सारान, प्रेमु सान डेडि तल प्रारान।
च्रु प्रेमुकि भावु हियि गोंद छाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।
छु 'बागवान' च़ेय परन प्योमुत, गॅंड़िथ गुल्य च़ेय शरन गोमुत।
छु स्मुराण चोन हर दम नाव, ज़गत माता मे दर्शुन हाव।।

✵

लीला 77

द्रौपदी विलाप। जय राधा कृष्ण।।

श्लोक:- हा कृष्ण मनसा वॉसी कॉसी यादव नन्दन।
इमां अवस्थां संप्राप्तम अनाथम किं न रक्षसि।।

व्वलो श्यामु लालो बु कोताह यि च़ालय।
सभाये अंदर छिम कडान जामु नालय।।
लॅजिस व्वपरन मंज़ वॅजिस कॅम्य बु शापन।
गॅजिस शर्मि दावय लॅजिस गिल बु जालय।।
मे वुन्यक्यन करान छुम नु कांछ्रा हेमायत।
यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत मे क्रपालय।।
च़े रोस्तुय रछ्यम कुस अबल छस बु नॉरी।
च्रु रछतम तु वुछतम छसय कमि हालय।।

पॅयिय मा नॅंदुर च़ेय सदा छख नु बोज़ान।
गॅयिय कोत दया वुन्यक्यनसु हे दयालय।।

चु छुख दीन बंधो मॅ मॅशराव दीनस।
हृषीकेशु अशने हरान छसया च़ालय।।

मे व्वन्य रूज़मुच़ छम नु काँसि हुंज़ आशा।
तमन्ना मे टाठि छुम रटहथ बु नालय।।

सबासद बन्येमत्य छि मोनुक्य चित्र ज़न।
दया छख नु वुन्यक्यन यिवान हे दयालय।।

दया सागरो कर दया 'नीलकंठस'।
चु दिस पानु दर्शन यिस अंत कालय।।

✷

लीला 78

ओरुत प्रारान छुस बर तलय, बलय दर्शनु सुत्य।
गनेमच़ मॉज्य छम चॉन्य कलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

संसारन मे ग्युंदनम छ़लय, मिलनोवनस मेच़ि सुत्य।
अज्ञानन बु कोरनस नलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

मायायि कोरनम मन च़ंचलय, मस्त गोस लूभस सुत्य।
मोहन आवरुस रोटनस तलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

पापन हुन्द्य बार्'य छि अल अलय, चॉरिथ छुम रज़ि सुत्य।
मॅंज़िलस किथु वातु छुस नेर्बलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

सोरुम नु नाव चोन सुय छुम मलय, छ़योनुस बु यितु गछ़ि सुत्य।
आवागमनुच कास गांगलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

मन दर्पन मे कर निर्मलय, मल्युन छु गरदे सुत्य।
दयायि हँज़ करतम स्वकलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

व्यॉपिथ सोरूय छख ज़ल स्थलय, भ्रम छुम अज्ञानु सुत्य।
द्वय कास युथ बासि कुन केवलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

ज़ज़र्योमुत छुस बु कंवलय, फॉलि चानि अनुग्रह सुत्य।
सरताज़ बो बनु दयायि ज़लय, बलय दर्शनु सुत्य।।

मॉज्य रठतम दामनस तलय, खोच़ान छुस बयि सुत्य।
प्रेयुमच न्यॆंद्र मे पाव जल जलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

भक्ती दिम तिछ़ युथ नय डलय, बनि चानि कृपायि सुत्य।
अदु मे ज़न्म गछ़ि सफलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

अशि ज़ल ग्वड दिथ पाद बु छलय, तिम रटु हृदयस सुत्य।
लोलु सान करय बु म्वहरु छलय, बलय दर्शनु सुत्य।।

'हंसा' आमुत छुय बर तलय, मंगान ऑच़्र सुत्य।
म्वकुलावतन येमि मायायि छ़लय, बलय दर्शनु सुत्य।।

✷

लीला 79

ओस कस रूज़िथ अंदरी वॉर,
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।
मुरलीदर सुंद छुमा यी खॉर।।
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

थोकमुत सुदामा गर येलि आव,
नेत्रव त्रोवुन अशि दॅरियाव।
येति कुस राजा रोज़ान गॉर।।
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

कति छुम गरुबार योत कोत आस,
फाकय वॉलिंजि गोम तलवास।
गॉमुत्र कोत म्यॉन्य तुलसी वॉर।।
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

कॅति गॅयि पॉदु यिम गुल तु गुलज़ार,
आय कॅति योतनस म्वखु फ्वंवार।
रंगु मंदोर्यन लॅज ना तॉर।।
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

आय कर योत यिम दास दॉसी,
शुर्य म्यॉन्य गयमा वन वॉसी।
मायि हॅत्र भार्या द्रायि ना सॉर।।
कम्य नियं प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

कोत गॅयि मॉसूम स्वंदर पोश,
लोल आम वुछहख रोवुम होश।
मूरान गुल्य ओस प्राटान दॉर।।
कॅमि निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

ओरुत सुदामा गव परेशान,
व्यखचुय माया ओस डेंशान।
द्रायस सुशीला बुथि वनुहॉर।।
कॅमि निय प्रॉटिथ म्यॉन्य पनु पहॉर।।०।।

✷

लीला 80

मेवु कनि म्वखतु वोथ चंदन बागस।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।
ज़लु कनि अमृत नोन द्राव नागस।।
बागस मंज़ चाव संत अटुहार।।०।।

ब्वद क्या वाति अथ रागस तु त्यागस,
वरणि आव शक्ती त्रिभवन सार।
तस रोस क्या छु ती बु पूज़ि लागस।।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।।०।।

त्युथ दशहार कर तिथुसुय प्रयॉगस,
येथ दॅह यॅंद्रिय छि दॅह अवतार।
कॅहिम द्वादशांतस पूज़ि लागस।।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।।०।।

नामु रूप कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस,
अस्ति भाती प्रिये रूप पतु द्राव सार।
शर्मन्दगी च़ॅज्य मदु वॉरागस।।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।।०।।

प्रेयमु कर्मु फलनुय यमु नियम द्रागस,
प्रावुनावि अनुग्रेहुक्य अम्बार।
तृप्तियि पम्पोश फॊलि ललु त्रागस।।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।।०।।

होशु पोश फॊलि उद्योग पोशु बागस,
दासु भावु किन्य आस खॅदमतगार।
'कृष्ण' सेवा कर आत्म रूप आगस।।
नागस प्यठ लोग हंसु दरबार।।०।।

✵

लीला 81

प्राव कैवल्य हा केवलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।
भोगु सुखा हा निष्कलो, यॅलि च़लनम पापुन्य लॉदी।।

चोन दूर्यर ह्यकु कवु ज़ॅरिथ, कॅमि बलय ह्यकु चेय निश यिथ।
छुमनु करार गमु चानि गलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

गर्भु नयन मंज़ फीर्‍य फीर्‍य, वुछ मे लोकचार यावुन तपॉरी।
बॊड बॅन्य बॅन्य कम जाम वलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

पय अज़ताम लोभुम नु चोनुय, धर्म हीनस मे ओस कर्म लोनुय।
नठ छम वति निशि मा डलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

मन दर्पण छुम मॉलु गोमुत, मोहकुय मदिरा छुम मे चोमुत।
ज्ञानु गंग ज़ल मल कलु छलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

नारायण कस गछ़ शरण, छ़ोटन किथु पॉठय ज़न्म मरन।
हे शरनागत वत्सलो! योग चाने बनि आज़ॉदी।।

यॅच़ कोल चानि वते द्रासय, बुजरुकुय प्यॅयनय पासय।
बुजरस त्रॉविथ व्वन्य मु चलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

मन काफूर अनु चानि वेरे, रत्न ज्योति फिरवय शेरे।
गाल मल 'ठॉकुरस' निर्मलो, योग चाने बनि आज़ॉदी।।

✹

लीला 82

(गज़ल) **श्रीमती अरञी माल**

दोरि दुनिया सोरि ऑखुर, यार छांडुन पननुय।
आब हर जा ज़ेरि ज़मीन, नेरि तस नोन यॅमि खोनुय।।
नूर डेंशुन छु नु आसान, सूर मलुन ह्युव पानसुय।
रहबरस कुन पान गालुन, वथ सु हाविय तस कुनुय।।

✹

लीला 83

(गज़ल)

ज़ानखय कर जान फिदॉयी।
यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

अछ़ अन्दर लोल् बागस, लाग आशक बुलबुलो।
तति् गंडनै ख्वलति शॉही, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

योदवै करख बादशॉही, तल ज़मीनस जाय छयो।
तोत छु वातुन तनहॉई, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

पाक तार्ऩ्चि येलि तोलन, पाक छु पानै क्या हुलय।
नरि ज़ंग अॅछ दिन गवॉही, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

नमरूदन दम दिच़ॉई, कान तॅम्य लोय आस्मान।
खून तोर् प्यव बर हवाई, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

कारि बद छय रोय सियॉही, बार गोब छुय कोत तुलख।
वुछत् तहॅंज़य बारगॉही, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

उस्मानो मंग पनॉही, तति नबियन ज़लज़लो।
तति अरशस थर् च़ॉई, यार् वफॉयी कॅंह छय नो।।

*

लीला 84

वुछिथ गथ चॉन्य दैवागथ, चेय विन दयि नो स्वरय लोलो।
मे अंदर कर पनुन मन्दर, बु चेय पूज़ा करय लोलो।।

बु चाने वेरि सोंबरावय, अॅछव किन्य रंगु रूपुक रस।
कनव किन्य शब्दु साज़ुक मस, अॅनिथ खास्यन बरय लोलो।।

मे कुन वुछ वुछि असान छुख, दूरि रूज़िथ आस्मानन मंज़।
गुपित छुख दास्तानन मंज़, बु दूर्यर नो ज़रय लोलो।।

फिज़ा त्रॉविथ मे खॅनिमुत्य ज़िस्य, ज़मीनस तल तु पूरन्य छिम।
स्यठा देवार लूरन्य छिम, चे रोस्तुय क्या करय लोलो।।

बु छुस पोंपुर चे दीपस पथ, चॅटिथ यिम जामु करहय गथ।
दिहमनय जामु चटनुच वृथ, क्योमा ह्युव मा मरय लोलो।।

मे निम पम्पोशि पादन तल, तिमन हुंद बोंबरा सूज़िथ।
कंड्यन प्यठ छुस मरे रूज़िथ, बु चाने आसरय लोलो।।

ज़ॅमीनस ज़न्मकिस वॅविमुति अॅशकुक्य दुर्दानु केंह भॅविमुति।
अॅछन मंज़ छिम रॅछिथ थॅविमुत्य, तिमय खावे जरय लोलो।।

यिमन जोयन अन्दर योदवय छु चाने सॅहज़ु धर्मुक ज़ल।
बठ्यन हुंद छुख सम्योमुत मल मे चावुम आगरय लोलो।।

पनुन मे तीज़ुकुय आगुर यिमन ज़चन अन्दर भासुम।
कुन्यर भॉविथ दुयी कासुम, गटे हुंदि गाशरय लोलो।।

लीला 85

अज़ वाति बूज़ुम मोल म्योन।
कोसम वतन वथुरावसुय।।

लछ़ ज़न डुविथ संताप पाप अंत:कर्ण गरु नावुसुय।
ठोकुर कुठिस मंज़ रंगु तु रुत प्रंग आदरुक पॉरावसुय।।

सॉबरिथ रॅसिल्यॅ रुत्य कर्मुफल मस खॉस्य बॅर्‌य बॅर्‌य थावसुय।
अशि गंगु वाने ख्वर छलस रुमालि गुमु वथुरावसुय।।

तिम पाद हृदयस प्यठ रॅटिथ दु:ख दॉद्य ज़न्मुक्य भावसुय।
क्वछि क्यथ रछ़ुन ल्वकुचारकुय स्मृत च़ेत्तस अदु पावसुय।।

भावुक गन्यर लोलुक सॅन्यर वॉलिंज मुच़रिथ हावसुय।
नोव नागरादस सुत्य ज़न स्रेह मायि हुंद वुज़ुनावसुय।।

गुरु भावनाये सुत्य शेर नोमरिथ खोरन तल त्रावसुय।
गरु बार तॅय आसुन बासुन सोरुय पनुन पुशुरावसुय।।

गटु पॅछि च़न्द्र ज़न नामु रूप अख अख कला व्यगुलावसुय।
सिरियस अन्दर लय प्रावि ज़ून सार्यय बनन तचु मावुसुय।।

लीला 86

स्मुरण पनुन्य दिच़यनम, प्रेयमुक निशानु व्यसिये।
रॅछरुन तोगुम नु रोवुम, ओसुम नु बानु व्यसिये।।
पतुकालि छुम नु द्युतमुत, सोन म्वख्तु दान व्यसिये।
ॲनि सारि क्या लबख व्वन्य, तिम म्वख्तु दान व्यसिये।।
वॉलिंजि मंज़ थवुन गोछ, हावुन थोवुम अथस प्यठ।
राह कस छु कोर मे पानस, नुकसान पान व्यसिये।।
हावुन छु रावरावुन, चावुक समर छु खासये।
थावान छि छावु बापथ, बानन ति ठान, व्यसिये।।
यनु सुय निशान रोवुम, तनु मॅच़ गॅयस बु फलुवा।
न्युन ह्योन न कॅंह ति फेरान, छस वानु वानु व्यसिये।।

उत्तर: (जवाब)

व्यसरुन पनुन वनस क्या, वनुनस ति वार मा छुम।
बुथ मा सम्यम दिमस किथ, गछ़ कोत शबान व्यसिये।।
यछ़ पछ़ मु हार ब्याखा, ह्यथ यूर्य वाति कांछ़ाह।
तस छा कॅमी निशानन, बॅर्य बॅर्य खज़ानु व्यसिये।।
डोलान कोहन वनन मंज़, शोलान छि गुलशनन मंज़।
ज़ोतान छि तारकन मंज़, कॅात्याह निशानु व्यसिये।।
व्यसुरिथ डॅलिथ पथर प्यथ, बुथ क्या दिमव तॅमिस निश।
पोत फेरनुक पकान छा, युथ ह्युव बहानु व्यसिये।।
मानव ज़ि ॲसि ह्यमव पोत, छोर्या तसुंद मुहब्बत।
पैवंद यि आदनुक छा, शुर्य कारखानु व्यसिये।।

दिल फुटिमुत्यन छु तोशन, यॅच़ गरिमुत्यन छु रोशन।
गछ़ वॅर्यमुत्यन सुदामन, प्रछ़ि गॉयबानु व्यसिये।।
अंद्य पॅख्य तति छु आसान, बोॅदु ब्रोर सूर दासुन।
बोज़ान छु माय लॉगिथ, लोलुक्य तरानु व्यसिये।।

✸

लीला 87

तरुवुन छु करनोव हख दिथ वनन, कांह मा सा तॅरिव अपोर।
पतु तार बन्यव नु आलुस मु कॅरिव, उद्यम तॅरिव अपोर।।

करुनावि तार छुनु गरि गरि बनन, वुन्यक्यन छुय वेला जान।
निश्तुर तु यि साथ मु रावुरिव, वॅथिव तु तॅरिव अपोर।।

गरुवेठ सोॅबरान छिव मारु गामुत्य, छ़ॅनिथ थॅकिथ पोॅमुत्य।
गरु रोज़ि योॅतिय कथ क्युत भॅरिव, छ़ॅरिय तॅरिव अपोर।।

अनु अनु वनुनस कन मो थॉविव, गोॅबरॉविव क्याज़ि पान।
गोॅब बोर ह्यथ वति प्यठ क्या कॅरिव, ल्वतिय तॅरिव अपोर।।

च़ूर युस कॅरिव सु पानस फॅरिव, कर्मुक छु अटल नोॅयम।
स्वनु र्‌वफ छ़ॉरिथ ग्वडु कॅर्‌य मु गॅरिव, संतोश तॅरिव अपोर।।

प्रछुगॉर येलि लगि बर दिथ ख्यनस, इसबाथ स्वय गॅयि चूर।
थरि थरि मा हरदु थॅर ज़न हॅरिव, ऑदुर्य तॅरिव अपोर।।

पॅज़ि पान होव रेशि रॅसत्यन ऋषण, पशन ति भरुख प्रय।
अथ रेशि धर्मस प्यठ तोहि ति दॅरिव, सम दृष्टि तॅरिव अपोर।।

रुत्य भाव थॉविव रुतिय बॅनिव, रुतिय वॅरिव कार।
यी येति कॅरिव तिय तति स्वरिव, सत्कर्मु तॅरिव अपोर।।

अपारि बदलय विद्या छय परुन्य, यूगच छय तति बोल चाल।
पॅरिवय येति श्री गीता पॅरिव, यूगय तॅरिव अपोर।।

अपारि ब्रह्मय छु छारान तु गारान, यॅच़ छुस ज़ि तुहुंद लोल।
येति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग ज़ॅरिव, पज़ि प्रेयमु तॅरिव अपोर।।

वाव तस क्या करि तारक मंत्र, यस आसि दय सुंद नाव।
पानय छु करुनावि चिन्ता मु भॅरिव, डॅरिव मु तॅरिव अपोर।।

✵

लीला 88

यार् सुंदे दादि दोदमुत दिल बहारस क्या करे।
वाव योदवय सोंतु कालुक आसि नारस क्या करे।।

काँसि प्रारान दारि प्यठ युस, वाँसि हारे दारि ओश।
आबशारुक तस हवस क्या, शालमॉरस क्या करे।।
काँसि पलज़ुन काँसि हुंद ज़ेवर, बनुन यस योछ़ नु लानि।
स्वनु बनॉवितन संगि पारस, तस बिचारस क्या करे।।
होशि डॅजमुच़ जोशि वॅछ़मुच़, पोशि गहनस तोशि क्या।
रोशि यस च़ोल ओश त्रॉविथ, गोश्वारस क्या करे।।
कालिदासस तालि कॅन्य, पत कालि वोनमुत गाटुल्यव।
तालि यनु युस लोग ज़ालस, गाटुजारस क्या करे।।
लोलु मस ज़ॉल्यम तु गाल्यम, यस बुडिथ मोलूम गव।
भीम नशके त्राविहे मस चोन, खुमारस क्या करे।।
रंग हॉविथ भ्रम दिवान ओस, कॅहवचन खोट म्योन स्वन।
अमि कोडुम अंदर्युम ख्वचर नोन, लोलु नारस क्या करे।।
डालि निम क्या बालुयारस, ओरु तु शुद्ध पाथ्यम नु दिल।
छ़ेयनि मॅतिस यथ दागदारस, नाबुकारस क्या करे।।
ब्रोंठ छिय च़ोर क्रूठ मंज़िल, गॉफिलो बस कर मु च़ेर।
यस मॅतिस मागस जिगर, शेहल्यव नु हारस क्या करे।।

✹

लीला 89

कोरनम यि टॉठय तु क्याह वनस।
थोवनम नु बाकुय केंह ति मारनस।।
स्वय रुम छम मनुकिस आईनस।
यि कोर नु कॉंसि ति दुश्मनस।।
सोरुम सु लालु रवॅख मनस।
जलावु लोग कजुलि वनस।।
फोरुम सु नार खॅरमनस।
लोगुस नु केंह ति ज़्येठनस।।
दिलस ह्योतुन तु जिगर तत्यव।
शोर गव ज़ि नार हा।।

✱

लीला 90

धर्मुक धैर कोर खॅत्य हॉरवनसुय,
रंगु रंगु पोशन कॅर्य अंबार।
मादलि तुलसियि आरुवलि व्यनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।
गरि द्राय भावनायि सुत्य दर्शनसुय,
ज़ाय पर्बत राज़नुय दरबार।
आय चक्रेश्वरसुय प्रदक्षणसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

सुमेरु पर्बत कोह खॅत्य स्वनुसुय,
सिद्ध पीठ सार्यवय प्रोव अधिकार।
नाश गव दारिद्रसु ॲकिस क्षनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जय छु गोकुलस तु बिंद्राबनसुय,
जय जय छु नोन द्राव कृष्णु अवतार।
जय जय छु गूपियन तु गोवर्धनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जय छु वसुदेवनिस च़्यड ह्यनसुय,
जय जय छु देवकियि येम्य च़ोल बार।
जय जय छु द्वख अंद वंद रोज़नसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जय छु भलभद्रस तु अर्ज़नसुय,
भक्ती मंज़ यिम द्राय सरदार।
जय जय छु तथ विश्वरूप दर्शनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जय छु दशरथ राज़निस गुणसुय,
माजि कौशल्यायि बारम्बार।
जय जय छु अजोद्यायि रामजुव ज़्यनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जयु छु राम च़न्सद्रस तु लक्ष्मणसुय,
सीता मातायि जय जय कार।
जय जय छु भ.तस तु शत्रुगनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

जय जय छु वावु लोकपाल नन्दनसुय,
येमि द्युत लचि सुत्य लंकायि नार।
जय जय छु सुग्रीवस विभीशनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

मन म्योन पतु लारि मदुसूदनसुय,
कामु क्रोध कंसस दिवनावि मार।
होश कति हारि मारि मोह रावनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनसुय,
तार दियि करि पंचालस पार।
सत् चित् स्थित थावि शवद च्यतु मनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

वनुवुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनसुय,
थवनुय तस प्यव ग्यवनुय सार।
मानुवुन छु भक्त राजस तु नेर्दनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

हीतु अकि मायातीत निर्गुणसुय,
महामायायि सुत्य वेवाहकार।
श्वेत पीतवर्ण स्वरून टोठ, रात दिनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

वनुवुन यि केंछ़ाह ओस पत वनसुय,
ती वातुनोव गूपियव गुपकार।
वारु आव शंकराचार व्वलसनसुय।।
नारायणसुय छु जय जय कार।।०।।

अनुग्रह चोन मंज़ अन्नसुय दनसुय,
वाँसि तान्य पोशुनाव होश व्यवहार।
'कृष्णस' तोशि मंज़ पोश वर्शणसुय।।
नारायनसुय छु जय जय कार।।०।।

✸

लीला 91

कमल चर्ण रटोय शर्ण च़ेय आये,
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।
स्तुता परन परन शरन च़ेय आय।।
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।।०।।
च़ुय छुख भक्तन वर्ण शर्ण च़े आये,
च़ुय छुख दूखन हर्ण शर्ण च़े आये।
च़ेय मोक्ष दातस मूक्षुय मंगव।।
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।।०।।
बडयव योगव सुत्य सतुसंगव,
व्वतम पदव तु स्वन्दर भंगव।
अधर्मियन सुती जंगव।।
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।।०।।
संसारु समन्दरस तरव,
अज़ ताम तिय वोन महा ज़नव।
तम्युक निर्णय अस्य क्या वनव।।
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।।०।।

'कृष्णन' सत सोर तु सत बूज़ कनव,
मोकलाव रॅट्य मायि पनन्यव गरव।
प्रेयम भरव तु ध्याना सोरव करव नमः शिवाय।।०।।

✵

लीला 92

सन्यास बे परवायि मस्तानय, पॉरय हो लगय म्यानि जानानय।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।
कावन अथि छुख शेछ सोज़ानय, पोज़ बोज़ छुमनु डंजि रोज़ान दिल।
रोज़खय तु बोज़ख लोलु अफसानय, ज़्यूठ नो वनय म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।
लूख क्याज़ि कन तलके दुर्दानय, ओरुक योर म्योन वननय हाल।
ब्याख मा छु बेय सुंद दोद ज़ानानय, पान हो वनय म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।
मोहन चेति छिया मन मोहानय, चानि खोतु स्वंदरा ति उपद्यव कांह।
चु ति छुख ना विलुज़ार बोज़ानय, आरु यियनय म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।
ॲन्दरिमि राग ॲग्नु धून्य प्रज़लानय, लूकु त्याग छुय न्यबुर मोलमुत सूर।
ओबरु तलु यि वुज़मल छि द्रेंठ यिवानय। सूर ग्वसानि म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।
यम्बरज़ल चेशमन रूद अरमानय, शबनमु रोस्त कुनि वुछहोख मा ज़ांह।
सोम्बलस कस छि तिम पाद पूज़ानय। पूज़ हो करय म्यानि जानानय।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

दूरि रूज़िथ दोलु लोयुथ कानय, छिह लॅगिथ बेयि ब्यूठ ज़खमन क्रोर।
येति योरु स्योद कर तीरिमिजगानय, सीनु दारयो म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

गरि गरि सोरहक देव सुंद ध्यानय, तोति क्याज़ि रटुहख ग्वफ तु गार।
मन म्योन करहख खल्वत खानय, चूरि हो थवथ म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

रंग रूप प्रथ अंगु छुख खोबानय, दिवता स्वभावस वातिहिय नु कांह।
हंगु मंगु नय आसख रोशानय, आशतोश हा म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

यूत नय चु आसहक शेर नोमरानय, कद चोन ओस खास स्वर्गुच थर।
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानय, अभिमानु रस्ति म्यानि जानानय।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

शानन प्यठ केश छुय परेशानय, तालि प्यठ गॅंडिथ जटु सर्पाकार।
कालु बोम्बुरगण ज़न छु नॉपानय, अबरु मोय म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

क्वंगु तेहजव छु बोड प्रोवमुत शानय, कारतिक मास पूर्ण च़्रँद्रस मंज़।
न्यथ डेंशवुन सु खालु केंह बाग्यवानय, पूर्ण च़्रॅन्द्रम म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

ज़ाविलि वोज़लि वुठ कुनि-कुनि आनय, असनचि त्रायि येलि कुमलान छिय।
दॉन पोश बर्गन छि मद छावानय, वुठ कुमलाव म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

मॉसूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानय, परम राग रंग कति प्रज़लान छिय।
नम चॉन्य छा अकीक किन मिरजानय, आदनय सुंदर म्यानि जानानय।।
पॉर्‌य हो लगय म्यानि जानानय।।

यथ हुस्नस न ज़ेवरुक एहसान खॉलिस सोनस मूल मायि तु क्या।
युथ रूप छा भूषणस ओरुज़मानय, साद शाहज़ाद म्यानि जानानय।।
पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय।।

यिम चॉन्य खतुखाल याद पावानय, दूरिरुक दोद ताम मॅशरान छुस।
दोद बलि यॅलि वैद्य आसि वातानय, दॉदिस वात म्यानि जानानय।।
पॉर्य हो लगय म्यानि जानानय।।

स्व. मास्टर ज़िन्द कौल

✵

लीला 93

दान मनसॉविथ अथु धारनोवथस, अथ पतु निथ मॅचुरोवथस।
यॅच़ कोरुथम अवमान मदनो, यि छा सा जान।।

रसु रसु कॅमि ताम वति पकनोवथस, कुन ज़ोन वति् प्यठ त्रोवथस।
अनज़ान सरिगरदान मारुमति, यि छा सा जान।।

मन वारि म्यॉन्य आश पोश रुवनॉविथ, सग दिथ वारु फॉलुनॉविथ।
पानय कोरथस फान मस्ताना, यि छा सा जान।।

✵

लीला 94

दिल फ्वलि दर्शनु चाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।
दिमयो गोड ॲशि वाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

शिव छुख कॉलास वॉसी, शक्ती छय चॉन्य दॉसी।
तति छय वसान शीनु शाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

जटि छुय च़ॅन्द्रम लूभान, हटि छुय वासुक शूभान।
गौरी शंकर साने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

मृगु शाला छुख वॅलिथुय, पानस भस्मा मॅलिथुय।
खुर कास असि ड्यकु लाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

जटि छुख गंगा त्रावान, पापव निशि म्वकुलावान।
यमराज़ु भय चोन माने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

छुय त्रिशूल कालु संहॉरी, पानु छुख कल्याण कॉरी।
चानि क्रूदु ज़ग मा फाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

नन्दकीश्वर चोन वाहन, पूर्ण कर मनिकामन।
कुस नु चोन महिमा ज़ाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

रुद्रगण छिय चॉन्य संगी, सॉरिय चरसी तु बंगी।
कामदेव दोद च़खि चाने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

आरुत्य छिय असि छ़ारान, कोनु छुख भवुसरु तारान।
प्रारान तन मा प्राने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

भोलानाथ सोन संकट, आवागमनुक च़ुय च़ठ।
यितु गछ़ रोज़ि बे माने, सूरमति सर्फु ग्वसाने।।

✹

लीला 95

ऑम प्रवुन हंसु ताजदार।
कमि वनुकुय जानावार।।

ज़ालु लगि ना सुय अनुखा, मालु गँडुहस छुम तमन्ना।
नालु रटुहन सुय बालुयार, कमि वनकुय जानावार।।
कौछ़ बु दिमुयो हा कावो, गछ़तु वंनतस दियि दर्शुन।
वछ़ि वाँलिजि भावस असरार, कमि वनुकुय जानावार।।
पोशु नूलव पोरुय हम सू, कुकिलु बोलान गोविंद गो।
हरु मुख छा किन हरद्वार, कमि वनुकुय जानावार।।
प्यठ गोशन रॅटुनम जाय, कॉल्य पोशन पेयि मा हाय।
व्वन्दु हंदुर्यस तु रोशि चलि यार, कमि वनुकुय जानावार।।
खत बु लेखस हटि के रतु, ज़ॉविलि खतु सुति शूभिदार।
यियि नत छुस बु दावादार, कमि वनुकुय जानावार।।
बॉलि अनतने दूरि मा कॉल्य, कॉल्य जिगरस गॅयिमय परुगॉल्य।
नॉल्य जामु तस छिय ज़रुकारुय, कमि वनुकुय जानावार।।
हमसु पखुवुय पतु लारोस, प्रारि प्रारोस डंड़क वन।
दोह दरु लगि सोरि ल्वकचार, कमि वनुकुय जानावार।।
दर्दु सोज़ुक संतूर साज़, सासि परद ग्यवि कोस्तूर राग।
बुति ती ती वनान क्वलुतार, कमि वनुकुय जानावार।।
'भास्कर' चेनतु सासन मंज़, रुमु रुमु खास छु भासॉनी।
ललुवुन छुम सु सीरि असरार,
कमि वनुकुय जानावार।।

लीला 96

ब्यल तॉय मादल व्यनु ग्वलाब पम्पोश दस्तॉय।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतॉय।।

जटा मुकॅटा प्यठु गंगा वसान छस तॉय,
दीवि तु दिवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्तॉय।
भक्ती भावुक जय जयकार ऑसिन तस तॉय।।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतॉय।।

दया सागरु लोल वुज़यायि कोरनस मस्तॉय,
हा पोश मते होश डॅलिमुत्य थव ध्यान ह्यस तॉय।
असार संसार छलुरावान सोर रोज़ि कस तॉय।।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतॉय।।

पम्पोश पादव सुत्य यितम अस्तॉय अस्तॉय,
च़रणन बु वंदय ज़ुव जान ह्यथ वॉलिंज वस तॉय।
रागु चानि सुत्यन पोन्य वुज़्यम नागुरादस तॉय।।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतॉय।।

पॉर्‌य पॉर्‌य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस तॉय,
दर्शन चान्युक छुम यॅच़ लोल सुत्य हवस तॉय।
टोठतम सदाशिव ज़गत ईश्वर छुस बेकस तॉय।।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिवनाथसतॉय।।

अमर नाथस नीलकंठस कलु वंदस तॉय,
व्यच़ार सुत्यन 'कृष्णस' प्यठ आर यियिनस तॉय।
येछ़ि पछ़ि सुत्यन गछ़ि अर्पन शिव भावस तॉय।।
पूज़ायि लागस परमु शिवस तु शिव नाथस तॉय।।

लीला 97

शरीर ज़ोलुम अम्य मदनवारन।
बे आरस आर नो छुये।।

प्रान ज़ोलुम पवनुकि नारन, शशि कलि हुंद मे नार छुये।
समाह कोरम मे ओंकारन, बे आरस आर नो छुये।।

लयि लोसम मे तोसु च़ारन, रुम च़ॉर्यमस मे मोयि मोये।
दमु किय पन ज़न छस खारन, बे आरस आर नो छुये।।

बडि मनसरु यार छुस बु गारान, माह ईश्वर अथ मंज़ छुये।
काम क्रूध लोभ मोह छस बु थारन, बे आरस आर नो छुये।।

वुछ्तु मारु कुत्य कॅर्य अहंकारन, नार गोंडनक हा मोयि मोये।
फान कोरनस अनफासुकि नारन, बे आरस आर नो छुये।।

बदन ज़ोलनम अॅम्य मदनवारन, हये व्यसि यार यियम नाये।
व्यच़ार मनसरु गारहोन व्यच़ारन, बे आरस आर नो छुये।।

शास्त्र बल छुसया गारन, नॉल्य 'रहिमस' शास्त्र छिये।
ताज बरसर शास्त्र दीन दारन, बे आरस आर नो छुये।।

लीला 98

सतज़न बन मन कर कैलासुय।
बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

चित्त किन्य भस्म मल वल अतलासुय, साधू प्रकृच़ सन्यासुय रोज़।
ओम शिव शंभू कर अभ्यासुय, बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

विषय त्यागुक धर माग मासुय, सत्संगुकुय उपवासुय कर।
आत्मु तीर्थ मन नाव मोह मस कासुय, बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

पान प्रज़नॉविथ पानय मु आसुय, सर्वु संकल्पन ग्रासुय कर।
तलु प्यठु त्रॉविथ त्राव तलुवासुय, बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

महामाया ह्यथ रछवुन दासुय, शिवनाथ हृदयावासुय छुय।
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यासुय, बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

श्री कृष्ण महाराजन ख्यूल रासुय, गोपियि शुराह सासुय ह्यथ।
बालु ब्रह्मचॉरी तोति नाव द्रासुय, बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।

'कृष्ण' अंदरिमि त्यागु मल सूर सासुय, न्यबरिमि राग व्वलासुय कर।
शुकदेवस गव यिय वॅनिथ व्यासुय।।
बस्तियि मंज़ वनवासुय रोज़।।०।।

लीला 99

कर सनु कुनुय बनि सुत्य तस जानानसुय जानानसुय।
तनु लोलु नारन ज़ॉजनम अनज़ानसुय अनज़ानसुय।।
मॊयकिस दुकानस वॆथ्य छि बर पैमान बॅर्य बॅर्य क्या ज़बर।
चेनु रूस्त बु छुस ऑसिथ अंदर खुमखानसुय खुमखानसुय।।
निश ऑसिथुय दूर्यर मे प्योम रूसिस नु पय नाफुक नन्योय।
छ़ाडान सुगंद दिल तारि गोम नादानसुय नादानसुय।।
गोस न ज़ि पयस म्वकुजार किस कोचस बु गोस व्यवहारकिस।
सोंबरनि लॊगुस संसारकिस सामानसुय सामानसुय।।
देव ऑसिथुय ज़ीव नाव प्योम स्वनु ऑसिथय मॆज़ि त्राम गोम।
म्वखतस मे फोतय खाम गोम दुरदानसुय दुरदानसुय।।
अद्वैत अमृतकुय सु मस चेनु सुत्य बु बनुहा एक रस।
दुय रोज़िहे कति मे तु तस कुनि आनसुय कुनि आनसुय।।
यॅच़ काल कुय तस निश जुदा गोमुत बु छुस मेलि ना सना।
तस रॊस मे आराम ज़रा कर देवानसुय देवानसुय।।
यथ दॉदिसुय गछ़ि वैद्य बनुन तस बावहा बु सिर पनुन।
नतु राजि दिल क्या छुम वनुन बेगानसुय बेगानसुय।।
'नीलकंठ' प्रेयमुच वति चु नेर वातख मुकामस पथ मु फेर।
प्रावख चु अदु कैंह लगिनु च़ेर नेर्वानसुय, नेर्वानसुय।।

✷

लीला 100

भ्रम छु संसार शम तु ज़ीवो, दम मु कर कांह खॉलिये।
करतु श्म दम सोरतु सोऽहं, आसि गछ़नुय कॉलिये।।

यिछ़ छय शूभान ऑबरसुय मंज़, वुज़मला हाय त्युथ छु आय।
आयि गयि कुत्य काल हारन, शीन ज़न तिम गॅलिये।।

बॉज़्यगर सुंज़य यि बॉज़्याह, सोर संसार ज़ानुतन।
मॊय च़े चोमुत मोहकुय छुय, छय च़े कॅमिचिय चॉलिये।।

रूदि ना यॆति राज़ तॉय रक, रूदि ना यॆति शूरवीर।
अथु मूरान ख्यत अफसोस, कौत गॅयि धनु वॉलिये।।

'नीलकंठो' बन शरण सत् गुरु, च़रणन मनु किन्य।
युन तु गछ़नुय तस छु माया, दाम यस गव नॉलिये।।

✵

लीला 101

इतना तो कर ले स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविंद नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकलें।।

श्री गंगा जी का तट हो, या जमुना जी का वट हो
और सांवरा निकट हो, मेरे०

श्री बिंदराबन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु चरण का जल हो, मेरे०

सांवरा सन्मुख खडा हो, बंसी का स्वर भरा हो।
तिरछा चरन धरा हो, मेरे०

सिर सोहना मुकट हो, मुखडे पै काली लट हो।
यह ही ध्यान मेरे घट हो, मेरे०

निकलें जो प्राण मुख से, तेरा नाम बोलू सुख से।
बच जाऊँ घोर दुख से, मेरे०

मुझ दास की इस अरज़ी, को मानना न फरज़ी।
आगे है तेरी मरज़ी, मेरे०

लीला 102

ध्यान का वायदा करके सजन तूने।
ध्यान लगाना छोड दिया।।

सीस तले पग ऊपर थे, जब माँ के पेट में लेट रहा।
तब ईश्वर से इकरार किया, तूने भूल के वह सब तोड दिया।।
ध्यान लगाना छोड दिया।।०।।

देख लुभाय गया जग की, रचना सब सुन्दर साज बनी।
उस सृजनहार की सार नहीं, तूने भोगन में मन जोड दिया।।
ध्यान लगाना छोड दिया।।०।।

गर काजन बींच फसाय रहा, दिन रात न मौत की याद रही।
उमरा सब बीतत जाय चली, तूने क्यों प्रभु से मुख मोड दिया।।
ध्यान लगाना छोड दिया।।०।।

बार ही बार फिरा जग भीतर, जीवन की सब जूनन में।
ब्रह्मानन्द भजा भगवत नहीं, भव सागर में सिर फोड दिया।।
ध्यान लगाना छोड दिया।।०।।

✵

लीला 103

कीर्तन–दीवी चरण चॉनिय भक्त सॊरन छिय।
यिमोय शरण करोय नमो नमस्ते।।

संकट हरण कवच चॉनिय परन छिय,
कमल चरण चॉनिय भखुत्यन वरन छिय।
प्रेयम भरन यथ भव सरस तरन छिय।।
यिमोय शरन करोय नमो नमस्ते।।०।।
यॆति पूर्‌य त्रावख तथ जायि नॆत्र जरन छिय,
मंगल रूपी ध्यानस चॉनिस सॊरन छिय।
कृष्णस सुत्य ह्यथ स्तुता चॉनी परन छिय।।
यिमोय शरन करोय नमो नमस्ते।।०।।

✷

लीला 104

त्रिज़गत नाथु परमु आनन्दय।
सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय।।

कुस वॅनिथ हॆकि महिमा चोनुय, कॅम्य चोनुय प्रभाव ज़ोनुय।
हे निरञ्जनु हे निर्द्वन्दै, सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय।।
चानि आसरु हरी हरय, हे सत्य रूपु च़ेय पथ बु मरय।
छुस बु लज्जित स्यठा शरमंदय, सत् चित् रूप च़ेय पान वंदय।।

कुस च़्येय ह्युव बनि परम् मित्र, बंध बांधव सॉरिय छि शत्रुय।
निर्मलु निष्कलु गोविंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

भवुसरस लोभुम नु तारुय, गोलुम च़्येय पथ ल्वकुचारुय।
म्वकुलावतम मोहुनि फंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

ऋषि बालुक छुस छम नु चाहत, मनसुय मे गछ़्यम धन संपत।
छम मे चाह ज़ाननुच ज्ञान इंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

संपदा आपदा ज्ञानु रॅस्तिस, आपदा संपदा ज्ञानु सॅस्तिस।
ज्ञानु हीनस वखनान अंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

रच़ना ज़गतुच स्वपनु माया, सत वनुनिय पनुनी छय छ़ाया।
ज्ञानु निश मत थवतम मे अंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

'ठाकुरस' चॉन्य अभेद भक्ती, येलि बन्यस स्वय गॅयि मुक्ती।
नतु क्या करि खॉली चंदय, सत् चित् रूप च़्येय पान वंदय।।

✵

लीला 105

गॉफिल मु बन पायस प्यतो।
तस जानि जानस वोन दितो।।

दोर च़्येय पनुन मोर ज़ोनुथय, रज़ि गोय सरुफ पोज़ मोनथुय।
सत् संग गंगि अमृत च्यतो, तस जानि जानस वोन दितो।।
दिल साफ थावतो आईनय, मल गालतस तुलतस चु खय।
छ़ोट्य पॉठ्य रूथ मटि चुय ह्यतो, तस जानि जानस वोन दितो।।
दिलनुय सहल कोर मुश्किलय, ब्रोंठ्योख तु ज़ेठयोख मंज़िलय।
स्यज़ि वति पकनस प्यठ यितो, तस जानि जानस वोन दितो।।

येलि चुय दिलस स्वकल करख, चलुनय चे शख त्रावख चु फ्रख।
शुद्ध सात्वकी भोजन ख्यतो, तस जानि जानस वोन दितो।।
वनुनुय छु कैंह बनुनुय छु कैंह, 'ठाकुर' पान पनुनुय छु वैंह।
गुरु मुख सरु कर वर दितो, तस जानि जानस वोन दितो।।

✵

लीला 106

हे प्रभु, अज्ञान कॉसिथ, यूग दिम विज्ञान दिम।
अंग हीनस दिम मे काया, मुर्द जिस्मस जान दिम।।
शक्ती रोस्तिस दिम मे शक्ती भक्ती रोस्तिस दिम मे भक्ती।
एक भक्तिस दोशवय दिम, यिय मे धर्मस दान दिम।।
पकनस क्युत ओन तु रोन छुस, भक्ती क्युत छुस न्यथु नोन।
ज्ञान वाल्यन यूगियन क्युत, गिंदनुक सामान दिम।।
हीन छुस विद्यायि अंदर, दीन छुस श्रद्धायि मंज़।
हान छम प्रथ कुनि कर्मुचि, सत् ज़नन मंज़ मान दिम।।
ब्रोंठ कुन पानस ॲनिथ, श्रवन करुम व्याख्यान दिम।
लूख युथ मूहित गछ़न, त्युथ मुखस निर्वाण दिम।।
क्रम गछ़न अदु यिरु खस हियि होशकुय तूफान दिम।
ग्वफ शाल खोचन मे पानय, सह सुंद ह्यु त्रान दिम।।
जय जय श्री राम चन्द्रस, तॅमि सुंदुय वरदान दिम।
क्षय गॅछ्यम इन्द्रिय शुत्रन, वीरु धर्मुक कान दिम।।
येमि युखतियि बनि म्वखती, तमिकुय वेग्यान दिम।
दित मनोज़य वासना क्षय सत् स्वरूपच ज़ान दिम।।

सर्वु मंगल परम सुख दिम, हर्ष दिम कल्यान दिम।
अंत कालस मंज़ ख्यालस, सत् स्वरूपुक ध्यान दिम।।
बाग दिम बंगाल दिम, हमाम दिम डालान दिम।
रायि रॊस्तुय यिम बनन तिम, जायि ऑलीशान दिम।।
ज़ीवतुक भ्रम च़लनु बापथ, पवनसुय ह्यु पान दिम।
ध्यान 'कृष्णस' योग ह्यथ दिम, भोग अमि येमि सान दिम।।

✹

लीला 107

बनुन आज़ाद ज़ि यक न्यरनय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।
कॅरिथ भक्ती च़े मुक्ती छय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

बु हर सो वुछ तसुंदुय रूप, विवेकुय नोम प्रज़ुलाव दूप।
तॅमिस रॊस वुछ छय मा कांह शय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

च़्यतुय नोम शीशु युस छुय चोन, विद्वानव ज्ञान वानव ज़ोन।
करुम निर्मल तु कासुम खय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

चित्तुक गुर वारु पकनावुन, दॅछिनि खॊवुर्य मु वुछिनावुन।
व्यच़ारक्य कोचु त्रावुस हय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

सिलाह सामान युद्ध वेश गंड, दिवान गछ़ सर्वु वॊशयन दंड।
सो गॅयि निष्का[illegible] कर्मुचि क्रय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

प्रमाद आलस्य पथुर त्रॉविथ, वुद्यागकि जामु पॉरॉविथ।
चु कर संकल्प चूरस क्षय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

रटुन मोह राज़ दिस गर्दन, छु दुर्योधन चु बन अर्ज़न।
ननख बहादुर बनखे निर्भय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

शत्रू गॉलिथ चु मित्रन मंज़, करि संयोग हर्षुक सुंज़।
लभख वेश्राम स्यद्ध गव तय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

छु वथुरिथ फर्श तु हर्षुक प्रंग, खॅसिथ संयोग न्यॆंदरे शोंग।
भॅरिथ खॉस्येन छु आनन्द मय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

यि ज़ानुन छुय स्यठाह मुश्किल, यि गव संयोगवुज्य मंज़िल।
यि गव निर्वाण थानुक पय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

रटुन मन बुद्ध च्यतस कुन गछ़, बु सोऽहं सो अंदर कुन अछ़।
अचेतस सुत्य सुचेत करनय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

सॊरुन सत् चित आनन्दय, लभख तॊलि परमु आनन्दय।
स्व आनन्द तथ अंदर गछ़ि लय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

अगर ज़ानख चु पनुनुय पान, करुस अर्पण चु मन ब्वद प्राण।
पनुन्य भर पानि पानस प्रेय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

हतो 'विष्णो' मु गछ़ दिलगीर, पूर्व कर्मुक यि छुय तॉसीर।
पनुन्य कर ब्वद टोठिय दय, करुन गछ़ि पानि पानस जय।।

लीला 108

देहकिस द्वारस लुयि त्रोपरावुन्य, मोह निशि च़ित छुय प्रावुन हो।
वावस मंज़ बाग च़ोंग संदारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

मनचय प्रथवी गाश हयतु सारुन, शशिकलि प्रबात फोलुवुन ह्यु।
द्वादशांत मंज़ च़ित सिर्य गछ़ि खारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

ग्वर् शब्द निरोध किन्य हॉगिणि हारुन, येछ़ि वोंदु पछ़ि सिंधि सावुन ह्युव।
पुक्तकार म्वखतु समंदर गछ़ि खारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

प्रानस तु पवनस मन मिलुनावुन, द्यान धारनायि किन्य दारन ह्यु।
तमि यूग ज्योति रूप ब्रह्म वेस्तारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

ज़ाग्रत त्रॉविथ स्वप्न प्रखटावुन, सुशप्ति मंज़ सुख प्रावुन ह्यु।
तुर्यायि सुत्य च़ित लयि संदारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

पद्यव रोस्त मद होस विस्तार् तारुन, शमशेरि धारि प्यठ लारुन ह्यु।
पख उपज़ॉविथ वुफि गछ़ि तारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

दम ह्यथ दमनस मन सोनुर गारुन, देह मायायि त्राम कारुन ह्यु।
ज्ञान सोन च़ित कहवचि गछ़ि खारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

'च़न्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत तारुन, ओबर् तल सिर्य प्रकटावुन ह्यु।
अंदकार च़ॅलिथ गटि गाश ह्यख सारुन, सत् व्यच़ारुन सोऽहं सो।।

लीला 109

जार्फय पोशस छु लक्ष्मी अंग तॉय।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।

सत्य देव लक्ष्मी नारायण तॉय,
सर्वु देव ह्यथ कासिय दुर्गत।
पोश पूज़ करतस अन्न धन मंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

मादुलि हियि, पम्पोशन डेर कर,
तुलसी छॉव्य छॉव्य शेरतस पान।
स्वदंर ड्यकसुय ट्योक लाग क्वंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

सुय दियि मोक्ष, आय अन्न, धनु द्यार,
धारणा द्यान, ज्ञान योग व्यचार।
वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

सत्पुरुषन निश ह्योछ करुन भक्ती भाव़,
तिहुंद्यन पादन तल पान त्राव।
पान थव दासु भावु तिम ब़र हंगु तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

साध छुय पूज़नीय तसुंदुय मन छु सेर,
मुश्का ह्यत चरणु कमलन नेर।
ऑल मान राधा कृष्ण ज़ान र्‌वंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

यूत ज़ानख त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन,
भक्ती भावस मंज़ आदीन बन।
सुय छुय रुत साथ स्वय रुच़ ज़ंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

स्वय दया मंगतस भक्ती भावस सान,
यॊस कॉसिय रूग देह अभिमान।
व्यवहारन छुख ओनमुत तंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

ज्ञान कुलिसुय छिय शम दम लंग तॉय,
शांती मूल मोक्ष त्यहुरुय छुस।
ख्यतु भक्ती भाव रस बॅर्यथुय टंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

ब्रह्मांड पान ज़ान वारु सॉरस नेर,
सार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर।
ज़ोर मुच़राव च़ित तोरगस डंग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

अज्ञानु गटि मंज़ प्रज़लाव दीपुय,
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय।
यी वनान साद संत कॅरिथ सत् संग तॉय।।
स्वनु सुंद रंग तॉय पूज़ायि लाग।।०।।

✵

लीला 110

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न', मंज़ वॅन्ह श्लोक।
रस पूर्ण परम सदा शिवह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

दीन चानि नव निध अष्ट सिद्ध, ज़ीवन हुंदि करुणा निदह।
गलि गलि अमृत यिमव चेवह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

क्वब्वज़ि भजना चॉन्य करह, गागरि मंज़ यितम सागरह।
ज़्यव दिम तिछ़ युथ चॉनी गीत ग्यवह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

छ़्यन्यमुच़ स्व आशव पाशव सान, आशो मटि छुय पान दपान।
हे शिव, थॅवमय मे आशव, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

पानस पानय छु मेलनुय, गिंदुना छु गिंदुन तु गेलनुय।
स्वनु नेरि नारु मंज़ु गलि ज़वह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

देह दृष्ट गलि च़लि अभिमान, अदु बनि सत् स्वरूप ज्ञान।
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्धवह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

युस येछ़ि सुय सुय तस येछ़े, गछ़ि यस सुय सुय तस गछ़े।
येछि पछ़ि तॅमिसुय प्रारवह, सत् च़ित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

लोलय छु ओर योर म्वलवुनुय, लोलय छु ओरु योरु ललवुनय।
लोलु सुत्य सुय लोल ललुवह, सत् चि़त्त आनन्द विज्ञान रवह।।

केंह छुनु लोल रोंस आसुवुन, लोलुय छु सॉर व्याध कासवुन।
लोलके गाशु गटु कासवह, सत् चि़त्त आनन्द विज्ञान रवह।।

लोल बोज़ ब्योल व्वन्य बोवनय, लोलुय छु च़ोदाह भवनय।
शोलुवुन छु सोरुय लोलुवह, सत् चि़त्त आनन्द विज्ञान रवह।।

लोलु सुत्य व्वलसनु आयि ज़ग, लोलु सुत्य छम भॅरिथ पय तॉय रग।
लोलु परमानन्द प्राववह, सत् चि़त्त आनन्द विज्ञान रवह।।

'परमानन्द' बोज़ दयगथ, वोथ त्राव सॉर्य मथ मो चु मत।
कथ बोज़ नतु क्या यि क्रव क्रवह, सत् चि़त्त आनन्द विज्ञान रवह।।

✷

लीला 111

यस छु हटि वासुक, तस छु जटि पोन्य।
ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

युस देव सर्वु देवन हुंद छु आद, सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद,
यस देवस छि पम्पोश हिव्य पाद, हर म्वख बरु तल लायोस नाद।
पादव तेलि छुस पकान सेंदि वोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

युस थ्यकुनुय छु देवियन तु देवन, तस देवस छि सर्व देव सेवन,
आत्म रूप आसुवुन छु मंज़ ज़ीवन, प्रान धॉरियन क्युत छु संज़ीवन।
सुय नंगु नोन चोन दियि गंगु वोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

पूर्णीयि सोस्ता छु नूर भॅरिथुय, ब्रह्मांडन पालना वॅररिथुय,
स्वखु म्वख सुत्य छुय द्वख हॅरिथुय, वर अभय सुत्यन छुय वॅरिथुय।
येमि सुत्य पानस न्युव सोंदिवोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

ज़न्मन हुंज़ व्यॉज़ ज़ालुवुन छुय, ज़्यनु मरनुक्य गुण गालुवुन छुय।
माजि मॉल्य संदि खोतु पालुवुन छुय, सानि कर्म भुतरॉच़ वालवुन छुय।।
आत्मु बोधुक रूद शांतियि शोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

प्रेम मस चावि मॅशरावि हनु हनु, सत भावु न्यथ थावि नेष्कल मन,
मोक्ष द्यावि करुनावि आनन्द गन, संम्वख नॅन्य हावि ज़ोतन तन।
'कृष्णस' प्यठ त्रावि शांतियि शोन्य, ग्वसॉन्य हॉय ग्वसॉन्य हॉय।।

✸

लीला 112

श्री निराकारय त्रिभुवन सारय, प्रारय पनुने यारय बल।
भस्मा धारय छम चॉन्य लादन, साधन प्यमयो पादन तल।।

लमुयो जामन रटुयो दामन, शिवनाथ छम चॉन्य मनिकामन।
त्रिज़गत्पालय यितु सानि सालय, चावतम प्यालय अमृतज़ल।।

त्रिभुवन सारो हनि मंज़ छुख,   मायायि सुत्य छुख नु यिवान द्रेंठ।
सत् चित् आनन्द गोविंद केवल, जाय चॉन्य हृदयुक पम्पोश डल।।

मनुकिस बागस फुलया द्राये, रछवुनि लछुनावि ॲछ पोश छाव।
शोकु चानि प्रेयमुक बुलबुल छु नालान, बोलान लोलु नय दिदरि तु जल।।

हे कृष्ण वासना शुद्ध थव स्योंद थव, बुद्ध थव सतसुय कुन सन्निदान।
सतसुय कन थव सतसुय मन थव, सतुकिस कुलिस वसि आनन्द फल।।

✵

लीला 113

कर सना ह्योयि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना यियि माति असि पोज़ रुत स्वंदर श्री कृष्ण देव।।
कर सना गटु कूठरे अनि गाश वुज़मुत स्व प्रकाश।
बांदि वानुचि बेडि फुटरिथ खोलि बर श्री कृष्ण देव।।
वैर लोभ तु द्वेष तॉय अन्याय रूपी दानुवन।
चक्र सुत्यी अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव।।
ज़ोर ज़र रस्यत्यॅन दरिद्रन, दलितन करि यावरी।
दॅदिमुत्यन शेहलावि दिथ शीतल नज़र श्री कृष्ण देव।।
अर्ज़नस दिथ आज्ञा वद दिल मु बन थोद वोथ चु लड।
कासि ना ॲसि दीनता, पॅस्ती हचर श्री कृष्ण देव।।
कृष्ण पूज़ा क्या छय ? पालुन तॅमि सुंदुय थोद कर्मु योग।
धर्मचे वति हुंद बनावुन र्हबर श्री कृष्ण देव।।

येमि नु वरतावस ओनुय गीतायि हुँद अख ऑड श्लोक।
लाभ क्या थ्यकुनावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव।।
कॉर नोमरिथ दिथ बुथिस अथु अस्य्य वदव ना शर्मि सुत्य।
वुन्यक्यनस असि मंज़ अगर यियि चक्रधर श्री कृष्ण देव।।
सॉन्य द्रुख तॉय दॉद्य तॅमिसंदि इम्तिहान निष्ठाय मंज़।
हाल निशि नतु सानि बनिज़्या बेखबर श्री कृष्ण देव।।
कृष्ण सुंदे लोल यिम आमॅत्य छि यॊत श्री कृष्ण भक्त।
अज़ कर्यख पॅज़्य किन्य स्वफल ज़न्मुक सफर श्री कृष्ण देव।।

स्व० मास्टर ज़िंद कौल

✷

लीला 114

पॉन्य पानस दितो वॊनये।
हॉविय शुभ दर्शनुये।।

संसार ठोकर छु हुनये, वुछत येति कॅह नु लारुनये।
कुनि रंगु नाव तारुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
भक्ति कामधैन रछुनये, वासनायि गास दिस ख्यॊनये।
गुरु शब्द वॊछ़ लागुनये, हॉविय शुभ दर्शनुये।।
व्यच़ार ह्यस दिस गोनये, ज्ञानु अमृत ह्ययि द्युनये।
संतोष दज्जि फ्यारुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
वैराग लॊजि कारुनये, ध्यान ज़ागि सुत्य ह्ययि ज़्योनये।
ध्यन लोलि ललुनावुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
च़ित्त कॅुयि शॊहलावुनये, सोऽहं दोन त्रावुनये।
रात दॊह ध्यन मंदुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।

नेर्यस प्रकाशु थॅनिये, देह गुरसस मंज़ नॅनिये।
आत्म देव ग्यव रछुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
दारि बर बंद करुनये, यि रत्न ह्यि चमकुनये।
दॊगुन गछि ओगुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
प्रज़्नाव पान पनुनुये, अद् कति ज़गत भ्योनये।
च़ित प्रकाश ह्यि व्वलसुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
फलि निश कुल कति भ्योनये, फलिसुय मंज़ सु आसुवुनये।
सुय फॊल ह्यवान फॊलनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
कति रोज़ुन तु मरुनये दुय गलि पतु रोज़ि कुनये।
कुस दारि कस होरुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।
यच्छा कुल गालुनुये, तॊलि क्याह नोन वनुनये।
भक्तिस हाल भावुनये, हॉविथ शुभ दर्शनुये।।

✷

लीला 115

परिपूर्ण छु नूर भॊरमुतये।
सूरमॊतये आंगन च़ाव।।

शांत निर्मल ब्रोंत कासुवुनये, बासवुनये सास रव ज़न।
शिव शम्भु अलख बोलवुनये, सूरमॊतये आंगन च़ाव।।
नंगु भस्मा अंगन मॊलमुतये, हटि भुज़ग जॊटि छस गंङ्गा।
ड्यकि च़ँद्रम टिकु शोलवुनये, सूरमॊतये आंगन च़ाव।।
अलख बूज़िथ तिमु गूर्य भाये, जसुदायि सान करान विनती।
धनु द्वारव भॊरनस फॊतुये, सूरमॊतये आंगन च़ाव।।
ग्यव द्वद थॅन्य आरूदमुतये, कंदु नाबद सुगन्द सान।
ह्यथ जसदा करान ब्रोंठ पॊतये, सूरमॊतये आंगन च़ाव।।

जोगि दोपनख योगी ज़ॉनिव, भूग त्रॉविथ छुस नेराहार।
कामु दीवस भस्मु कोरमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
लोभ, क्षोम नहीं ना अबिलाशा, आशा यह एक मन में।
कृष्णु दर्शुन करनि आमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
राधेश्याम को बोलो आदेश, ईश जोगी, वेश धर के।
तमि अभिप्रायि योर आमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
बूज़ जसुदायि ह्यसु व्यसरॉनी, स्वामी सॉन्य विनती बोज़।
खोच़ि बालुक छु राथ ज़ामुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
चानि दर्शनु गछ़ि तस छ़ाये, राय क्या छय माय भरहस।
अगूर भैरव फेर गछ़ पोतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

जूग्य वोनुनस छख अनजॉनी, मान यूगियन हुंद सरदार।
राज़ ज़गि हुंदि माजि ज़ामुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
सृष्ट सिथित लय अनुग्रेह बेयि दण्ड़, अंदु ब्रह्माण्डु नित्य करवुन।
शीश शाये ईश आमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
स्वखु म्वखु सुय द्वख दॉद्य कासान, बासान ज़न सारु निशि ब्योन।
नोन अनुग्रेह छु बन्योमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
द्वष्ट गालुन्य श्रेष्ट छिस पालुन्य, भूमि वालुन छुस व्वन्य बोर।
कॉल्य कालन पानय पोलमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
बार ज़गि हुंद वारु छुस वालुन, गालुन छुस द्वष्ट सम्बन्द।
पालन कर्म वीदव वोनमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
त्रेन भवनन भुय सुय कासान, बासान सुय नित्य ननि नोन।
मूल ज़गि हुंद ब्योल वोवुमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
यूग मायायि समयूग कॅरिथुय, प्रेयमु बरिथुय नित्य हर्शान।
कृष्ण शंकर कॅरिथ नालुमोतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।

ईक्षण् किन्य कोरुख वार् सम्वाद, दर्शन् ऑस्य हर्शानी।
ती वोनुख यी ज़गुतस ह्योतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
शशि लूसिथ रव् खोतमुतये, प्रव् तारकन हुंज़् चमकान।
शिव नारान कुनुय गोमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
नोन वोन पान् येलि हर्नुय, बर्नुय तॉर्‍य मुच़रन् आय।
नेबर् अँदर् ईकु बोसमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
वोन्द् इन्द् रव मन फोलमुतये, मंद्यानुच संद बासान।
सुबु शामन मेल कोरमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
वीद् वॉनी ईकु बाव होवुख, बोवुख कस यि सीरि इसरार
शाम् प्रभात अर्घ म्यूलमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
दीव आकॉश्य पोश वरशॉनी, अछ़् रछ़् मच़् नच़नस गॅय।
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
कर्म् भूमि दर्मुक सोथ दि्युन, परम पावन मर्यादा।
बोर ज़गतस तुलनि आमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
द्रुष्ट द्रुर्ज़न नष्ट कर्नावुन्य, बरनावुन्य सृष्ट आनन्द।
ईश् च़ुय छुख ज्येष्ट मोनमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
रक्षा कर्न्य स्यदन त् सादन, वीद विरूद्धिन वद करवुन।
शुद्ध धर्म् राज़् अंद् गोमुतये, सूरमोतये आंगन च़ाव।।
नाद लोयुम तॅती लोल् होतये, रासुक भास यान्य वनि आम।
'सास भास्कर' ज़न पूर्य खतिये,
सूरमोतये आंगन च़ाव।।

*

लीला 116

वन्दयो मुन्य बु पादन।
छारथो रामु राधन।।

विचार नॉग्य वति लारय, नुनरुकि तारु प्रारय।
ब्रह्म सरु किन्य दिमय कन, छारथो रामु रादन।।
ॲछन हुंद गाश म्योनुय, खुश यिवुन नुंदबोनुय।
कॉल्य राव्यम हिये तन, छारथो रामु रादन।।
कशु तीर लोयथम मे, लशि छम नॉरुन्य रेह।
अशि फेरेयव हर्यम तन, छारथो रामु राधन।।
महालिशि किन्य यिमयो, हरम्वख वॅन्य दिमयो।
हंसु द्वारु गॅछ़िथ रटय वन, छारथो रामु रादन।।
चु रूदहस कथ शाये, क्रेंक नॅदियि वोठ बु लाये।
गंगु बल युन छु आदन, छारथो रामु रादन।।
गोसु नो कैंह मे चोनुय, दयन येलि बानु ज़ोनुय।
चारु नो लॉन्य वादन, छारथो रामु राधन।।
च़ज़ि गोख मे निश दूर, यिज़ि तेलि येलि गछ़्यम सूर।
वुज़ि पोन्य नागु रादन, छारथो रामु राधन।।
नाव तन त्राव कीनुह, भाव सीर दोद मे सीनय।
हाव मुख थाव लादन, छारथो रामु रादन।।
बॅरनि बल युथ नु रावय, रामु रामु क्रख त्रावय।
आलव दिज़्यम मे नादन, छारथो रामु रादन।।
नेत्रन मंज़ रटय पाद, बुथि शेरि किन्य दिमय नाद।
मरयो वुनि छु आदन, छारथो रामु रादन।।

नारान नागु प्रारय, वांगत जाय छ़ारय।
प्रारय सुत्य सादन, छ़ारथो रामु रादन।।
सिर्यस छु गाश चोनुय, तस छु 'प्रकाश' चोनुय।
स्वय छय यूगु सादन, छ़ारथो रामु रादन।।

✷

लीला 117

सिरियि वुज़नोवुम चंद्रम सोवुम,
तारकन द्योवुम शून्य मंज़ु थान।
गाशु सुत्य गाशुक गाश प्रज़नोवुम।।
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन।।०।।

दिन तु रात पॉदु गॅयि सिर्यि प्रक्रम सुत्य,
च़न्द्रमन प्यालु बॅर्‌य शबनम सुत्य।
तमि प्यालु श्याम लाल दामा चोवुम।।
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन।।०।।

मन गुलि आफताब ज़न फोलुनोवुम,
सिर्यि गँज़रोवुम परमात्मा।
तथ कुन मुख हॉविथ सुख प्रोवुम।।
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन।।०।।

आत्मतीर्थ मार्तण्ड मंज़ तन नॉवम,
पितृ लोकस द्यावुम तृप्ती।
तमि कर्मु त्रेन हुंद ऋण म्वकुलोवुम।।
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन।।०।।

निर्वासनकुय आसन प्रोवुम,
तति बोहनोवुम प्रत्यक्ष देव।
निर्मल पम्पोश डल फोलुनोवम।।
सुबह रूप होवुम श्यामु लालन।।०।।

श्री 'कृष्णस' सुत्य दोह गुज़रोवुम,
शामन होवुम तम्यॅ श्यामु रूप।
सुब्हस सुत्यन शाम मिलुनोवुम।।

✵

लीला 118

ॲरिनि रंग गोम श्रावन हिये।
कर यिये दर्शुन दिये।।

श्यामु स्वंदरन पामन लॉजिस, आमु तावन कोताह गॉजिस।
नामु पैगाम तस कुस निये, कर यिये दर्शुन दिये।।

कंद नाबद आरुदमुतुय, फंद कॅरिथ च़ोलुम कोतुय।
खंद कॅर्यनम लूकन थिये, कर यिये दर्शुन दिये।।

सुलि वॅथिवो संगरमालन, लालु छारोन कोहन तु बालन।
प्रारान छस बु तहंज़ि जिये, कर यिये दर्शुन दिये।।

✵

लीला 119

मुझे राम से कोई मिला दे, बिन लाठी का निकला अँधा।
राह से कोई लगादे, मुझे राम से कोई मिला दे।।

कोई कहे वह बसे अवद में, कोई कहे वृंदावन में।
कोई कहे तीरथ मन्दिर में, कोई कहे मिलते बन में।।

देख सकूँ में उनको मन में, ऐसी जोत जगादे।
मुझे राम से कोई मिला दे।।

✸

लीला 120

स्मरणि चानि पाप सॉरी हॉरी।
हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

संकट कट छख हे मुकट धॉरी, तीज़ु चानि प्रज़लन आव संसार।
सिंह आसन च़ेय छुय सवॉरी, हॉरी पबर्तुच हॉरिये।।

गौरी नावस लगोय पॉर्य पॉरी, चाव प्रेयमु दोद च़ड़ुवॉरिये।
ज़ॉन्यनख अभिनवगुप्त आच़ॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

नॅट्य लछ़ुल्य आकाशन ग्रटन तॉरी, नोन नीरिथ वोन महिमा चोन।
परम शक्त मॉनिख शंकराचॉरी, हारय पर्बतुचि हॉरिये।।

शिव शक्ति रूप ज़ॉनिथ च़्वपॉरी, गुल्य गँड़िथ नॅन्य यॉरी मे कर।
ह्यथ नखस नियनख मंज़ कष्टवॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

नित्य सुमेरस तामथ लॉर्य लॉरी, कति ऑस वातनुच शक्ति तोर।
पर्बत प्रदिक्षनु पाप नेवॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय, नोव नॅवराव त्राव प्रोनुय याद।
हाल भावु वाल पापन हुॅदय बॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

आद्य शक्ति पानु छख सर्वु आधिकॉरी, पूज़ा करुवुन्य सॉरिय च़ेय।
साद संत वैराग्य जूग्य ब्रह्मचॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

चक्रेश्वरसुय छु जय जय कारय, सार्यवुय रोट दरबारुय सुय।
सिद्ध पीठु प्यठु गॅयि सोद्धी ह्यथ सॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

चानि सुत्य सॉर्य देव ज़ीव व्यवहॉरी, चानि सुत्य व्वलसनस आव संसार।
चानि सुत्य सॉनी छय दुनियादॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

अष्टादश बवज़ुवय सुत्य पर्बत, हितुकार पुछि छख बतु बॉगरान।
सर्वु व्यापक छख सर्वु उपकॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

कर्मु लेखा छख पानु परम शक्ती, कर्मु सानि पनुनिय बख्ती लेख।
क्रति कर्म फल छख दिवु वुन्य सॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

अज़पा गायत्री ज़पहोथ अँदरी,　श्री सुंदरी योगु न्यैंदरे मंज़।
मनु प्रान ध्यान ज्ञानु व्यचॉरी,　हारी पर्बतुचि हॉरिये।।

परमात्मा रूप छख ज़गतुच साक्षी, जितेन्द्रिय इंद्राक्षी छख।
प्रान शक्ती सुत्य छख पानु व्यवहॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

पानु छख यूगी पानु ज्ञानी,　वानी रूप भवॉनी छख।
ब्वज़ सुत्य ह्यस रटनुचि वॆस्तॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

च़ामर लागु होय पोश च़ॉरी,　चण्डी च़ुय छख चेतन स्वरूप।
च़ित शक्त छख च़ॆनवुन्य च़्वपॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

मोह ज़ाल मंज़ु नेरनुक उपाया,　कर राज़ु हंसुन साया त्राव।
हंस नाद सुत्य तार येमि हंस द्वॉरी, हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।

हीमाल पर्बतुन्च राज़ कुमॉरी,　च़रनन लगोय पॉर्य पॉरये।
‘कृष्णस’ भक्ति बोज़ कन दॉर्य दॉरी।
हॉरी पर्बतुचि हॉरिये।।०।।

✵

लीला 121

हीमालु पर्बतने गरि ज़ायख।
आयख करने ज़गि पालना।।

परम शक्त परमु शिव छ़ांडुनि द्रायख,
कर्मु सुत्य सॉंपनिक शिव शक्ति रूप।
भगवत् माया बोज़ुनु आयख।।
आयख करने ज़गि पालना।।०।।

परमात्मा सिर्यि मंज़ तीज़ा द्रायख,
प्रज़लुनि आयख संसारस।
येमि मंज़ द्रायख तॅथ्य मंज़ च़ायख।।
आयख करने ज़गि पालना।।०।।

ज़गतुच दाता छख फल दायक,
यस च़ुय दिख तस दियि शिवजी।
सुय च़े लायख च़ुय तस दायक।।
आयख करने ज़गि पालना।।०।।

वरण यियि ह्यथ वैकुंठ नायक,
वीगिस खसनस छुय छायख।
मानर्यन्य पतिव्रता सती द्रायख।।
आयख करने ज़गि पालना।।०।।

'कृष्ण' लोलु तारव सेतार वायख,
वाणी भवॉनी च़ेय गछ़िय सिद्ध।
सुय करि नाद बिंद बोज़नस लायख।।
आयख करने ज़गि पालना।।०।।

लीला 122

पानय मे पान हॉविथ, आशायि दारनॉविथ।
तनहा च़ोलुख मे त्रॉविथ, कस म्यानि जोगि रायो।।
वुछनोवथस मनुक मल, स्वन म्योन द्राव सरतल।
वुछमख नु वारु कोरथम, च़स म्यानि जोगि रायो।।
ह्यकखय वुछिथ चु तिम छ्वख, मुच़रिथ बु सीनु हावय।
च़ुय वन च़े रोस बावय, कस म्यानि जोगि रायो।।
यवु किन्य बेसोम छे कोमल, हृदयस कठोर वॉणी।
ग्रावन दिमव येतिय छ्यन, बस म्यानि जोगि रायो।।
लोबमख तु व्वन्य मु रावुम, बालन कोहन मु छावुम।
सत्संग प्यालु चावुम, मस म्यानि जोगि रायो।।
भगवान सोन बूज़िन असि आश चॉन्य रूज़िन।
ह्थ वाँसि माजि मॉलिस, लस म्यानि जोगि रायो।।
नित्य इष्ट देव संद्यन पम्पोश पादनुय तल।
बंबुर बॅनिथ चवान गछ़, रस म्यानि जोगि रायो।।
पज़ि प्रेयमके प्रभावय भूगान सुख तु सावय।
निरोग राज़ु योगस, खस म्यानि जोगि रायो।।
दय सुंद प्रसाद सतज़न, भक्त्यन छि बॉगरावान।
प्रेयमुक चवान तु चावान, मस म्यानि जोगि रायो।।
बु ति चॉन्य दॉसिया छस च़ेय मूल मालु अर्पन।
युथ छुख चु इष्ट दीवस, तस म्यानि जोगि रायो।।
व्वपकार म्यानि बापथ, थोद यूग पीठ त्रॉविथ।
असि निशि ति कयूँच़ काला, बस म्यानि जोगि रायो।।

यव किन्य चु परमु त्यॉगी, लोगमुत चु राज़ु द्वारन।
यथ फुटमुतिस मनस मंज़, बस म्यानि जोगि रायो।।
बाशन मोदुर मोदुर कर, फुटराव शकरस म्वल।
अभिमान कोसमन हर, अस म्यानि जोगि रायो।।
तनहा च़ोलुख मे त्रॉविथ कस म्यानि जोगि रायो।।०।।

✱

लीला 123

आमुच़ मनस रुच़ वासना।
ईश्वर सफल करि ना सना।।

एकांतकिस गुहलिस अंदर, उपरामकिस शिहलिस अंदर।
पम्पोशु पादन दोन मलान, पनुनिस ग्वरस बो आसुहा।।
पूज़ायि विद कैंह ज़ानु माह, लोलस निषध वँह मानु मा।
छ्यपि चूरि कुनि म्यूठा दिवान, लोत तथ खोरस बो आसुहा।।
यॅच़ लोलु अॅछय वॅछु थाववुन, अॅछ टीटि रोस ओश त्राववुन।
स्वंदर म्वखुच ईकान्ती वुछान, तस स्वंदरस बो आसु हा।।
वाणी तसुंज़ वेग्यान मय, ज़न साम ग्यवनस पानु दय।
तन, मन, बॅनिथ कन बोज़ुवुन, मुदुरिस स्वरस बो आसु हा।।
सत् शब्द नोन वेस्तारिहे, उदगीत स्वर थोद खारिहे।
करुवुन मनन स्वादुल चवान, श्रवनुक सु रस बो आसु हा।।
बूज़िथ श्रवन पादन प्योमुत, संसार निश मोकलिथ गोमुत।
पुशरिथ पनुन सोरुय ज़गत, परमेश्वरस बो आसु हा।।
'वुज़ तात' वॅन्य वॅन्य गारिहेम, कर पदमु हृदयस सारिहेम।
ज़ल बिंदु ज़न मीलिथ गोमुत, स्वख सागरस बो आसु हा।।

लीला 124

हतो ज़ीवो तसुंज़ थव कल।
चु प्रावख सर्वदा मंगल।।

खबर मा छय बु कवु ज़ायोस, करनि क्याह योर बुय आयोस।
स्व मेहनथ कर लबख रुत फल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
मॅ रावर क्षन तु दिन तस विन, स्वरुन हरदम चु ज़ीनिथ मन।
प्रेयम ज़लु चुय मनुक मल छल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
सतन सुत्यन चु सत सॉपन, चु सत ऑसिथ असत मो बन।
अचल ऑसिथ मॅ बन चंचल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
वॅरिथ तय, वोथ, चु थानन फेर, रॅटिथ दम दम वॅरिथ चुय नेर।
वज़िय ज्योति वुज़ी शशिकल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
यिमन अंदर नज़र थॉविथ, पनुन तीज़ा दियम हॉविथ।
सिर्यि चन्द्रम अग्न वुज़मल, चु प्रावख सर्वद्धा मंगल।।
नॉज़ित हठ्ठ वठ चु येंद्रिय ज़ाल, यि कामु क्रूध लोभ तु मोह मद गाल।
उदासीन रोज़ तु भूग अन्न ज़ल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
गछ्छुन युन योस गॅछ्छिय चेय हान, तम्युक कारन चु ज़ान अज्ञान।
व्यचार कर बनि सु मुश्किल हल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
चु भूतन करतु विसर्जन, स्व आत्मुच ज़ान आवाहन।
ज़्यनु मरनुच चलिय गांगल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
चु मेत्रस अथि पनुन ज़र थाव, समुद्रस वस तु वस्वास त्राव।
चु लाल खारख तु लाग डूँगल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
हंस ऑसिथ चु मो बन काव, हंस बन द्वद्ध तु पोन्य अंज़राव।
स्व स्मृत अन सिरन मो डल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।

अँदर्य किन्य सारिकुय कर त्याग, न्यबर्य किन्य सारिकुय थव राग।
वैराग तनि रागु जामु वल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।
चु 'नीलकंठ' कर सन्यास, नदी उपाध पानस कास।
चु सुत्यन तथ समुद्रस रल, चु प्रावख सर्वदा मंगल।।

✸

लीला 125

मनि मंज़ ललुवथ कन्हया लालो।
भय हर बालु गोपालो वे।।

भय मंज़ कडतम दयि अकालो, रक्षपालु हा कृपालो वे।
प्रेयमु रसु भरतम मनुकुय प्यालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
गूपियन सुत्यन मारवुनि छ़ालो, दूख हरु भक्त रक्षपालो वे।
ज़न्म गम कास्तम कंसुनि कालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
दूर्यर चोनुय कोताह चालो, वलनय आस ज़न्मु ज़ालो वे।
द्यानु दुकारि तथ बनि परनालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
खटतम मतु पान रटथो नालो, आस्ताम चु नॉली नालो वे।
लूस्मुत प्रारु व्वन्य कोताह कालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
हारान वुछतु छुस अशने चालो, लालो, छॅत्य गयम वालो वे।
बालि आम बुजर तॉय कॅह्य संभालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
दोह आम सोरान छॅत्य गयम वालो, पलि कॅह ति पोवुम नु मालो वे।
अथ छौन तु न्यथुनोन छुस बे हालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
येलि बनि संयोग आसि कुस कालो, दुय रोज़ि नु कुनि कालो वे।
गुरु शब्दु एकुत बनि नन्दलालो, भय हर बालु गोपालो वे।।
नय छुख आकाश नय पातालो, नय छुख जंगल तु बालो वे।

वनि छुखनु यिवान ऑसिथ नॉली नालो, बय हर बालु गोपालो वे।।
मनसरु कुय बन राज़ु निरालो, 'नीलकंठनि' छुय सालो वे।
रछतम संकटु यॆमि कलि कालो, बय हर बालु गोपालो वे।।

❋

लीला 126

नाद बिन्दु परमानन्द नन्द लालय।
गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

मधु कैटब मारवुनि हा दॊद चूरय, मन मंज़लिस मंज़ करय गूरु गूरय।
गोपीनाथु बालु त्रिज़गत पालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

यादव कुल के माधव रामय, हे निर्मल निष्कलु निष्कामय।
गूर्य बालकन सुत्य मारवुनि छ़ालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

राधा-कृष्ण च़ॆय नादा लायय, श्रीधर प्रेयमु स्वरु मुरली वायय।
रोज़ रामु बोज़ साम वेदुचि तालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

ह्रदयस मंज़ बसुवनि नित्य लसवुनि, असुवनि आसुवनि गरुडस खसवनि।
नालुमति रटहत मो दिम डालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

पंकज तनि वैजयन्ती माला, तरज़ु अकि नाल्य तॉय मौज दुवाला।
संत छिय वॅलिथ बसंत दुशालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

केशवु शिवु रूपु नारायणय, वोन दिथ नोन गोख बिंद्राबनय।
चोन ह्योत चोन प्रेयम मस प्यालु पालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

विदुर जियनुय गरु येलि चाखुय, भावनायि सुत्य ख्योथ सिवमुत हाखुय।
कति गोख तति कोरवन हुंदि सालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

द्रोपदियि अकि कृष्णु नाव सुत्य शामय, पॉदु गॅयि तस ति कुत्य वस्त्र तु जामय।
यीत्य कॅडिस दुर्योधननुय नालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

चानि मायायि सुत्य मंज़ द्वारिकाये, मथुरायि हुंज़ु हिशि लरि तय जाये।
पॉदु गॅयि अकि दमु मंज़ कमि हालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

अजामल द्राव बोड भाग्यवानय, नेचविस नाव तस ओस नारायणय।
मृत्यु विज़ि फूर तस श्री अकालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

श्री भगवानु छुख पानु प्रथ शाये, कुस वोत कुस वाति चानि मायाये।
मोकलाव असि येमि मोहुनि ज़ालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

'कृष्णनस' शिव रूपु दर्शुन दितु चुय, सुय चुय, चुय सुय केवल छुख नु चुय।
श्यामु प्रभात रूपु हावतस कालय, गोकुलानन्द गोविन्दु गोपालय।।

✺

लीला 127

लथ लॉयिथ संसारस।
पतु लारस लॅतिये।।

हंस नादुकिस जानुवारस, नॉल्य जामु छिस छॅतिये।
वुफि तॉर्यम हंस द्वारस, पतु लारस लॅतिये।।

सूर कोर तॅमि अंदकारस, युस वोर सूर मॅतिये।
बुति धारनायि ध्यान धारस, पतु लारस लॅतिये।।

अथ तेज रूपु आकारस फेर ब्रूंठ्य तॉय पॅतिये।
पोंपुर ज़न गथ मारस, पतु लारस लॅतिये।।

लोलु फंबुकिस अंबारस, रेह मे दिच़ सूर मॅतिये।
श्रेह मे छुम व्वन्य कति प्रारस, पतु लारस लॅतिये।।

आरुवल मंज़ लोलु नारय, दॅजमुच़ प्रेयमु सुतिये।
शेहजारस मंज़ छय आरस, पतु लारस लॅतिये।।

नित्य लगुहा सत व्यच़ारस, सत भासुनाव सॅतिये।
स्वर फिरतु च़्यतु सेतारस, पतु लारस लॅतिये।।

वंदुन छुम पान यारस, अंदुन छुम येतिये।
च़न्दुन गोम देव दारस, पतु लारस लॅतिये।।

ग्रज वॅछ़ सोंद्रय नारस, येति ऑसिथ छु तॅतिये।
वन वनुसुय कन दारस, पतु लारस लॅतिये।।

छ़ालु मॉर्य मॉर्य ल्वकुचारस कॅर्य मे पोशन फोतिये।
शेरि लागस जटा धारस, पतु लारस लॅतिये।।

'कृष्णन' दोप बालु यारस, करुहस नालु मॅतिये।
मेलि शेस्तर तु संगि पारस, पतु लारस लॅतिये।।

लीला 128

च़ाल छम अशिने कोताह बु च़ालु लालु।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।

गिंदनस आमुत पायस नु प्योमुत,
न्याय अंज़राव नतु रावय बो।
त्रॉविथ मे कर मु डाल बाल विशाल लाल।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

कृष्ण, चॉन्य द्रुय छम दायय बोज़ख,
लायय नु म्वख्तु मालि पुछ़ि मो खोच़।
अख रटथ नालु लालु बेयि गंडय लोलु मालु।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

देवता यीत्य ऑस्य अंदि पखि बोज़नस,
सीव कॅरनस तस भगवानस।
संतूर वायनस भैरव वेताल ताल।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

पुशुरुन छु म्वख्त मालि माल कव छचथ,
म्वख्तु हार पुछ़ि बु म्वख्तु हारन छस।
वात्यख नु पनुनिय वनुतम छि नालु लालु।।
बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर।।०।।

ह्योर बोन लोभमख नु लूख मा ह्यडनम,
छुख बालुक तु छुय नु हर्श शूक कैंह।
कृष्ण यिम वनान छिय वनुनय कतालु लालु।।
बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर।।०।।

मनस ब्रह्मणस वॅनिस मंज़ नु आखो,
ज़नार्दनु सु नु वॅनिस मंज़।
काल ओस पोज़ तु मे मारन अकाल लालु।।
बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर।।०।।

म्वख्तु मालि पुछ़ि प्वख्तु प्रान गव ब्रह्मणस,
सख्त गोस पानस ज़ि वापस च़ाव।
यियि नय अदु वुछान पानु ज़ाल लालु।।
बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर।।०।।

ॲरिस वुरिस रोग प्योस वॉतिथ,
च़ॅरिस गाटस खुर क्याह आस।
राज़ु हंस ज़ाल लोग च़लुनस नु ज़ाल लालु।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

संसार भ्रम छुय बॉज़्या तु बाज़ा,
सूरमुत बाज़ कस फीरिथ आव।
शश, पंज, चह्वार, सेह बेयि दुखाल लाल।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

'परमानन्द' म्वख्तु हारु कथि कन थाव,
सॅन्य सॅन्य येति क्याह छि सोन डेंशान।
मुक्त गछ़ि युस करि म्वख्तस मालु लालु।।
बालु गोपालु म्यॉन्य पालना कर।।०।।

'परमानन्द' चन्दु छ़ोन वुछान पानस,
नतु कति ओस तति म्वख्तस म्वल।
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्वार माल लालु।।
बालु गोपाल म्यॉन्य पालना कर।।०।।

लीला 129

भगवान कृष्णुन म्वखतु ववुन

गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्यवान।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।

मोक्त मालि रोस ताम कृष्णस डेंशान,
लारन तु नालु मति रटानो।
म्वख डयूंठनस तॉय मुक्त ऑस गछ़ान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

शाह छुसन फोरन तु तोरै छुस प्रछान,
मॉज्य मोक्तु ब्योल छा ववानो।
म्यति वोव ब्योल खल कोनु छख सोंबरानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

हाव बो कुत्य लछ कुल्य खसानु,
बागस छि सासु बॅद्य बागवानो।
तसली गोस छुम कृष्ण मॅच़रावान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

मोख्तस तु म्यॅचि़ छुन बालुक ज़ानानु,
मे च़े क्याह छि यॅच़ फिकिर आसानो।
मोचि क्याह पथकुन यि यस आसि मोचा़न।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

कृष्णुय ह्यकि स्यकि मोख्त आसि करान,

यछ़ पछ़ कोन छव आसानो।

रूदमुत संशय रूद मोख्तु वालान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

जसुधायि मोहु माया ह्यस डालानु,

म्वख्तु क्याह ज़ि त्युथ म्वख्तु आसानो।

युथ छुन म्वख्तु मंज़ राज़ु द्वारस ति मेलान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

अंबनॉविथ छुसनु तमन्ना नेरान,

रंबवनि मालि बालि छुम तंबलावानु।

छकुरिथ मालु बालि छुम तरसावान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

ह्यथ क्या गछ़ि वॅन्य सु प्रोहत वनानु,

हीत छुमन रीत क्याह कव ज़ानो।

बॅनिथ क्याह आम वनिथ कव ज़ानु।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

कॅरनम नु पछ़ म्वख्तु छुन आसानु,

पछ़ क्याह छय श्री नाराणो।

म्यचि़ मुर ऑस दिथ यॅच़ आस भरान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

जसुदायि ह्यस होश नज़ि रूदमुत दानु,

म्वख्तु दानु पुछि दान मनसानो।

मोख्तसर ज़ि मायायि कांह छुन ज़ानान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

ज़गतस मोह अंदकार आव वलान।

ब्वद छखनु सिद्धी छिन प्रावानो।

ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोश आसान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

गरज़मंद लूक ऑस्य गॉमुत्य देवानु,

कृष्णनि कथि पछ़ छिय करानो।

नेरि मा वीरि टंग द्यव नेरि अरमान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

पकन कृष्णस पतु पतु लारानु,

जंगलस मंज़ बाग डेंशानो।

म्वख्त कुल्य बर्‌य बर्‌य तु म्वख्तु फल नेरानु।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

बरॅ्य बरॅ्य छि मोख्तु लंग पथर नमान,

मुफ्त ज़न सु म्वख्तु डार मेलानो।

मथुरायि बूज़मुत म्वख्तु द्युन गुर्यन दान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

आश्चर्य मायायि आयायि वुछानु,

कारण तु ऋषि मुनियन सानो।

ॲन्य ज़न छि तिम ति तति ॲसि हिव्य गछ़ान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

सोंम्बरोव लूकव म्वख्तु अंबर खान,

नन्द गोप म्वख्तु ओस बॉगरानो।

पंच त्रुय भागुनि फौति फौति मेनान।।

चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

पुरोहित सूज़मुत गणेष्ट त्रक सोंबरानु,
दक्षिन यि पूरि पूरि रिंज़वानो।
पछ छयनु लूकन यिवान तु निवान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

गरु आख बॅर्‌य बॅर्‌य वुनि छुख नु रोचा़नु,
म्वखतय छि लूख तृप्त गछा़नो।
भगवान छु चो़पॉर्य म्वखतय छकान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

घरु आव पुरोहित ह्यत सोरि सामानु,
धर्म तु धान यॅच़ छु करानो।
गूर्य कामधीनन म्वखतु मालु पॉरान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

सासु बोज़ु म्वखतु मालु तमि मालि खोतु जान,
रत्नव जॅर्य जॅर्य छि वुरानो।
सोन्यन छि बोग ह्यथ सु प्रोहत सोज़ानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

तव पत गोकुलुक्य जग होम करानु,
देवता कृष्णस छि पूज़ानो।
यछा़ बूज़न ब्राह्मणन ति ख्यावान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

नच़नस तु गिंदनस गूर्य भायि तोषान,
शुर्यन रटनस नु पोशानो।
कृष्णस तु राधा मातायि वनवानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

पुरोहित सु सूज़मुत म्वख्तु दक्षिणायि सान,
ग्यवान तु यॅच़ गव रिवानो।
धनु श्रवनस छुनु म्योन ह्युव खज़ान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

बृश भानस वति कुन अॅछि लोसान,
ब्राह्मणस छु ताम दूरि डेंशानो।
राज्य ज़न प्रॉविथ बाज ह्यत यिवानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

भरान छु म्वख्तु सोनु स्वर्गी सामान,
सासु बॅद्य लूख ह्यथ छि पकानो।
बार, बारु डेंशान तु बारु बारु वनान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

कोरमुत सु तदबीर घरि छुख रोज़ानु,
भगवत मायायि डेंशानो।
वुछनस नु वननस नु बोज़नस नु यिवानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

वनि क्याह कांछ़ा वनि छा यिवानु,
ब्राह्मणस ति छिनु प्रज़नावानो।
सुशीलायि ज़न तु सुदाम वातानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

डींशिथ म्वख्तु माल रत्नव तु सोन सान,
म्वख्तु माल पननिय छय मंदछानो।
पनु पहॉर पननिय छु सुदाम छ़ारानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

डीशि डीशि सोर देश असन तु गिंदानु,
राधा मातायि तुतानो।
डयक बॅड कोस यिछ़ प्रज़ि मंज़ आसानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

संपता नच़नस तु वच़न वनानु,
हर्शस गोमुत सु बृक्ष भानो।
शरण कृष्णस छय राधा गछ़ान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

ब्राह्मण अभ्यागत तु ऋषण सोंबरावानु,
पज़नु खोत ऑस्य धनु खर्चानो।
रज़ि तॉय प्रज़ि मंज़ आश्चर्य ज़ानान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

ज़ग, हॊम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ानु,
तुतान दोशवनि तु वनवानो।
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यवानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

देवियि तु देवता धारणायि धारानु,
राधा कृष्णु कृष्णु ज़पानो।
राज्य लक्ष्मी मॉज्य कॊछि कॊछि क्यथ ह्यवान।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

व्यसु तॉय दासु यिम खास खास आसानु,
तिमनुय सॖत्य गरि गिन्दानो।
गरि गरि करिहे मनि कृष्णुन द्यानु।।
चि़त् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

यी मनि फोरान तु ती आस सोरानु,
प्रेम सुत्य वॉणियि वनानो।
ब्ययि ब्ययि वॅन्य वॅन्य तु ब्ययि ब्ययि वनान।।
चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

'परमानन्द' तति पादन प्यवानु,
सादन सुय फल मंगानो।
टूठिनस राधा सहित कृष्णु भगवानु।।
चित् विमर्श दीप्तिमानु भगवानो।।०।।

✹

लीला 130

मदु कैटब मारुवनि युद्ध वेश धारुवनि।
श्वद शांत दोध चूर गूर गूर करयो।।
शहर शहरु, गाम गामु, रामु रामु परयो।
दक्षन उत्तर पछमु पूर, गूर गूर करयो।।
छिय बसंत रंग जामु, यिनु चानि फोजेम शामु।
लंजि-लंजि मूर मूर, गूर गूर करयो।।
कर हृषीकेशु राग द्वेषकिस शीशस।
खंजि-खंजि चूर चूर, गूर गूर करयो।।
बंबूर गीता छय गोपियि ग्यवान।
स्वर्गु मंडलुचि हूर, गूर गूर करयो।।
सिर्यि दर्शन दितु मोह गटु येति नितु।
यितु नूरकि नूर, गूर गूर करयो।।

होश ऑलिशि पोशुकिस गोशस प्यठ बेह।
श्यामु रंग बंबूर, गूर गूर करयो।।
तुलसी छावय हियि तन नावय।
फॅलिलु मशुकु काफूर, गूर गूर करयो।।
मनन्कि तेलन निदि ध्यासन टोठ।
श्रवनुकि कनु दूर, गूर गूर करयो।।
राजु योगु मंज़ बोज़, सॉन्य ताज़ु ताज़ु स्वर।
प्रेयमु साज़ु संतूर, गूर गूर करयो।।
दिहु अभिमानुक कुल ह्यथि छेननुय।
तीव्र वॉराग सूर, गूर गूर करयो।।
हे हरिहर, पाप हर 'कृष्णस' कर।
अनुग्रेह पूरि पूरि, गूर गूर करयो।।

*

लीला 131

मंज़ पोशु बागन प्यठ नागरादन।
फेरुनि द्राहम सादन सुत्य।।
कन थावतम प्रेम बॅरत्यन नादन।
आदन बाजि छम लादन चॉन्य।।
पूर्यर करतम थॅविमत्यन वादन।
फेरुनि द्राहम सादन सुत्य।।

*

लीला 132

शिव शंकर भव भय हर, हर् लगयो चरनन।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।

चरनन तल वार वरतम, वरदा छुख शरनन।
शरनुय च़ेय आस, कासतु मल मे अंत:कर्णन।।
कर शंकर कर रटहम, कर अर हर मरनन।
मर मर छुम ज़्यनु मर्नुक, अमरेश्वर भगवानु।।
पादि कमलन तल मे पालतम, पालुवुन छुख कालहन।
हनि हनि च़ुय शिव वुछहथ, द्येव दुय गॅलि हन हन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

दुय अदुय दय मे गछ़तम, कर् दयि दयि निशि द्यन।
दीन दयाल कन मे थावतम, दीनु वच़नन तु वदनन।।
ज़र ज़र छुम ज़ुज़रनकुय, ज़ीरुनावतम मत हन।
हनुनावन हनुनावतम, मनि मोह युथ मुनियन।।
देह पुष्ट मन तुष्ट थावतम, देवजुष्ट छुख दुष्टन हन।
पानय ईश्वर पानय तोशतम, पान वन्दयो तोशनन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

अंत कुस ज़ानि च़ेय अनंतस, संत व्यसुरेय चेन्तनन।
क्याह नेश्चय करि वेदांतीय, यत्य वेद लग्य पंथनन।।
ब्रह्मादिक गय मोहस, तत्व चोन क्या व्यचुरन।
तत्पुरुश चुय तत्व मे भावतम, वथ मे हावतम ज़ानन।।
गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन, सथ छम शाप मोच़नन।
शाप मोच़न ज्ञान लोचन, पॉर्य आर्या लोच़नन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

तेजोरूप तेज़ चुय छुख, सोम सूर्यन तु ॲग्नन।
तेजोरूप चुय भासान, बह्म अंतर योगियन।।
स्वप्रकाश तु स्व अनुभव गम, शांत तेजः ज्ञानियन।
शिव मेति दित कर्म सुम स्यज़, ज़ान यिछ़ ज़नकॉदिकन।।
ज़ान ज़ानुन ज़ाननुय चेय, क्याह बु ज़ानु चान्य ज़ॉन्य व्यन।
ज्ञान व्वपदीशि वार वरतम्, फिर अज्ञान पटलन ।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

निष्कारण सर्व कारण, च़ेय कारण कारणन।
त्रेकार छुख चुय कारण, सृष्ट स्थित तय प्रलयन।।
चुय कर्ता चुय भर्ता, चुय हर्ता ज़गतन।
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत, चुय निरंतर भवनन।।
बु ज़ि क्याह वन चु ज़ि क्याह छुख, युस न ज़ोन कांसि ज़ॉन्य व्यन।
ज़ान सॉरुय चॉन्यी दया, चॉन्य कृपा भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

देव पोज़ छुख देव पूज़नीय, पूज़ा व्यद पूज़नन।
विज़ि विज़ि बुजि पज़ि पूज़हथ, युथ च़ु पूज़नख वेष्णन।।
भाव बामन फवलुनॉविथ, मालु करुहय कोसमन।
बो स्वमन्य व्यनु लागुहय, बॅयि गॉंद्य करुहय कोसमन।।
स्ववोन्दु येछि़ पछि़ हंदि पोश, लागुहय पादि कमलन।
पादि कमलन तल मे पालतम, तल ह्यथ क्यथ विघ्नन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

शुद्ध निर्मल शिव पूज़हथ, द्येवु सपुन्य शुद्ध मन।
शुद्ध मनु च़ेय ध्यान दॉरिथ, शुद्ध सफाटिक विकसन।।
नीलु कण्ठस च़े हटि वासुक, च़ित आत्मस तमोगन।
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छेयय, तारुवन्य सुज़ि नरकन।।
शिवा धॉरमुच़ वाम बागस, च़ित शक्त च़ित आत्मन।
धर्म रूप वृशब वगि त्रिशूल, त्रि अवस्थाय अथि सन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

श्वेत सुन्दर छु तु बस्मा, तनि प्रकट्योव सतोगुण।
रुण्ड माला गॅल्य गंडमॅच़, रोष कोरमुत यॅंद्रियन।।
क्याह छय जटा मुकट शोभान, छल गोंडमुत रजोगुण।
ट्येकि शायि हेरि डेकि च़न्द्रम, प्रकट्योय चोन शुद्ध मन।।
त्रिदाम छुख ज्ञानु ब्वज़तय, त्रिकार रूप त्रिनयण।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

माया तीत माया चॉन्य, त्रिगुण सुत्य विकसन।
निर्गुण छुख गुण उल्लङ्घित, माया गुण विलसन।।
भूत भावत भूत पंचक, देह खरु कोर अहमन।
दह यँद्रिय मन बुद्ध ह्यथ, प्रानुबल सुत्य प्रसरनु।।
सच्चिदानन्द रूप आत्मन, ज़ीव भावस कोर शयन।
तादात्म भाव देह के लोभ, प्राकृत बल जीवनन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

मोह ज़ाल सुत्य ज़ीव गण्डनय, आव कर्मन्यन बंदनन।
काम क्रोदन स्थित रटनस, प्यठ मनस बुज़ तु यँद्रियन।।
द्वन्द्व भाव तु रागद्वेष सुत्य, काप्य लोग षट् शुत्रन।
गुण संङ्ग सुत्य यित गछि लोग, पुण्य पाप वश बांध जन।।
म्वकुजारुक व्वपाय चुय शिवु, मोक्षदा छुख भखुत्यन।
भव भंदन म्वकुलावतम, छुख चुय भवु भवु भयहन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

निष्प्रपंच चोन सोरुय प्रपंच, वाँस छम कस बरु कन।
हे हरे हर विरिंचि बोज़तम, क्याह वन पंच दैवतन।।
वन चु क्याह करु चंचल मनु, संसार क्यन ख्येंचलन।।
पंचवदन म्वकुलावतम, कँह अन्त छुन नु चानि व्यन।।
कुन कुन कुन कुनुय तोष्तम, कँह अंत छुनु हेरि ब्वन।
रुति म्वखु स्वखु म्वखु वरतम, मुख सुन्दर द्वख हन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

सम दितम संपदा यव सम, सोम रोज़ुहा समयन।
सम यस गॅछ़िय चॉन्यी दया, लगि सुम स्यज़ समयन।।
सम्य सोमरन प्रथ गुण किन्य, समयन तय साधनन।
सोम आहार सोम विहार, सम निंद्रा तु जागरन।।
संबॉलिथ पानस सुम, सुम शुज़ुरिथ शायहन।
लगि समाध योग सम स्यज़, विज़ि सत् ग्वर् वच़नन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

भक्ति प्रिय भक्ति दायक दय, युस यछ़ुहन भक्ति ज़न।
भक्ति भावत भक्ति भावनाय, च़ेय कुन लॅग्य निशि द्येन।।
भक्ति वत्सल भक्ति छलुबल, बल फिरि गुडु विशयन।
दरि श्रद्धाय ध्यान दॉरिथ, रटि प्रान बुद्ध च्यथ तु मन।।
यम नियम शम दम समि मन, स्वरि सुय दय क्षण क्षण।
मन ज़ीनिथ पोज़ च़ीनिथ, गछ़ि ज़ीनिथ भवनन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

यस संस्रति पोत अच़ि मन, सुस्त ऑस्यतन विभवन।
लोर आसि नु अन्न धन्नन, गरबारन तु संतानन।।
व्यवहार च्यन काम्यन प्यठ, परद्यन हुंज़ु कामि ज़न।
प्रारब्धुक भोग भूगान, भूगवुन ज़न स्वप्नन।।
रागीज़न सार्यसुय सुत्य, त्यागिथ सर्व कामनन।
गछ़ि संसार सरु तॅरिथ, लड करान सुह ज़न।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

योदवय काँसि ओरय यियि भंग, संग मेल्यस साधुज़न।
साधुजन युस सॅम्य च़ित तय, ममताय निश आसि ब्यन।।
ब्योन रुत क्रुत द्वन्द्व भावन, छ्यन दितु सर्व कामनन।
शम दम ज्ञान विज्ञान सोस, रोस कपटन तु कल्पनन।।
ब्रह्म तत्पर ऑस्य ऑस्यस, परेह्ट सर्वु विश्यन।
बोड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्याग, लॅब्य जि बु ह्यिव साधुज़न।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

युस कांह येछ़ि पानस रुत, क्रुत त्रावि प्रावि शुद्ध मन।
शुद्ध मन भक्ति भावत गुण, कन थावि साधु वच़नन।।
साधु वच़नव प्रावि जाग्रत, ज़ॉग्य ज़ाग ह्यथ समयन।
समय वॉत्यस शम यम नियम, पानय तॉर्य तस मुच़रन।।
दीन दयाल हे कृपाल, काँसि गथ छय नु चॉन्य ब्यन।
सत् भाव छ्म सथ चॉनी, सत् गथ दिम भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

तेलि च्य़ूनुम बु ज़ि क्याह छुस, येलि वॉचुम चेनुवन।
च़ेननु आयम दया चॉन्य, च़ेननावान सेवकन।।
भक्ति योदवय म्वख्त थावहम, म्वख्तु छुस निषबंधनन।
सु प्रकाश तु अविनॉशी, मशिविथ ज़्यन मरननन।।
सत् चित् आनन्द रूपस स्थित, नयन ह्यथ निर्गुण गुण।
पॅज़ दया चॉन्य भगवन, करि क्याह म्यॉन्य वन वन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

शांत निर्मल ब्रांत छम चॉन्य, मानतम सॉर वन वन।
अख शुभ दृष्टि शिव करतम, नाव चोन शुभ अशुभन।।
शुभ दायक शुभ दृष्टि चॉन्य, सॉर शोभा शोभियन।
शूभुवुन च़य त्रेन भवनन, शूभहथ पोशु वर्शणन।।
शूवरावतम ज्ञान संपदा, शूभ युथ यियि ज़गतन।
शूभ सोरुय चॉन्य दया, चॉन्य कृपा भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

अविनाशि बॅढ आश पूरतम, नाश करुहा कल्पनन।
आशा पूरु आशा चॉन्य, आश छम राश पपनन।।
गटि हुंदि गाश चित प्रकाश, गाश अनतम नेत्रन।
मॉशविथ रोज़ सर्वु कल्पनन, नॉशविथ सर्वु वासनन।।
प्रकाश शांत सु प्रकाश, चुय गाशुर गाशरन।
परु प्रसाद गुरु प्रसाद, करू प्रसाद भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

संसारुची छोच आशा, शुर्य मुर्य ताय संतनन।
बॉय बंद तय धनु संपत, गरु बार तय स्त्रीज़न।।
सोर असोर भ्रम सोरुय, मृग तृश्ना यिथु ज़न।
शिव चुय म्योन शुर्य मुर्य तय, भॉय बंद तय सॉरी ज़न।।
चुय मोल मॉज्य चुय गरुबार, चुय संपत द्वार ज़न।
चुय सोरुय चुय सारुय, सहा रोज़तम भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

लोभ छुम नु स्वर्गन हुंद, ख्यूब तिन बेयि नरकुन।
रुत क्रुत स्वख द्वख भूगान, फल पनुन्यन कर्मन।।
हर नाव सुत्य थरु थरु अज़ान, दूरि यम केंकरण।
शिव भक्त संज़ सहाय छांडान, माय पनुन्य देवगण।।
अख शुभ दृष्टी शिव छम चॉन्य, लछ विभवन तु स्वर्गण।
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम, पानय वरतम भगवन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

नव नाथेश्वर च्रुय छुख, नव निदान छुख सेवकन।
नॅवि खोतु नोव नोव वुछुहथ, लगि नोव नोव नवनन।।
नव गॅड़िथ नव रटिथ्रुय, नव प्रनव व्याहरन।
नव दक्षपाल ह्यथ रोज़तम, ईश रॉछ निशि विग्नन।।
नवदुर्गा करि पक्ष म्योन, युस रक्षक शरणनन।
नवद्वार पुर खस वुफ ह्यथ, नववुन्य शिव भवनन।।
गुरु लगयो पादि कमलन, सत् गुरु लगयो चरितन।।०।।

✹

लीला 133

निस्पंद सॉंपन स्व वोंदु सुत्य नित्य भगवत धारना धर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

मानुष्य ज़न्म दुर्लभ देवन, सुलब ज़ीवु प्रोवुथ च्रे।
गुरु शास्त्र पुर्शारिथ पूर्वक, निर्मल बुद्ध सॉंपनी।।
क्यों सोया मोहनी सजया, पर जाग रे चोत्रुर नर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

अब है गोविंद मिलने की भारी सब काज तजा कर।
गोविंद चर्नारबिन्द अमृत पी के मन रज़ा कर।।
मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल।
कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल।।
गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्यमय अक्षर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

त्युथ श्वब समय कर सना यियम युथ मे वरि रघुराये।
रघु कुल दीपक दर्शन दियम करि म्योन मोक्षोपाये।।
श्याम सुंदर राम चन्द्र दर्शुन आसि नख़ु शांत भासकर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

✷

लीला 134

दिम मे रुच़ तु शुद्ध वॉणी, महारॉज्ञी भवॉनी।
यछ़ तु पछ़ छम मे चॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

मंगुहॉय च़ेय बु वरदान, छुम नु मंगनुक मे त्युथ ज्ञान।
रुज़ मा चॉन्य मे निगरॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

येलि नु चु थवख म्यॉन्य कल, वनु कस बु छुस दुर्बल।
कुस लबन च़ुय ह्यु बु दॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

यलु छु चोनुय योत दरबार, पूर् बॅर्य बॅर्य छि अंबार।
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

कांह अखा ति आशावान, वाति युस च़े निश मायि सान।
लभि नु ज़ांह सु मानुहॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

यस चु रोज़ख पानु डखे, दॉर दिख स्व मनु भक्तु अधिकार।
पोरि कुस तस प्राणी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

भक्ति भावस चु छख लॉर, फल दिनस छा च़े निशि तॉर।
छुय च़े नाव ईशॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

छख शिवा चु शिव शक्ति, चुय हय युक्ति तु मुक्ति।
चुय उमा चुय ब्रह्मणी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

नव निदान छिय च़े बड्य कोश, दिम मे परम स्वख तु 'संतोश'।
छुस मंगान बु सुय च़ेय ज़ॉनी, महारॉज्ञी भवॉनी।।

✹

लीला 135

मॉज्य शारिकॉय कर दया, वर दया ही भवानी।
कर दयायि हंज़ दृष्टी, स्व छि बॅड मेहरबानी।।

आय लारान चे निश योर, कर्म खुर्य भवॉनी।
मतु वुछतु कर्मन कुन, स्वय छम पशेमॉनी।।

कौताम रोज़ि युन तु गछुन, कौताम रोज़ि क्रेशुन तु वदुन।
तार दिवान सारिनुय छख, असि ति रोज़ तारानी।।

कुपोत्र छु माजि आसान, मॉज्य छन तस ति रोशान।
अॅस्य मंगान चॉनी दया, जगतच राज़ुरॉनी।।

नखि छख डखि छख चुय, चेय सिवा कांह ति छुन ब्याख।
दोह तु रात चोनुय फिराक, अख अज़ाब रूहानी।।

ऑश वसान चालि चाले, मॉज्य भवॉनी हावी दर्शुन।
कॆंह ति छुन तगान बोज़ुन, कॆंह नय छिय अस्य ज़ानॉनी।।

बूज़मुत छु हलि मुशकिल, बनि ॲसि तवय आयि योर।
अख रछ़ा करतु वुन्य गोर, हीमालुच राज़ुरानी।।

दासा छु दर इन्तिज़ार, भवसागरस दिस तार।
ल्यमबि मंज़ पंपोश खार, बोज़तय चु म्यॉन्य ज़ॉरी।।
मॉज्य शारिॅकाय कर दया।।०।।

लेखक:- त्रैलोकी नाथ हशरा

✸

लीला 136

उों नमो भवान्यं।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नविम-तरंग)

लल वाख

अभ्यास किन्य व्यकास फॊलुम,
स्व प्रकाश ज़ोनुम यिहोय दिह।
प्रकाश ध्यान म्वख यिय दोरुम,
स्वखुय बॊरुम कॊरुम तिय।।१।।

ग्वरु कथ, हृदयस मंज़ बाग रॅटुम,
गंगज़लु नॉवुम तन त मन।
सो दीह जीवन मुक्ती प्रोवुम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख।।२।।

पानय आव पानस सुतिय,
पानय पनुन कॊरुन व्यचार।
पानय पनुन पान नेछिनोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान।।३।।

ल्लि ग्वर ब्रमांड प्यठय किन्य वुछुम
श्यशकल वॉचुम पादन तान्य।
ज्ञानकि अमरयतु प्रकरथ बरुम।
लूबय मोरुम अन्दु वन्द तान्य।।४।

क्रेया कॅरुम दग्मु कोरुम,
तिरथन नावुम पननिय काय।
पापन सॉबरिथ बस्म कोरुम,
तति कुस ओस तय योत कमु आय।।५।।

पवन त प्राण सोमुय ङ्यूठुम,
मीलिथ रूदुम शेर खोर तान्य।
दिह येलि मोठुम अदु क्याह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्रान।।६।।

मनस सॅतिय मनुय गोंडुम,
च्यतस रटुम च़्वपॉर्य वग।
प्रक्रच़ सुतिय पोरुष वोलुम
सरु मे कोरम लबुम वथ।।७।।

कथा बूज़ुम कथुय कुॅरम,
कथाय कॅरुम च़्वपॉर्य सथ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़ुम,
कथायि हावुम सतच वथ।।८।।

पूरक क्वबक रेचक कोरुम,
पवनस त्रावुम प्यठय किन्य वथ
अनाहतस बस्म कोरुम,
केंह नो मोतुम सोय छय कथ।।९।।

केंहनस प्यठय क्या छुय नचुन,
मोचिय केंह न तु नचुन त्राव।
पोत फीरिथ छुय तोतुय अचुन,
यिहोय वुचुन च्यतस थाव।।१०।।

कमुर्क कुल नो छुय वनिथ गछ़न,
वॅनिथ गछ़न क्याह छुय पाय।
कशफुक फल छुय मीलिथ गछुन।
वॅलिथ रॊज़ुन कुस छुय न्याय।।१२।।

कायस अन्दर रूदुम अॅच़िथ।
न्यायस थॅवनम च़्वपॉर्य शाय,
पाय कॆंह लॊबुम नो माय छस कॅरिथ,
ज़ायस न आयस लॊगुम नाव।।१३।।

कोसम बागस ह्यॊतमय अचुन।
पच़ियय मन तु अचुन प्राव,
स्वरूप दरशुन छु तॊतुय अचुन।
कॊत छुय गॅछुन पकुन त्राव।।१४।।

कामस सुॅतिय प्रय नो बॅरुम।
क्रूदस द्युतुम पवनुन फेश,
लूबस मूहस चरन च़ॅटिम।
तृष्णा च़जिम गॅयस ख्वश।।१५।।

ल्यक न थॊकु प्यठ शेरि ह्यचम।
नॊन्दा सुपनिम पथ ब्रॊंठ तान्य,
ललि चिहन कल ज़ांह नो छॆनिम।
अदु यॆलि सपनिस व्यपिहे क्याह।।१७।।

ज़गतस अन्दर कॉत्याह पॉलिम।
सारिय छि छ़ांडान दयि सॅज़ वथ,
लछि मंज़ अकिस दया ज़ॉनिम।
मॉनिम यिय दॅप्यज़ि ईशर गथ।।१८।।

गायत्रेय अजपा छलु अकि तॉजिम।
सूहम सतचिय कॅरमस थफ
अहमस लोत पॉठ्य जठ्र्य वॅजिम।
ग्वरु कथ पॉजिम च़ॅजिम च़ख।।१८।।

क्वल तय म्वल कथ क्युत छुय।
तोत क्युत छुय शांत स्वभाव,
क्रयि हुंद आगुर वति क्युत छुय।
अन्तः क्युत छुय ग्वर सुंद नाव।।१९।।

श्रान तय ध्यान क्याह सनु करिय।
च्यतस रठ त्रकुरय वग,
मनस त पवनस मिलवन कॅरय।
सहज़स मंज़ कर तिर्थ स्नान।।२०।।

प्राणस सुत्यी लय येलि कॅरुम,
ध्यानस थवुनम न रोज़नस शाय।
कायस अन्दर सोरुय वुछुम,
पायस पोवुम कॅडमस ग्राय।।२१।।

मनस ग्राय चॅज पज़िकुय अन ख्योम,
तव कुय बल गोम करमस क्रय।
आगुर वॉतिथ अमरथुय ज़ल चोम,
छिवलुय मन गोम बॅरुमस प्रय।।२१।।

मेथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष।।२२।।

कायस बल छुय मायस ज़ागुन,
प्रानस बल छुय शब्द स्वरूप।
आयस बल छुय तत्व व्यद ज़ानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य।।२३।।

गगनस भूतलस शिव यलि डयूठुम,
रवसु लबि न रोज़नस शाय।
सिर्यिक्य प्रबावु व्यशमयु ज़ोनुम,
ज़न गव थलस सुत्य मीलिथ कयाह।।२४।।

वावुच ग्राया पानस वुछिथ
वानस डयूँठुम सोरि रंग वस।
ध्यानस अन्दरु दमु दमु मीलुस,
ग्वनन त्रोवुम मुचरिथ बर।।२५।।

रोज़ुनि आयस गछुन गछ़यम,
पकुन गछ़यम वावलूक पाल।
केंहनस प्यठय नुचुन गछ़यम,
अचुन गछ़यम सूक्ष्म प्रकार।।२६।।

वाख छोह दिथ म्वखस ब्योठिम,
म्वखस ड्रींठुम रोज़नस शाय।
दवखस अन्दर न्यंदुर मीठुम,
ब्वद येलि ज़ीठुम मीठुम कथ।।२७।।

शेलायि हंज़य वोतमा बॅज़म,
सोंबरुम टयोक पोश आसन पठ।
मनस अन्दर व्युचार कोरुम,
वुछम त डयूँठुम शेल कनिवठ।।२८।।

ज़न्म प्रॉविथ व्यबव छ़ोंडुम,
लूबन बूगन बॅरुम प्रय।
सॊमुय आहार स्यठा ज़ोनुम,
चो़लुम द्वख, द्वखु वाव पोलुम।।२९।।

जल प्योव पकुन थ्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद।
आकॉश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट बासुन आसुन च्यथ।।३०।।

अन्दर ऑसिथ न्यबर छ़ोंडुम,
पवनन रगन फयुरनम स्रेह।
ध्यान किन्य दय दगि कीवल ज़ोनुम,
रंग गव सन्गस सुत्य मीलिथ क्यथ।।३१।।

ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रुप रस गंध सुतिय ह्यथ।
आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम त्वॅथ दोरुम शेरस प्यठ।।३२।।

जन्म प्राविथ कर्म सोदुम,
दर्म पोलुम स्वय छम सथ।
नयत्रन अन्दर प्रेयम दोरुम,
चो़रुम तु मोनुम यिहोय अख।।३३।।

र्स्वगस माजुन क्याह छुय बासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश।
चख रश न आसुन शिवमय आसुनो,
पानय आसुन कासुन भेद।।३४।।

मनस ग्वन छुय चंचल आसुन,
च्यतस ग्वन छुय गछुन दूर।
जीवस ग्वन छुय बोछि त्रेश आसुन,
आत्मस ग्वन छुय न आसुन लीफ।।२५

शिव तु शख्त कत्यू ड्यूँठुम,
तिमव रटुम कायस जाय।
दायस धैर्यस सने मीठुम,
तीलिथ रूजुम त्राविथ लर।।३६।।

सतस सुतिय सोदा कोरुम,
हरस कोरुम ग्वडु सीवन।
शेरस प्यठ्य किन्य नुचान डयूँठम
गछान ड्यूँठुम आयम पछ।।३७।।

कुनुय अछुर वुबरि पोरुम,
सुय मे रोटुम हृदयस मंज़
सुय मेय लोत पॉठ्य गोरुम तु चोरुम,
ऑसुस सरतल गॅयस स्वन।।३८।।

लीला 137

श्री कृष्ण कार जी

वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नम।:
मेहरे चराचर सुँदरी श्री शारिका देवी नम:।।

अव्वल तुई आखिर तुई बातिन तुई ज़ाहिर तुई।
गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका........।।

जगरा सशे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई।
जिसमे जहां व जान तुई श्री शारिका........।।

लक्ष्मी जहांआरा तुई ममाई देश अपज़ा तुई।
बुद्धी महा विद्या तुई श्री शारिका........।।

देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरु दाता तुई।
माता पिता भ्राता तुई श्री शारिका........।।

हाजत रवाए आलमें शाहे शुज़ाअत अक्रमे।
कायम मुकामे दाम में श्री शारिका........।।

अज़हर से कारन बर्तनी दर्हर से आलम सर्वरी।
बर्फर कि इन्द्र मुश्तरी श्री शारिका........।।

सीमवो जरो बहरे दुरो लोलोए लाला गवहरी।
ज़ेबे दु आलम अनवरी श्री शारिका........।।

सहम व गजन फर वा हनत शिवजी अस्त जेरे आसनत।
लालो जवाहर दामनत श्री शारिका........।।

तू चार दह रत्ने गिरा तू नव निदाने बेकराँ।
तु कानि गवहर दर अमा श्री शारिका........।।

शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका........।।

नागे त्रिलूको तिर्थ जात सरचश्मे आबे हयात।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका........।।

गरदे रहत कोहलय बसर खाके दरत् नूरे नज़र।
संगे समीरत सीभव ज़र श्री शारिका........।।

नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहरे अनवरी।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री शारिका........।।

चि़करी शरवहाजत् खा साजद् गदा रा पादश।
वाह-वाह चह लक्ष्मी थापना श्री शारिका........।।

रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी।
चहरव कुनम् ज़रदोजरी श्री शारिका........।।

दर बारगाहत रोज व शब नारद मुनीशर बा अदब।
दरबानि दरगाहत तलब श्री शारिका........।।

गुल अज़ सरे खुद मी कुनम, ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्।
पूजायतू खाहम् कुनम् श्री शारिका........।।

अफ सुरद । अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा।
दस्तम बिगीर अई देवता श्री शारिका........।।

ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्ण कार।
गोय द त्वता जोयद दया श्री शारिका........।।

*

लीला 138

शिव-शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव-शंकर शम्भो!

मन शुद्ध बनि साक्षात् ननि, हनि हनि गटि मन्ज़ गाश।
सुव्यचा़र ब्यथि श्रद्धायि पर, शिव-शंकर शम्भो।।

प्रभातस अछ़ मन्दिरस, गंग-ज़ल तन नॉविथ।
ध्यान-धारनायि मनि-मन्ज़ स्वर, शिव-शंकर शम्भो।।

शिव नाथस गॊड दि ॲशि-जल, शेरि लागुस भाव - पोश।
मन - प्रानु वारु तुता कर, शिव-शंकर शम्भो।।

इन्द्रिय नवीद स्वम्बराव, मन - त्रामॅरि मन्ज़ थाव।
दिह दीप ज़ॉलिथ वारु पर, शिव-शंकर शम्भो।।

वासॅनायि धूप थाव दज़वुन, विज्ञान - दीप व्रज़वुन।
व्यज़ - पुर्वक व्यज़ना कर, शिव-शंकर शम्भो।।

सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव, शिव - अनुग्रह यिथु प्राव।
शिव न्यथ स्वर चलि ज़्यत मर, शिव-शंकर शम्भो।।

पं० जानकीनाथ कौल 'कमल'

✸

लीला 139

गरि गरि पूज़ कर ग्वर् पादन तय।
बट् यिकवट् रट् मन तय प्राण।।
ग्वर छुय ब्रह्मा जी आसन तय,
ग्वर छुय सत कनि श्री भगवान।
ग्वर छु महेश्वर आस मानन तय।।
बट् यिकवट् रट् मन तय प्राण।।०।।

ग्वर् शब्दस प्यठ वार् थाव कन तय,
तार् तार तारसर् पन्नुय पान।
ज़ेरि ज़ेरि देव् आसि नाव नेरन तय।।
बट् यिकवट् रट् मन तय प्राण।।०।।

सूहम हम पज़ि रज़ि लमुन तय,
बाल रठ नाव छुय वाव् अग्यान।
लबि रोज़ आसख तार लबन तय।।
बट् यिकवट् रट् मन तय प्राण।।०।।

व्येल् छुय सुलि व्वथ प्रथ प्रबातन तय,
क्रथ कॅर्यज़ि व्रथ थॅविज़ि पॅयि लयि सान।
खय कास मन्किस आईनस तय।।
बट् यिकवट् रट् मन तय प्राण।।०।।

पारदिस नख तल येलि रोज़िय स्वन तय,
रॉविथ आसख म्वखतु लबान।
म्वच़ि पथ कुन मेच़ि रोपुबदन तय।।
बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण।।०।।

काम क्रूध च़ूरन लूब मुहहन तय,
राज़स ताहराज कोरुहय जान।
पानु दातु ऑसिथ छुख बेछन तय।।
बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण।।०।।

ब्रह्मन मनु किन्य छुख च़ुय ब्रमन तय,
ब्रह्ममत माया छि ब्याख आसान।
पनु सुत्य डींज्य ज़ान डेंजि सुत्य पन तय।।
बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण।।०।।

ब्रह्ममय च़राच़र त्रेन बवुनन तय,
दीशि काल दूरि दूरि निशि रोज़ान।
हिशर न कुनि सुत्य, सुत्य डेंशन तय।।
बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण।।०।।

'परमानंदसुय' ग्वंदि 'लॅख्यमण' तय,
वंदु तस पनुनुय ज़ुव तय जान।
तवु आसु परम आनंद प्रावन तय।।
बटु यिकवटु रटु मन तय प्राण।।०।।

✵

लीला 140

श्री श्याम स्वंदर म्वरली मनोहर, अज़र अमर मुरॉरी।
ज़ानिय नु ब्रह्मा विष्णो महेश्वर, अज़र अमर मुरॉरी।।
कीशव केशन करहोय चामर, चुय शिव वुछहोत च्वपॉरी।
रेशव ति ड्यूठुख नु ही व्यशम्बर, अज़र अमर मुरॉरी।।
सतन सॅदरन हुंदे आगरु, यिम तारु तॅर्‌य तिम कॅम्य तॉरी।
रॅत्न च्वदाह चुय द्राख श्रीदर, अज़र अमर मुरॉरी।।
शुरा ज़ॉनिथ शुर्‌यन अंदर, गिन्दान चेय सुत्य ऑस्य सॉरी।
शुराह सिंगार पुरिथ छु स्वंदर, अज़र अमर मुरॉरी।।
दीव कन्यायन मंज़ ह्यथ शंकर, शकर वुठ ऑस्य वुसॉरी।
गंदर्व ग्यवान छिय कृष्ण गोन्दर, अज़र अमर मुरॉरी।।
पूरब पछिम दक्षिन उत्तर, वुछान वुनेमित्य टॉरी।
ब्वछि हेत्यन सिर्यि लोग लगनि दरु, अज़र अमर मुरॉरी।।
वदान ॲशिस कोरमुत छु अम्बर, चुय छुख नु बोज़ान यिम ज़ॉरिय।
मुनियन गाश सूर गनन छु असर, अज़र अमर मुरॉरी।।
पथर पेयि ॲस्य व्वंदु गोय चेय पत्थर, वतन न्यथुर वथॉरिय।
दर्शुन दितु व्वन्य असि ति रछतु सतुर, अज़र अमर मुरॉरी।।
वॅछ्‌य तु गॉव रूज़िथ चाने आसरु, पछि ज़न छि रूज़िथ अनुहॉरी।
गॅछ्‌य असि तिम ह्यथ गछुहव गर, अज़र अमर मुरॉरी।।
वोमा असि कॅंह क्षमा सागरु, चेय मा नफा असि खॉरी।
ईशरु दर्शनु चलिहे असि शर, अज़र अमर मुरॉरी।।
गूकल मंज़ येलि वॉचुय खबर, लोबहख नु छ़ॉरिथ च्वपॉरी।

छ़ारनि लॅगी अंदर् तु न्यबर्, अज़र अमर मुरॉरी।।
वन् वन् फेरान बनि चोन आसर्, पान हाव लगहोय च़ेय पॉरी।
जसदा नन्दन वासुदेव पुत्र, अज़र अमर मुरारी।।
'परमानंद' ओस वनान आश्च़र, अरमान ह्यथ गॉमित्य सॉरी।
परमान् पनुनिय करि कोंछ़ा सर्, अज़र अमर मुरॉरी।।

✷

लीला 141

श्याम स्वंदर मुरली वोलुय।
खेलि बना रास मंडोलुय।।

काच़् ज़ूना चमकान द्राये, वॉच़ बन्दन याद छुय नाये।
याच़नायन यछ़ि बॅरिव लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
कव् लजिमच़् छ़व् जंजालय, लज़ि वजिमच़ मूहनिस ज़ालस।
शुर्य तु बॉच़ बेयि मॉज तय मोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
गंग् ज़लय छॅलिने तनय, क्वंग मलवय बेयि च़ंदनय।
रंग् रंगय वलवय सोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
प्रेयि कृष्णुनि बरवय प्रीती, पकिविय नेरव तस सुत्य सुतिय।
ल्वलि करोस लोल् मंज़ोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
रोशि करवय पोशन मालय, पोशनूलस डॉलिवे नालय।
पालुवन्य अज़ वाद् सोन पोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
मोर मुकट दॉरिथ छु स्वन्दर, अज़ छु तोशन पोशन अन्दर।
वॉल्य गोशन नॉल्य ज़ंगोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
क्वंग् च़न्दन ट्योक तस मथय, बनसरी बेयि पम्पोश अथय।
कीशवस केश रम्बोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।

राधा अख बेयि गूर्य कन्ये, आरनुय मंज़ न्यथुनने।
मान अभिमान यिमव ज़ि गोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
रासु रस च्यथ मतेमच़य, क्रेशिवुने त्रेशि हच़य।
अछु रछ़न तति मन डोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
व्यकसनय आमुचु व्वसय, कोई रोवे कोई हसय।
वसि मंज़ फोल अलु ब्योलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
दीव सॉरिय सॅमिथ आये, दीव स्वंदर गन्धर्व आये।
कॅतिजि ज़न वेरि यीरान ओलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
ज़नि पथ ज़ोन सुत्य सुत्य नच़ान, सारिनुय मंज़ कुनि छिनु व्यच़ान।
वाजि हुंदुय क्रेंख म्वलोलय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
व्यास नारुद ओंद पोख रूज़िथ, स्वरु डॅलिमित स्वर्य स्वर्य बूज़िथ।
साज़ सारंग मृदंग तय ढोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
ऋशि तु मुनी वॅथिमित्य तपव, लीन गॉमित्य वीनायि ज़पव।
मूह जंगल यिमव ज़ि ज़ोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
तारि गोमुत तारा मंडल, दीवु कनिकन आमुच़ वदल।
होलु गजिमचु कॅरिथ गोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
साद सतज़न बोम्बर बनेमित्य, पोशे अम्बरन तल रूदिमुत्य।
च़रनु कमलन हुंद छुख लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
त्रु कारन पोश वरशनस, हरशनस न्यथ दर्शनस।
कृष्णु ग्वनन दिवान ज़ोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
च़न्द्र मंडलुक्य लूख पेयि पथर, शबनम ऑसिथ ज़न गॅयि पत्थर।
कृष्णन ज़न वोत म्वखतु ब्योलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।
'लक्षमनस' वियि ओस मनस, गीथ वनस ज़नारदनस।
परमानंदुन तस आव लोलुय, खेलि बना रास मंडोलुय।।

लीला 142

आदन बाजो कन थाव नादन, यितु दितु दर्शुन छम चॉन्य लादन।
स्यद्यन सादन हुंदि रक्षपालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
शामु लटि यिखना स्वंदर श्यामो, रगु वन्दयो रगुनंदन रामो।
गूपियन हुंदे ही गूपालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
मायातीतो छ़ायि मत रोज़तम, च़राच़र छुख आरच़र बोज़तम।
अनुग्रह सोज़तम दीन दयालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
च़्यत आकाशस में बासतम, जूने प्रकाशस सिर्यि ज़न मे आसतम।
मुह गटु कासतम रटथो नालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
दॉसी कव कॅरथ स उदॉसी, हरु बरु च़ेय कित्य मसकी खॉसी।
बन ब्रजबॉसी छुय म्योन सालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
वन वनु फेरय वॅन्य दिनि नेरय, वॅन्य दिन्य दूरे दूरे फेरय।
च़ुय वन च़ेय व्वन्य कहि सम्बालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
ह्यसु व्यसरोवनस मायायि मसनुय, रस रसु न्यूनम वेशय रसनुय।
छुम मटि खोतमुत मुंह जंजालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
यन्द्रे चूर आम लॉगिथ सनतय, ज़ॉगिथ नियनम शिलवासनतय।
त्यॉगिथ स्वन तय म्वखतय मालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
जसुदानंदने श्री गोविन्दो, दशरथ राज़ने श्री रामचंद्रो।
सुता च़ेय छय नॉली नालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।
'परमानन्दने' परम आनंदो, लक्षमनजू ने श्री रामचंद्रो।
वन्दयो द्वन पादन कपालो, करयो च़ेय किच़ पोशन मालो।।

*

लीला 143

आरस मंज़ अच़ावॉय, विगिने ज़न नच़ावॉय।
आरस मंज़ अच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
लागोस पोश पूज़े, कृष्णजू न्यंदरि वुज़े।
व्वपरस कस पच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
लॉजहस तन तने, शेहल्यख हन हने।
कमव प्रेमव हच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
ह्यतिहस पाद शेरे, कृष्णस ज़ि स्नेह फेरे।
खबर क्या छम कच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
अशिकनि म्वखतु हारन, छि लाद्यन म्वखतु हारन।
तूल्य तूल्य स्वन रच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
पोंपुर ज़न शमहस प्यठ, नच़न छु क्या करन गथ।
मॅतिस पथ कर मच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
यछ़न नवि ज़िंदुगयीये, लजिमचु बन्दगीये।
लबिख प्रान मुह मच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
वनस मंज़ ननवारे, शरण तिम कृष्ण प्यारे।
कन्यव तापव तच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।
यि पद क्या छुय वनुन ज़्यूठ, सु 'परमानंद' कॅम्य ड्यूंठ।
वुछिथ वॉनमुत यच़ॉवय, विगिने ज़न नच़ावॉय।।

✸

लीला 144

कर्म बूमिकायि दिज़ि धर्मुक बल।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।

द्वयि प्रान दांद जूर्य द्यन तु राथ वाय,
कुम्भके कुरु ज़ोरु तिमनुय लाय।
हलु कर युथ नु रोज़ि बीठ कांह र्‌यल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

लोलुकि आलु फालु तुलनॉविथ,
दॉरु यटफरु दतु फुटरॉविथ।
वॉहरुक स्नेह नु रोज्यस तल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

व्यच़ारु बॅठ्य तु बेरु लॅदिथ क्यथ,
श्रोच़ यॅनिद्यव शोज़रॉविथ वथ।
समदृश्ट पातजन अदु फेरि ज़ल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

सोंथ छुय दोह तारु मोत यावुन,
नज़ि पज़ि साथा रावरावुन।
वव ब्योल मव प्रार करु मंगल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

त्रोपरिथ फुरनायि नामु व्वडर,
स्वरुके रबि च़कु सुत्यन बर।
यंद्रेय गगरन करु वठल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

भॅखुच़ हुंज़ि न्येंदि फेरि सादनायि खीत्य,
ह्यलि नेरि तपके पपु सगु सुत्य।
सम भावनायि फ्वलि पम्पोशु डल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

व्यशय पॅश वारु रछनावुख,
तिमनुय अथि युथ नु खीत्य ख्यावख।
भावुचि रावुचि नेर न्यशकल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

ह्यलि येलि नेरि तॊलि सॉपनस क्राव,
वैराग द्राति सुत्य लून्य लून्य त्राव।
सम बंदु सॊस ति मावि लाव्यव वल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

मट्टु खसनुचि रज़ि मटि मटि सार,
सादुनि अनतु बॉय बन्द तु यार।
न्यति नेमु सुमरनि अदु समि खल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

त्रग्वनु त्यागु नोम अख गॊन लद,
न्यरवान प्रावख निर्वान पद।
शमिथ तम दिथ करु कुशल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

ध्यानु दारनायि दानि मॊन्ड व्यसतार,
ज्ञानु दानि खासु खासु गासु निशि च़ार।
मनुके अनुभव वारु दिस छल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

त्यागुके अथ सुत्य वारु छोम्बुनाव,
प्रोन तु ज़ग फुटजन ब्योन ब्योन थाव।
ज़ागि रोज़ लागनय त्रॉविथ ज़्वल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

तूलिथ अदु थाव अम्बरन माल,
सूहम हायकु सुत्य नखु अदु वाल।
ल्वतु बारि वॉतनॉविथ खनबल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

शम दम यम नेमु घाट वातनाव,
शांत श्रद्धायि ज़लु पकनाव नाव।
शिहलिथ पानस मानसबल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

लागनय वाल माल आगस तार,
खॉल्य युथ नु रोज़ि हॉल्य जॉगीरदार।
बाकुय तु फॉज़िल राज़ि कस तल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

च़ॉरिथ बॆयि ब्योल सॉंच़िथ थव,
सोंथ यॆलि यियि तॊलि फलि फलि वव।
व्वपकारु व्वपनिय नॆव नॆव थल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

यूग मायायि हुंद बूगी आस,
यिय छॆय दुय तिय पानस कास।
सादुनाव पॆयि अदु सादु मो डल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

कर्मु फल सोरनय ग्वरु शब्दय,
संच़िथ कर्म मान प्रालब्दय।
कर्मु काण्ड ज्ञानु नेरि नारु वुज़मल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

स्वयम प्रकाशुकि विज्ञानय,
त्रॉविथ मान बॆयि अभिमानुय।
प्रॉविथ रोज़ द्वादशान्त मंडल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

'परमानन्द' ओस ज़मीनदार,
हूरिथ माल तस रूज़स नु लार।
वान्गुच वारिच च़ॅजिस गांगल।।
संतोशि ब्यालि बॊवि आनन्द फल।।०।।

✷

लीला 145

गिन्दुना छा ज़िन्दु मरुन, सहज़ व्यच़ार करुन।
पानु रुस पान स्वरुन, सहज़ व्यच़ार करुन।।
बूज़िथ वारु पॉठी, त्रॉविथ टॉठ्य अटॉठी।
पाखंडी तु पॉठी, सहज़ व्यच़ार करुन।।
यति सोरुय छु श्रपान, तति मा पान व्यपान।
तथ छु भगवान दपान, सहज़ व्यच़ार करुन।।

शब्द ब्रह्म सु आत्मज्ञान, पूर्नमय शोची सान।
म्वखत् वैकुंठ विज्ञान, सहज़ व्यच़ार करुन।।
सिरयस मा छि छ़ाये, थोद व्वथ तमि शाये।
बायि लगनय च़े ग्राये, सहज़ व्यच़ार करुन।।
यॅच़ गाट्‌ पॅयि गाटय, त्रॉविथ फुट फ्राटय।
फटि क्या तिय ब्‌ वाटय, सहज़ व्यच़ार करुन।।
भगवान अविनाशे, अविनाशि आकाशे।
गट्‌ ऑस्यतन त्‌ गाशे, सहज़ व्यच़ार करुन।।
तस रोस यिय च्‌ ज़ानख, तिय तिय ठोर च्‌ मानख।
रोच़ख या भयानख, सहज़ व्यच़ार करुन।।
शंकायि मनि त्रॉविथ, यिम पथ गॅय त्रॉविथ।
सॉविथ रूद्य सॉविथ, सहज़ व्यच़ार करुन।।
श्रुती छि तस रोस छुन्‌, मूद युस त्‌ लूसिथ छुन्‌।
बूद पनुन द्रुस छुन, सहज़ व्यच़ार करुन।।
दिह न्‌ मन, ब्वद ति छुन्‌, व्यद र्‌यद स्यद ति छिन्‌।
मुह, भ्रम, मद ति छुन्‌, सहज़ व्यच़ार करुन।।
च़्यथ श्रनुय चिदाकाश, सिर्यि तति सुय च़ प्रकाश।
अस्त उदय छुन्‌ तथ नाश, सहज़ व्यच़ार करुन।।
वीदव छु वोनमुतुय, ब्वदि वनि ऑनमुतुय।
ब्वदि निशि छ़्योनमुतुय, सहज़ व्यच़ार करुन।।
शखति वोनहस त्‌ शिव, ज़ाव कस त्‌ आव कव।
निशद्यन शेश्य त्‌ रव, सहज़ व्यच़ार करुन।।

सथ चिदानंदमये, वॉतिथ छु मॊयि मॊये।
प्रॉविथ ति म्वयि म्वये, सहज़ व्यच़ार करुन।।
मनि दुय कासवुनुय, ऑसिथ ति आसवुनुय।
बॉसिथ ति बासवुनुय, सहज़ व्यच़ार करुन।।
परमात्मा तु अपर, दीशिकालु व्यन तु सतग्वर।
बॊरमुत यॆम्य च़राच़र, सहज़ व्यच़ार करुन।।
प्रेमु स्नेहवुज़ने, रॆह लगि हनि हने।
पोन्य लगि तीलु कने, सहज़ व्यच़ार करुन।।
नव द्वार मन्दोरे, च़्वपोर मन दोरे।
लुयि दारि त्रॊपोरे, सहज़ व्यच़ार करुन।।
वारु यॆलि वुछ ज़ि मन्दर, रूज़ि ज़ि नु अथ अन्दर।
अन्दवन्द छु श्यामसुंदर, सहज़ व्यच़ार करुन।।
वछु त्रॉविथ दारे, यूर्य ज़ानि तूर्य लारे।
तस रॊस क्या छु लारे, सहज़ व्यच़ार करुन।।
ललुवुन छु ललुवुनुय, बालगूपाल कुनुय।
वॊन थव तु छुख नु ऒनुय, सहज़ व्यच़ार करुन।।
वॊनमुत स्वात्म पछ़े, सहज़स प्रावि पछ़े।
शम तु दम नाव गछ़े, सहज़ व्यच़ार करुन।।
'परमानंद' च़ॆय, कृष्णस ज़ि पान वंदस।
सूत्य क्याह वंदस, सहज़ व्यच़ार करुन।।

✸

लीला 146

वरदया कर दया ही दया सागर,
हर हर हर् शिव शंकर जी।
निम पानस कुन तार दिम भवसर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

करमस म्यॉनिस मॆति दित् नज़रा,
धर्मस ब्रह्मनस म्वकलावतम।
शरनागत वतसल् परमीश्वर।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

आसर ब्वज़् सुत्य गोममा कॆंह ति सर्,
आस कति गछुन छुम कोर कुन।
ऑन छुस बो लारान चाने आसर।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

कठिनुय कर्म फल प्योमुत मे ईश्वर्,
ज़न्म ज़न्म् ज़्यथ ज़्यथ वरज़ुन वाव।
वावस मंज़ नावि कह अपोर तर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

आपदा पनुनिय पनुनिय पापर,
फुटिमिति दिहकुय ज़र तय जोश।
वीदा पैदा गछ़ि नत् क्या कर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

यावनस लूटिथ यिथ प्योम बुजर,
रावनुनि लंकायि कोरनय डास।
थरु छम पथर प्यमु थदि मन्दरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

बॅड्य बॅड्य पबर्त कॉल्य येलि यिन अरु,
मूलु म्वंजि कुल्य कॅट्य फलुफूलु सान।
दिवदार येमि वनकुय बोंठ दूर्यर।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

प्रेयमु चानि बावकी मस खॉस्य बर,
अरमान मनि छुम बनिह्यस तिय।
अमरनाथु च़ुय कासतम मरमरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

बजि बावनायि सुत्यन च़रि आदरु,
गरि गरि गोछ़हम मा स्वरनस च़ुय।
मूहने वावु व्यच़ारु च़ोंग स्वंदरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

पूज़ा चॉनी करु तिय पाठ परु,
बोज़तम तु रोज़तम कन दॉरिथ।
ज़्यनु प्यठु वनहाय योतामथ मरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

शंकर उदार म्योन कुस करि येमि व्वदरु,
उदार मेलुनम नु न्यत्य कर्मु फल।
प्रार्य ति चानि बरु छ़ारय चोन गरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

शिठेमुच़ आयु यॅच़ मा कावर्,
अनहॅच़ यि ब्वद म्यॉन्य पलज़्यम नु मे।
गॅच़ चानि शर वारया छम सरग्वर।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

वुनि छुम आदन योदवय सखर्,
पादन तल दिमु सादन शेर।
बोज़तम च्वति म्यति रोज़तम मु वखर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

ब्यबूज यॅच़ क्या गोम बेयि बुजर्,
पथ ब्रोंठ कोह पॉन्थन दूर।
कोह बार पापुन तु दोह लोगमुत दर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

ज़ोनुम नु पानस बु ज़ि पानय फर्,
ध्यानु दारनायि चानि निशि प्योस दूर।
ज्ञानु रोस बु कालस पॉन्य पान आपर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

स्वामि स्वर ग्वर् साने यूगीश्वर्,
कैलास प्यठु चोन शिवालय।
रेशि वनवासु सन्यासु वेशम्बर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

कुमार सुत्य ह्यथ बेयि गनीश्वर्,
हिमालस ऑस व्वमा कूर।
दिवता सॉर्य ह्यथ आख स्वंयवर्।।
हर हर हर् शिव शंकर जी।।०।।

गरु चोन आसवुन छुय दीह मन्दर,
ब्वज़ बदरु पीठस प्यठ शिवलिंग।
यॅन्द्रय पोशव सुत्य पूज़ा करु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

आकाश वत सर्वगथ न्यबरु अन्दरु,
सॉर्यसुय मंज़ तय सॉरिसुय निशि।
ब्यॊन च़्यथ निश त्रभवन बिंदु मातरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

प्रकाश चोनुय गटि हुंदि गाशरु,
आकाशु पातालु च़े मकाम छुम।
आश छम चॉनी अविनाश अम्बरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

व्यज़ हुंदि यूगु सॅज़ हुंदे आगरु,
बोज़ रोस आसय शरनुय च़े।
अज़ क्या तनमन च़े पान अरपन करु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

आसन नु डेंशन तस यमुकेंकरु,
यस मन दर्शन चानि आसि त्रप्त।
आसि कुस सासु मंज़ म्वकलिय योमि ज़रु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

दास छुस चोनुय बरतल त्रॉविथ सर,
बर मुच़रावतम वुछहा म्वख चोन।
मशिहम नु येहलूकु परिलूक अन्दरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

क्रूडा करान वोतुम मे बुजर,
हॉज बावुन गोम कुस यावुन।
थरु छम मरु येलि क्या ह्यथ गछ़ु गरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

उमापति तु बेयि गंगाधरु,
ब्रशभ आसन बस्मु लिंगाकार।
गनपत डीडिवोन्य म्वख गज़्यन्दरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

त्रनयनु सिरिय ॲग्न तु च़ंदरो,
कपाल मालु नॉल्य वासुक नाग।
मेय अँद्र सिन्दुर करव हर मन्दरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

यिथ यथ ज़न्मस ह्यथ छुस हच़र,
च़्यथ छुमनु डंजि तय क्वंजु छम तय।
ऑरच़र कासतम च़राच़र अगूच़रु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

व्वन्य करतु चारु म्योन वनतु व्वन्य कह हरु,
अरसर ज़न्मुक्य कह च़लनम।
बरु गछ़ु सोंथ ज़ि नतु अछ़तम बरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

बेगम चानि दर्शन दिगम्बरु,
'परमानंद' गछ़ि च़ेय सुत्य लय।
त्रॉविथ ज़्यनुक्य मरनुक्य अरसरु।।
हर हर हरु शिव शंकर जी।।०।।

लीला 147

अमर पानो भ्रम समसार छुय, आदि दीव बननुक चेय आदिकार छुय।
हारव रोसतस भवुसरुतार छुय, सथ व्यचार, सथ व्यचार।।
आदि अंत शब्दन मंज़ ओमकार छुय, ज़पनुय मंज़ अज़पाज़प सार छुय।
ध्यानु मंज़ आत्मुक ध्यान शूभिदार छुय, धारनायि दार, धारनायि दार।।
ब्रोंठ पथ प्रारब्दुक व्यवहार छुय, पथ ब्रोंठ नेरनस फेरनस न वार छुय।
बॉयबन्ध बब मॉज कुस दरकार छुय, च्यथ करु यार, च्यथ करु यार।।
पराधीन मुर्खु बोज़ हुंद ल्वकचार छुय, यावनस मंज़ कामुक अंधकार छुय।
बुजरस न ह्यकनुक संकल्प बार छुय, कर चु ह्यतकार, कर चु ह्यतकार।।
मुह स्यंदि सुमि कनि यन्द्रेय द्वार छुय, यिम पार गॅय तिम अवतार गॅय।
दॉह शोमराव दॅह खॅदमतगार छिय, कर चु दशहार, कर चु दशहार।।
तीव्र वॉरागुक खासु सबज़ार छुय, ह्यकखय रागु रोस वुछनस वार छुय।
शिव शिव बोलान पानु आबशार छुय, शांत शालमार, शांत शालमार।।
ग्वडु श्रवनुय बोज़ुन दरकार छुय, तव पतु चेय मंगनुक आधिकार छुय।
न्यद्यध्यासन ज़ेन तुरिया तयार छुय, साक्षात कार, साक्षात कार।।
अथि आमुत भक्ति हुंद म्वखतुहार छुय, पानस नॉल्य छ्नुमुक यखतियार छुय।
कुस मना करान कसुंद यकरार छुय, छुख चु म्वखतार, छु चु म्वखतार।।
कुस कारबार छुय कुस बेकार छुय, नाहकय दिह दृष्टि हुंद अंधकार छुय।
मन ज़ेन वीदुचि ज़्यवि यकरार छुय, साहिब कार, साहिब कार।।
हारबर लारिय न योद सुत्य खार छय, ऑस वाहरॉविथ नफसुन्य खार छय।
प्रारब्ध फल सूरिथ पतु लार छय, ग्रटु अनवार, ग्रटु अनवार।।
शखति पातकि शाहरुक सूबेदार छुय, धर्म अर्थ काम मूक्ष ह्युन यखतियार छुय।

यिहोय सरकार छुय यहोय सर्वकार छुय, कर चु दरबार, कर चु दरबार।।
'परमानन्द' नाव दुनियदार छुय, लूकन हुंद ह्युव च़ेति व्यवहार छुय।
दिववुन पानय त्रुभवन सार छुय, सर्व अधिकार, सर्व अधिकार।।

✷

लीला 148

वयक्वंठ बन्याव बिंदराबनसुय।
कथ वनसुय रॅटनम जाय।।

तोरु आयोव म्वछि ज़ुय वॅटिथुय, यति मुच़र्यन म्वछि द्वनवय।
म्वछि मुच़रिथ अफसूस ख्यनसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
तोरु आयोस योर चानि वेरे, महाकाल मा योर काँसि छोरे।
सु मा त्रावि योर काँसि ज़नसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
पाँच़न दोहन आस करनि सॉला, यिह छु दुनिया मौत मॉला।
क्या छु ह्योन द्युन क्या छु न्युन चंदसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
ज़्यॊन ववुन दर जिगर यिय, बूज़ुम यिय ड्यूंठुम तिय।
जान वंदहय श्वब दरशनसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
लोलु च़ॉरिथ शमशान बनसुय, वॉरागु द्राति त्याग करनाव।
नतु मा छुय मच़र मंज़ मनसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
प्रान म्यान्य न्यथ प्रातः कालस, वनतु कुस पोशि महाकालस।
छा सु रोज़ान बिह्थि कुति क्षनसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।
'परमानंद' व्वन्य रूठ पानस, यूर्य अनतन थानस प्यठ।
सू हम प्रयमु यकजा ख्यनसुय, कथ वनसुय रॅटनम जाय।।

✷

लीला 149

लोलु बुलबुल आव यॅच़कॉल्य व्यसिये,
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।
राज़ु हमसा मा खॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।
थोव स्वदामन मंदछिथ स्युर चूरे,
ओस ज़ागन मोहन दूरि दूरे।
यस छि कोस्तुब मालु नॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।
शोकु वुछने आव तस जंदु जामन,
स्युर छीनिथ न्यूनस गनशामन।
बुगबावुचि ब्वछि ख्यनु सॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।
गिरदॉरी आनंद क्या छु प्रावन,
तस रुखमनि मोहन तंबलावन।
क्या ज़ानख मज़ु हीयमॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।
म्वछि त्रेयिह रोकान छस रुखमन,
लोग बावनि तस मनमोहन।
न्यूथ आनंद स्वगन बॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।

ऑस मनु मंज़ु सोचान यिय रुखमन,
नब तु प्रथ्वी प्रॉव बखतावारन।
यॅच़ खारान भॅखतिस चॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।

'परमानंद' वॊलनस लोलु माये,
म्वछि त्रेयमे बुति हाव कथ जाये।
असि बॅखत्यन द्वख तु गम गॉल्य व्यसिये।।
बालु यारन अॅन्य क्या डॉल्य व्यसिये।।०।।

✹

लीला 150

टोठतम विशणारपन कृष्ण जीवय, हरे राम नारायण वासुदीवय।
गोबिन्द च़रणार बिंद चॉनि सीवय, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
शरण चॉन्यन पंकज़ पादन, वरान सिद्धन संतन तु साधन।
क्षमा करू सान्यन अपराधन, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
अलक्षय महिमा चोन क्याह वनय, मन बोद्ध वॉनि तोत नु वातुनय।
पानय ज़ानख बु क्योहो वनय, हरे राम नारायण वासुदीवय।
प्रबल म्यानि विज़ि कोत गोय सु बल, यमि बलु सुत्यन खोरथन अज़ामल।
बुति छुसय प्रारान चाने बरुतल, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
भक्त्यन सुत्यन मान कुस करे, सुय करि यस चानि दया वरे।
तॅस्य वरि युस नाम निधान स्वरि, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
हा ज़ावु क्याज़ि छुख चि़न्ता करान, क्षनु क्षनु आसुन नारायण सोरान।
दासन पनुन्यन पानय वरान, हरे राम नारायण वासुदीवय।।

क्याह रुत ओसुम कर्मय लोनुय, तवय लोगमुत छुम नाव चोनुय।
पानय करख उपाय म्योनुय, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
श्रद्धावान क्याह आसु गूर्यबाये, यिमु लूक लज़ा त्रॉविथ द्राये।
पानु भगवानस सेवायि आये, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
टोठतम अनाथस हे भवु दाता, चुय छुख गुरु म्योन चुय मोक्ष दाता।
माता पिता बन्धो भ्राता, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
'श्रीधर' प्रारान छुसय चानि वेरे, प्रवाह चोन योर कर सना फेरे।
सतु भावकि पोश लागय शेरे, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
भाग्यवान क्याह ऑस्य गोकलवॉसी, यिम बन्सरी चानि बोज़ान ऑसी।
मायायि मोह निशि गॅयि उदासी, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
सुशोभ समय क्याह ओस तॅलि, जमुनायि बॅठि बॅठि गोपाल यॅले।
गोपी ह्यथ फेरान थलि थले, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
ऐसा शुभ वेला कब आवे, जब कान्हा बन्सरी बजावे।
सन्मुख होके हमको सुनावे, हरे राम नारायण वासुदीवय।।
बहुत गोपियां और श्यामु अकेला, खेलन से लुट लिया मन मेरा।
दुनिया मेला 'आनन्द' अकेला, हरे राम नारायण वासुदीवय।।

*

लीला 151

यस कुन वुछान गोम यावुन रसय रसय।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।

तस पाक ज़ातस रॉत्य रातस प्रारान छसय,
तस रोस्त छमनय नेह नेन्द्र आराम ह्यसुय।

बुलबुल छु मुश्ताक पोशु बागन आशक छसुय।।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।
अॅन्द्री वॅन्य वॅन्य वॅन्य दिह्राम मे थानसुय,
पय ह्यथ वोतुस लय गोमुत मकानसुय।
परम प्रोवुक गॅयि खॅसिथ विमानसुय।।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।
लाशक छु पानय पॉन्य पानय आशक छुसय,
गुल मेलि गुलस शाख बॅर्गस बेयि मूलसुय।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।
कॅंह छिय वुदी ज़न न्यन्द्रे मंज़ ख्वाबसुय,
केंच़न वोद्यन मोह न्यन्द्रे थावान नु ह्यसुय।
कॅंह गॅयि मीलिथ वॉत्य अन्तस मुक्कामसुय।।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।
गिन्दने द्रामुत भवसरस छु ज़ारसुय,
गिन्दान गिन्दान युथ नु डलख शुमारसुय।
स्वर थाव पानस ज़ेरि ज़ब्बर किताबसुय।।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।
सतु सरु तारुन सुय गारुन प्रथ समुयसुय,
वोन आदि दीवन सत श्रवण कथ पानसुय।
तमी मती लोलु अमृत बो चोवनसुय।।०।।

* * *
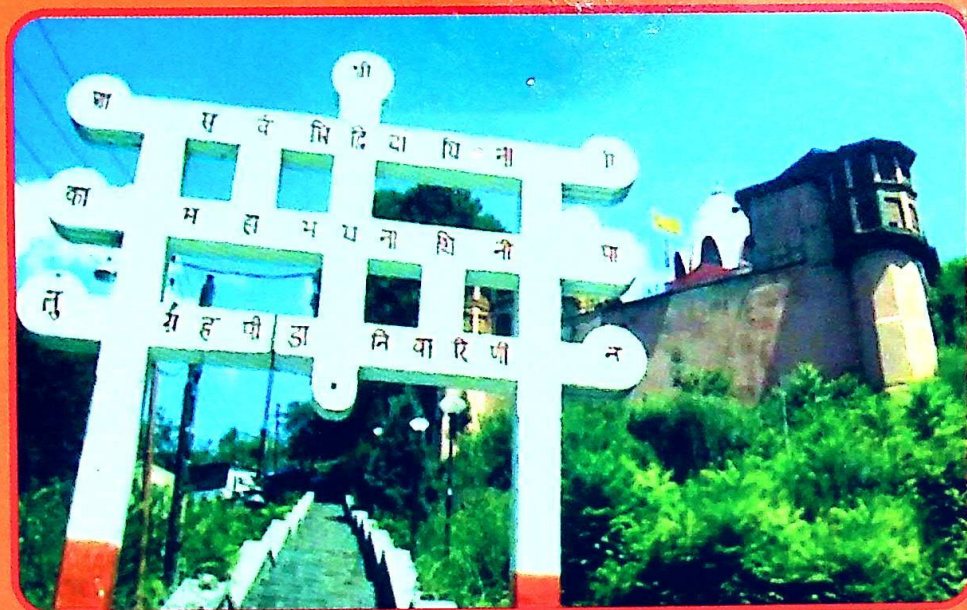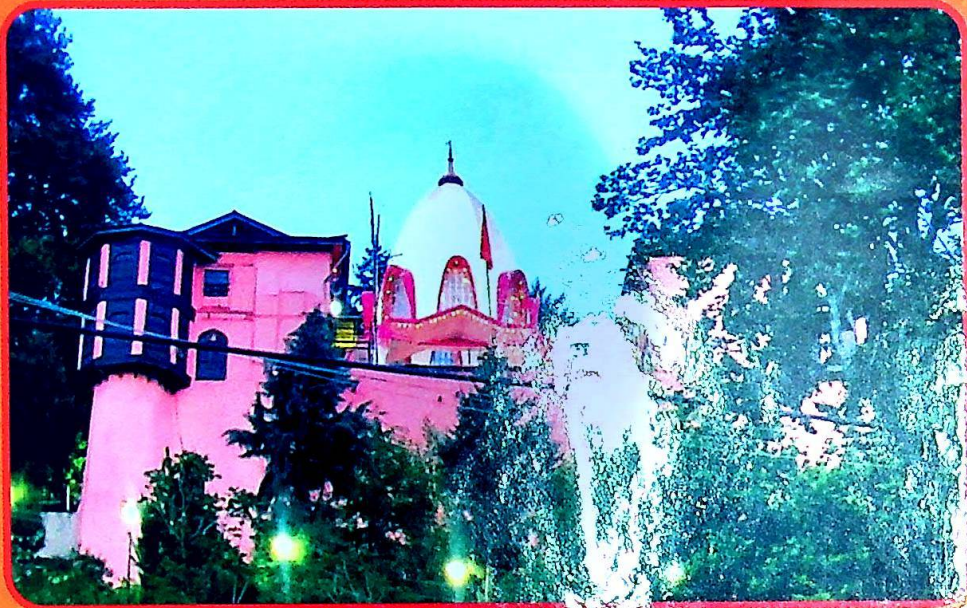
प्रकाशकः

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत

श्रीनगर/देवी आंगन, पलोरा ढोक, जम्मू।